"અહો ! શ્રુતજ્ઞાનમ્" ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર ૧૭૪

મેઘમાળા વિચાર

: દ્રવ્ય સહાયક :

કચ્છવાગડ સમુદાયના

પૂ. આ. શ્રી કલાપ્રભસૂરીશ્વરજી મ.સા.ના આજ્ઞાવર્તિની

પૂ. સાધ્વી શ્રી નંદાશ્રીજી મ.સા.

ની પ્રેરણાથી

શ્રી ગંગાબા પૌષધશાળા, સાબરમતીના

જ્ઞાનખાતાની ઉપજમાંથી

: સંયોજક :

શાહ બાબુલાલ સરેમલ બેડાવાળા

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

શા. વિમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, સાબરમતી, અમદાવાદ-૫

(મો.) 9426585904 (ઓ.) 22132543

સંવત ૨૦૬૯ ઈ. ૨૦૧૩

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com
शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६५ (ई. 2009) सेट नं.-१

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

ક્રમાંક	પુસ્તકનું નામ	કર્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
001	श्री नंदीसूत्र अवचूरी	पू. विक्रमसूरिजी म.सा.	238
002	श्री उत्तराध्ययन सूत्र चूर्णी	पू. जिनदासगणि चूर्णीकार	286
003	श्री अर्हद्गीता-भगवद्गीता	पू. मेघविजयजी गणि म.सा.	84
004	श्री अर्हच्चूडामणि सारसटीकः	पू. भद्रबाहुस्वामी म.सा.	18
005	श्री यूक्ति प्रकाशसूत्रं	पू. पद्मसागरजी गणि म.सा.	48
006	श्री मानतुङ्गशास्त्रम्	पू. मानतुंगविजयजी म.सा.	54
007	अपराजितपृच्छा	श्री बी. भट्टाचार्य	810
008	शिल्प स्मृति वास्तु विद्यायाम्	श्री नंदलाल चुनिलाल सोमपुरा	850
009	शिल्परत्नम् भाग-१	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	322
010	शिल्परत्नम् भाग-२	श्रीकुमार के. सभात्सव शास्त्री	280
011	प्रासादतिलक	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	162
012	काश्यशिल्पम्	श्री विनायक गणेश आपटे	302
013	प्रासादमञ्जरी	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	156
014	राजवल्लभ याने शिल्पशास्त्र	श्री नारायण भारती गोंसाई	352
015	शिल्पदीपक	श्री गंगाधरजी प्रणीत	120
016	वास्तुसार	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	88
017	दीपार्णव उत्तरार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	110
018	જિનપ્રાસાદ માર્તણ્ડ	શ્રી નંદલાલ ચુનીલાલ સોમપુરા	498
019	जैन ग्रंथावली	श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फ्रन्स	502
020	હીરકલશ જૈન જ્યોતિષ	શ્રી હિમ્મતરામ મહાશંકર જાની	454
021	न्यायप्रवेशः भाग-१	श्री आनंदशंकर बी. ध्रुव	226
022	दीपार्णव पूर्वार्ध	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	640
023	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-१	पू. मुनिचंद्रसूरिजी म.सा.	452
024	अनेकान्त जयपताकाख्यं भाग-२	श्री एच. आर. कापडीआ	500
025	प्राकृत व्याकरण भाषांतर सह	श्री बेचरदास जीवराज दोशी	454
026	तत्त्पोपप्लवसिंहः	श्री जयराशी भट्ट, बी. भट्टाचार्य	188
027	शक्तिवादादर्शः	श्री सुदर्शनाचार्य शास्त्री	214
028	क्षीरार्णव	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	414
029	वेधवास्तु प्रभाकर	श्री प्रभाशंकर ओघडभाई	192

030	**शिल्परत्नाकर**	**श्री नर्मदाशंकर शास्त्री**	**824**
031	**प्रासाद मंडन**	**पं. भगवानदास जैन**	**288**
032	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-१**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**520**
033	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-२**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**578**
034	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-३ (१)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**278**
035	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-3 (२) (३)**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**252**
036	**श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहन्न्यास अध्याय-५**	**पू. लावण्यसूरिजी म.सा.**	**324**
037	વાસ્તુનિઘંટુ	પ્રભાશંકર ઓઘડભાઈ સોમપુરા	302
038	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૧	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	196
039	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૨	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	190
040	તિલકમઞ્જરી ભાગ-૩	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	202
041	સપ્તસન્ધાન મહાકાવ્યમ્	પૂ. વિજયઅમૃતસૂરિશ્વરજી	480
042	સપ્તભઙ્ગીમિમાંસા	પૂ. પં. શિવાનન્દવિજયજી	228
043	ન્યાયાવતાર	સતિષચંદ્ર વિદ્યાભૂષણ	60
044	વ્યુત્પત્તિવાદ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	218
045	સામાન્યનિર્યુક્તિ ગુઢાર્થતત્ત્વાલોક	શ્રી ધર્મદત્તસૂરિ (બચ્છા ઝા)	190
046	સપ્તભઙ્ગીનયપ્રદીપ બાલબોધિનીવિવૃત્તિઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	138
047	વ્યુત્પત્તિવાદ શાસ્ત્રાર્થકલા ટીકા	શ્રીવેણીમાધવ શાસ્ત્રી	296
048	નયોપદેશ ભાગ-૧ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	210
049	નયોપદેશ ભાગ-૨ તરઙ્ગિણીતરણી	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	274
050	ન્યાયસમુચ્ચય	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	286
051	સ્યાદ્યાર્થપ્રકાશઃ	પૂ. લાવણ્યસૂરિજી	216
052	દિન શુદ્ધિ પ્રકરણ	પૂ. દર્શનવિજયજી	532
053	બૃહદ્ ધારણા યંત્ર	પૂ. દર્શનવિજયજી	113
054	જ્યોતિર્મહોદય	સં. પૂ. અક્ષયવિજયજી	112

શ્રી આશાપૂરણ પાર્શ્વનાથ જૈન જ્ઞાનભંડાર

સંયોજક – બાબુલાલ સરેમલ શાહ

શાહ વીમળાબેન સરેમલ જવેરચંદજી બેડાવાળા ભવન

હીરાજૈન સોસાયટી, રામનગર, સાબરમતી, અમદાવાદ-૦૫.

(મો.) ૯૪૨૬૫૮૫૯૦૪ (ઓ) ૨૨૧૩૨૫૪૩ (ઇ-મેલ) ahoshrut.bs@gmail.com

અહો શ્રુતજ્ઞાનમ્ ગ્રંથ જીર્ણોદ્ધાર – સંવત ૨૦૬૬ (ઈ. ૨૦૧૦) – સેટ નં-૨

પ્રાયઃ જીર્ણ અપ્રાપ્ય પુસ્તકોને સ્કેન કરાવીને ડી.વી.ડી. બનાવી તેની યાદી.

આ પુસ્તકો www.ahoshrut.org વેબસાઇટ પરથી પણ ડાઉનલોડ કરી શકાશે.

ક્રમ	પુસ્તકનું નામ	ભાષા	કર્ત્તા-ટીકાકાર-સંપાદક	પૃષ્ઠ
055	श्री सिद्धहेम बृहद्वृत्ति बृहद्न्यास अध्याय-६	सं	पू. लावण्यसूरिजी म.सा.	296
056	विविध तीर्थ कल्प	सं	पू. जिनविजयजी म.सा.	160
057	ભારતીય જૈન શ્રમણ સંસ્કૃતિ અને લેખનકળા	ગુજ.	पू. पूण्यविजयजी म.सा.	164
058	सिद्धान्तलक्षणगूढार्थ तत्त्वलोकः	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	202
059	व्याप्ति पञ्चक विवृत्ति टीका	सं	श्री धर्मदत्तसूरि	48
060	જૈન સંગીત રાગમાળા	ગુ.	श्री मांगरोळ जैन संगीत मंडळी	306
061	चतुर्विंशतीप्रबन्ध (प्रबंध कोश)	सं	श्री रसिकलाल एच. कापडीआ	322
062	व्युत्पत्तिवाद आदर्श व्याख्यया संपूर्ण ६ अध्याय	सं	श्री सुदर्शनाचार्य	668
063	चन्द्रप्रभा हेमकौमुदी	सं	पू. मेघविजयजी गणि	516
064	विवेक विलास	सं/ગુ.	श्री दामोदर गोविंदाचार्य	268
065	पञ्चशती प्रबोध प्रबंध	सं	पू. मृगेन्द्रविजयजी म.सा.	456
066	सन्मतितत्त्वसोपानम्	सं	पू. लब्धिसूरिजी म.सा.	420
067	ઉપદેશમાલા દોઘટ્ટી ટીકા ગુર્જરાનુવાદ	ગુજ.	पू. हेमसागरसूरिजी म.सा.	638
068	मोहराजापराजयम्	सं	पू. चतुरविजयजी म.सा.	192
069	क्रियाकोश	सं/हिं	श्री मोहनलाल बांठिया	428
070	कालिकाचार्यकथासंग्रह	सं/ગુ.	श्री अंबालाल प्रेमचंद	406
071	सामान्यनिरुक्ति चंद्रकला कलाविलास टीका	सं.	श्री वामाचरण भट्टाचार्य	308
072	जन्मसमुद्रजातक	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	128
073	मेघमहोदय वर्षप्रबोध	सं/हिं	श्री भगवानदास जैन	532
074	જૈન સામુદ્રિકનાં પાંચ ગ્રંથો	ગુજ.	श्री हिम्मतराम महाशंकर जानी	376

075	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	374
076	જૈન ચિત્ર કલ્પદ્રૂમ ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	238
077	સંગીત નાટ્ય રૂપાવલી	ગુજ.	**श्री विद्या साराभाई नवाब**	194
078	ભારતનાં જૈન તીર્થો અને તેનું શિલ્પસ્થાપત્ય	ગુજ.	**श्री साराभाई नवाब**	192
079	શિલ્પ ચિન્તામણિ ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री मनसुखलाल भुदरमल**	254
080	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૧	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
081	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૨	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	238
082	બૃહદ્ શિલ્પ શાસ્ત્ર ભાગ-૩	ગુજ.	**श्री जगन्नाथ अंबाराम**	260
083	આયુર્વેદના અનુભૂત પ્રયોગો ભાગ-૧	ગુજ.	**पू. कान्तिसागरजी**	114
084	કલ્યાણ કારક	ગુજ.	**श्री वर्धमान पार्श्वनाथ शास्त्री**	910
085	**विश्वलोचन कोश**	**सं./हिं**	**श्री नंदलाल शर्मा**	436
086	કથા રત્ન કોશ ભાગ-1	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	336
087	કથા રત્ન કોશ ભાગ-2	ગુજ.	**श्री बेचरदास जीवराज दोशी**	230
088	હસ્તસઞ્જીવનમ્	સં.	**पू. मेघविजयजीगणि**	322
089	એન્દ્રચતુર્વિંશતિકા	સં.	**पू.यशोविजयजी, पू. पुण्यविजयजी**	114
090	સમ્મતિ તર્ક મહાર્ણવાવતારિકા	સં.	**आचार्य श्री विजयदर्शनसूरिजी**	560

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६७ (ई. 2011) सेट नं.-३

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टीकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
91	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-१	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	272
92	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-२	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	240
93	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-३	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	254
94	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-४	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	282
95	स्याद्वाद रत्नाकर भाग-५	वादिदेवसूरिजी	सं.	मोतीलाल लाघाजी पुना	118
96	पवित्र कल्पसूत्र	पुण्यविजयजी	सं./अं	साराभाई नवाब	466
97	समराङ्गण सूत्रधार भाग-१	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	342
98	समराङ्गण सूत्रधार भाग-२	भोजदेव	सं.	टी. गणपति शास्त्री	362
99	भुवनदीपक	पद्मप्रभसूरिजी	सं.	वेंकटेश प्रेस	134
100	गाथासहस्त्री	समयसुंदरजी	सं.	सुखलालजी	70
101	भारतीय प्राचीन लिपीमाला	गौरीशंकर ओझा	हिन्दी	मुन्शीराम मनोहरराम	316
102	शब्दरत्नाकर	साधुसुन्दरजी	सं.	हरगोविन्ददास बेचरदास	224
103	सुबोधवाणी प्रकाश	न्यायविजयजी	सं./गु	हेमचंद्राचार्य जैन सभा	612
104	लघु प्रबंध संग्रह	जयंत पी. ठाकर	सं.	ओरीएन्ट इन्स्टीट्युट बरोडा	307
105	जैन स्तोत्र संचय-१-२-३	माणिक्यसागरसूरिजी	सं,	आगमोद्धारक सभा	250
106	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-१,२,३	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	514
107	सन्मति तर्क प्रकरण भाग-४,५	सिद्धसेन दिवाकर	सं.	सुखलाल संघवी	454
108	न्यायसार – न्यायतात्पर्यदीपिका	सतिषचंद्र विद्याभूषण	सं.	एसियाटीक सोसायटी	354
109	जैन लेख संग्रह भाग-१	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	337
110	जैन लेख संग्रह भाग-२	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	354
111	जैन लेख संग्रह भाग-३	पुरणचंद्र नाहर	सं./हि	पुरणचंद्र नाहर	372
112	जैन धातु प्रतिमा लेख भाग-१	कांतिविजयजी	सं./हि	जिनदत्तसूरि ज्ञानभंडार	142
113	जैन प्रतिमा लेख संग्रह	दौलतसिंह लोढा	सं./हि	अरविन्द धामणिया	336
114	राधनपुर प्रतिमा लेख संदोह	विशालविजयजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	364
115	प्राचिन लेख संग्रह-१	विजयधर्मसूरिजी	सं./गु	यशोविजयजी ग्रंथमाळा	218
116	बीकानेर जैन लेख संग्रह	अगरचंद नाहटा	सं./हि	नाहटा ब्रधर्स	656
117	प्राचीन जैन लेख संग्रह भाग-१	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	122
118	प्राचिन जैन लेख संग्रह भाग-२	जिनविजयजी	सं./हि	जैन आत्मानंद सभा	764
119	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-१	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
120	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-२	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	404
121	गुजरातना ऐतिहासिक लेखो-३	गिरजाशंकर शास्त्री	सं./गु	फार्बस गुजराती सभा	540
122	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-१	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	274
123	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-४	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	414
124	ऑपरेशन इन सर्च ऑफ संस्कृत मेन्यु. इन मुंबई सर्कल-५	पी. पीटरसन	अं.	रॉयल एशियाटीक जर्नल	400
125	कलेक्शन ऑफ प्राकृत एन्ड संस्कृत इन्स्क्रीप्शन्स	पी. पीटरसन	अं.	भावनगर आर्चीऑलॉजीकल डिपा.	320
126	विजयदेव माहात्म्यम्	जिनविजयजी	सं.	जैन सत्य संशोधक	148

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६८ (ई. 2012) सेट नं.-४

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	भाषा	प्रकाशक	पृष्ठ
127	महाप्रभाविक नवस्मरण	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	754
128	जैन चित्र कल्पलता	साराभाई नवाब	गुज.	साराभाई नवाब	84
129	जैन धर्मनो प्राचीन इतिहास भाग-२	हीरालाल हंसराज	गुज.	हीरालाल हंसराज	194
130	ओपरेशन इन सर्च ओफ सं. मेन्यु. भाग-६	पी. पीटरसन	अंग्रेजी	एशियाटीक सोसायटी	171
131	जैन गणित विचार	कुंवरजी आणंदजी	गुज.	जैन धर्म प्रसारक सभा	90
132	दैवज्ञ कामधेनु (प्राचिन ज्योतिष ग्रंथ)	शील खंड	सं.	ब्रज. बी. दास बनारस	310
133	करण प्रकाशः	ब्रह्मदेव	सं./अं.	सुधाकर द्विवेदि	276
134	न्यायविशारद महो. यशोविजयजी स्वहस्तलिखित कृति संग्रह	यशोदेवसूरिजी	गुज.	यशोभारती प्रकाशन	69
135	भौगोलिक कोश-१	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	100
136	भौगोलिक कोश-२	डाह्याभाई पीतांबरदास	गुज.	गुजरात वर्नाक्युलर सोसायटी	136
137	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	266
138	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-१ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	244
139	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	274
140	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-२ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	168
141	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-१, २	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	282
142	जैन साहित्य संशोधक वर्ष-३ अंक-३, ४	जिनविजयजी	हिन्दी	जैन साहित्य संशोधक पुना	182
143	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-१	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	384
144	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-२	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	376
145	नवपदोनी आनुपूर्वी भाग-३	सोमविजयजी	गुज.	शाह बाबुलाल सवचंद	387
146	भाषवति	शतानंद मारछता	सं./हि	एच.बी. गुप्ता एन्ड सन्स बनारस	174
147	जैन सिद्धांत कौमुदी (अर्धमागधी व्याकरण)	रत्नचंद्र स्वामी	प्रा./सं.	भैरोदान सेठीया	320
148	मंत्रराज गुणकल्प महोदधि	जयदयाल शर्मा	हिन्दी	जयदयाल शर्मा	286
149	फक्कीका रत्नमंजूषा-१, २	कनकलाल ठाकूर	सं.	हरिकृष्ण निबंध	272
150	अनुभूत सिद्ध विशायंत्र (छ कल्प संग्रह)	मेघविजयजी	सं./गुज	महावीर ग्रंथमाळा	142
151	सारावलि	कल्याण वर्धन	सं.	पांडुरंग जीवाजी	260
152	ज्योतिष सिद्धांत संग्रह	विश्वेश्वरप्रसाद द्विवेदी	सं.	ब्रीजभूषणदास बनारस	232
153	ज्ञान प्रदीपिका तथा सामुद्रिक शास्त्रम्	रामव्यास पान्डेय	सं.	जैन सिद्धांत भवन	160
	नूतन संकलन				
१	आ. चंद्रसागरसूरिजी ज्ञानभंडार – उज्जैन	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	
२	श्री गुजराती श्वे.मू. जैन संघ-हस्तप्रत भंडार – कलकत्ता	हस्तप्रत सूचीपत्र	हिन्दी	श्री आशापुरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार	

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543 - ahoshrut.bs@gmail.com

शाह वीमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन

हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-05.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०६९ (ई. 2013) सेट नं.-५

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की स्केन डीवीडी बनाई उसकी सूची। *यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।*

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / संपादक	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
154	उणादि सूत्रो ओफ हेमचंद्राचार्य	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	जोहन क्रिष्टे	304
155	उणादि गण विवृत्ति	पू. हेमचंद्राचार्य	व्याकरण	संस्कृत	पू. मनोहरविजयजी	122
156	प्राकृत प्रकाश-सटीक	भामाह	व्याकरण	प्राकृत	जय कृष्णदास गुप्ता	208
157	द्रव्य परिक्षा और धातु उत्पत्ति	ठक्कर फेरू	धातु	संस्कृत /हिन्दी	भंवरलाल नाहटा	70
158	आरम्भसिध्धि – सटीक	पू. उदयप्रभदेवसूरिजी	ज्योतीष	संस्कृत	पू. जितेन्द्रविजयजी	310
159	खंडहरो का वैभव	पू. कान्तीसागरजी	शील्प	हिन्दी	भारतीय ज्ञानपीठ	462
160	बालभारत	पू. अमरचंद्रसूरिजी	काव्य	संस्कृत	पं. शीवदत्त	512
161	गिरनार माहात्म्य	दौलतचंद परषोत्तमदास	तीर्थ	संस्कृत /गुजराती	जैन पत्र	264
162	गिरनार गल्प	पू. ललितविजयजी	तीर्थ	संस्कृत/गुजराती	हंसकविजय फ्री लायब्रेरी	144
163	प्रश्नोत्तर सार्ध शतक	पू. क्षमाकल्याणविजयजी	प्रकरण	हिन्दी	साध्वीजी विचक्षणाश्रीजी	256
164	भारतिय संपादन शास्त्र	मूलराज जैन	साहित्य	हिन्दी	जैन विद्याभवन, लाहोर	75
165	विभक्त्यर्थ निर्णय	गिरिधर झा	न्याय	संस्कृत	चौखम्बा प्रकाशन	488
166	व्योम वती-१	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत युनिवर्सिटी	226
167	व्योम वती-२	शिवाचार्य	न्याय	संस्कृत	संपूर्णानंद संस्कृत विद्यालय	365
168	जैन न्यायखंड खाद्यम्	उपा. यशोविजयजी	न्याय	संस्कृत /हिन्दी	बद्रीनाथ शुक्ल	190
169	हरितकाव्यादि निघंटू	भाव मिश्र	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	शीव शर्मा	480
170	योग चिंतामणि-सटीक	पू. हर्षकीर्तिसूरिजी	आयुर्वेद	संस्कृत /हिन्दी	लक्ष्मी वेंकटेश प्रेस	352
171	वसंतराज शकुनम्	पू. भानुचन्द्र गणि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	खेमराज कृष्णदास	596
172	महाविद्या विडंबना	पू. भुवनसुन्दरसूरि टीका	ज्योतिष	संस्कृत	सेन्ट्रल लायब्रेरी	250
173	ज्योतिर्निबन्ध	शिवराज	ज्योतिष	संस्कृत	आनंद आश्रम	391
174	मेघमाला विचार	पू. विजयप्रभसूरिजी	ज्योतिष	संस्कृत/गुजराती	मेघजी हीरजी	114
175	मुहूर्त चिंतामणि-सटीक	रामकृत प्रमिताक्षय टीका	ज्योतिष	संस्कृत	अनूप मिश्र	238
176	मानसोल्लास सटीक-१	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	166
177	मानसोल्लास सटीक-२	भुलाकमल्ल सोमेश्वर	ज्योतिष	संस्कृत	ओरिएन्ट इन्स्टीट्यूट	368
178	ज्योतिष सार प्राकृत	भगवानदास जैन	ज्योतिष	प्राकृत/हिन्दी	भगवानदास जैन	88
179	मुहूर्त संग्रह	अंबालाल शर्मा	ज्योतिष	गुजराती	शास्त्री जगन्नाथ परशुराम द्विवेदी	356
180	हिन्दु एस्ट्रोलोजी	पिताम्बरदास त्रीभोवनदास	ज्योतिष	गुजराती	पिताम्बरदास टी. महेता	168

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७१ (ई. 2015) सेट नं.-६

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

यह पुस्तके www.ahoshrut.org वेबसाइट से भी डाउनलोड कर सकते हैं।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	विषय	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
181	काव्यप्रकाश भाग-१	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	364
182	काव्यप्रकाश भाग-२	पूज्य मम्मटाचार्य कृत		संस्कृत	पूज्य जिनविजयजी	222
183	काव्यप्रकाश उल्लास-२ अने ३	उपा. यशोविजयजी		संस्कृत	यशोभारति जैन प्रकाशन समिति	330
184	नृत्यरत्न कोश भाग-१	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	156
185	नृत्यरत्न कोश भाग-२	श्री कुम्भकर्ण नृपति		संस्कृत	श्री रसीकलाल छोटालाल	248
186	नृत्याध्याय	श्री अशोकमलजी		संस्कृत /हिन्दी	श्री वाचस्पति गैरोभा	504
187	संगीरत्नाकर भाग-१ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	448
188	संगीरत्नाकर भाग-२ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	444
189	संगीरत्नाकर भाग-३ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	616
190	संगीरत्नाकर भाग-४ सटीक	श्री सारंगदेव		संस्कृत/अंग्रेजी	श्री सुब्रमण्यम शास्त्री	632
191	संगीत मकरन्द	नारद		संस्कृत	श्री मंगेश रामकृष्ण तेलंग	84
192	संगीत नृत्य अने नाट्य संबंधी जैन ग्रंथो	श्री हीरालाल कापडीया		गुजराती	मुक्ति-कमल-जैन मोहन ग्रंथमाला	244
193	न्यायबिंदु सटीक	पूज्य धर्मोतराचार्य		संस्कृत	श्री चंद्रशेखर शास्त्री	220
194	शीघ्रबोध भाग-१ थी ५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	422
195	शीघ्रबोध भाग-६ थी १०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	304
196	शीघ्रबोध भाग-११ थी १५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	446
197	शीघ्रबोध भाग-१६ थी २०	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	414
198	शीघ्रबोध भाग-२१ थी २५	पूज्य ज्ञानसुन्दरजी		हिन्दी	सुखसागर ज्ञान प्रसारक सभा	409
199	अध्यात्मसार सटीक	पूज्य गंभीरविजयजी		संस्कृत/गुजराती	नरोत्तमदास भानजी	476
200	छन्दोनुशासन	एच. डी. वेलनकर		संस्कृत	सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ	444
201	मग्गानुसारिया	श्री डी. एस शाह		संस्कृत/गुजराती	ज्ञातपुत्र भगवान महावीर ट्रस्ट	146

श्री आशापूरण पार्श्वनाथ जैन ज्ञानभंडार

संयोजक – शाह बाबुलाल सरेमल - (मो.) 9426585904 (ओ.) 22132543. E-mail : ahoshrut.bs@gmail.com
शाह विमळाबेन सरेमल जवेरचंदजी बेडावाळा भवन
हीराजैन सोसायटी, रामनगर, साबरमती, अमदावाद-380005.

अहो श्रुतज्ञानम् ग्रंथ जीर्णोद्धार – संवत २०७२ (ई. 201६) सेट नं.-७

प्रायः अप्राप्य प्राचीन पुस्तकों की डिजिटाइझेशन द्वारा डीवीडी बनाई उसकी सूची।

क्रम	पुस्तक नाम	कर्त्ता / टिकाकार	भाषा	संपादक / प्रकाशक	पृष्ठ
202	आचारांग सूत्र भाग-१ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	285
203	आचारांग सूत्र भाग-२ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	280
204	आचारांग सूत्र भाग-३ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	315
205	आचारांग सूत्र भाग-४ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	307
206	आचारांग सूत्र भाग-५ निर्युक्ति+टीका	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	361
207	सुयगडांग सूत्र भाग-१ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	301
208	सुयगडांग सूत्र भाग-२ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	263
209	सुयगडांग सूत्र भाग-३ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	395
210	सुयगडांग सूत्र भाग-४ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	386
211	सुयगडांग सूत्र भाग-५ सटीक	श्री शीलंकाचार्य	गुजराती	श्री माणेक मुनि	351
212	रायपसेणिय सूत्र	श्री मलयगिरि	गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	260
213	प्राचीन तीर्थमाळा भाग-१	आ.श्री धर्मसूरि	सं./गुजराती	श्री यशोविजयजी ग्रंथमाळा	272
214	धातु पारायणम्	श्री हेमचंद्राचार्य	संस्कृत	आ. श्री मुनिचंद्रसूरि	530
215	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-१	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	648
216	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-२	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	510
217	सिद्धहेम शब्दानुशासन लघुवृत्ति भाग-३	श्री हेमचंद्राचार्य	सं./गुजराती	श्री बेचरदास दोशी	560
218	तार्किक रक्षा सार संग्रह	आ. श्री वरदराज	संस्कृत	राजकीय संस्कृत पुस्तकालय	427
219	वादार्थ संग्रह भाग-१ (स्फोट तत्त्व निरूपण, स्फोट चन्द्रिका, प्रतिपादिक संज्ञावाद, वाक्यवाद, वाक्यदीपिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	88
220	वादार्थ संग्रह भाग-२ (षट्कारक विवेचन, कारक वादार्थ, समासवादार्थ, वकारवादार्थ)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	78
221	वादार्थ संग्रह भाग-३ (वादसुधाकर, लघुविभक्त्यर्थ निर्णय, शाब्दबोधप्रकाशिका)	विविध कर्ता	संस्कृत	महादेव शर्मा	112
222	वादार्थ संग्रह भाग-४ (आख्यात शक्तिवाद छः टीका)	रघुनाथ शिरोमणि	संस्कृत	महादेव शर्मा	228

ૐ

શ્રી વિજયપ્રભસૂરિ વિરચિત

મેઘમાળા વિચાર

(રૂદ્રયામલ તંત્ર અન્તર્ગત પૂરવણી સાથે)

પ્રકાશકઃ—

મેસર્સ મેઘજી હીરજી જૈન બુકસેલર્સ.

૫૬૬, પાયધુની મુંબઈ.

સંવત ૧૯૮૧] [સને ૧૯૨૫

પાલીતાણા શ્રી બહાદુરસીંહજી પ્રીન્ટીંગ પ્રેસમાં

શા. અમરચંદ બહેચરદાસે છાપ્યો.

કિંમત આઠ આના.

Aho ! Shrutgyanam

ॐ

श्री विजयप्रभसूरि विरचित

મેઘમાળા વિચાર.

(રૂદ્રયામલ તંત્ર અન્તર્ગત પૂરવણી સાથે)

પ્રકાશક

મેસર્સ મેઘજી હીરજી જૈન બુકસેલર્સ

૫૬૬ પાયધુની મુંબઇ.

સંવત ૧૯૮૧ સને ૧૯૨૫

પાલીતાણા શ્રી બહાદુરસીંહજી પ્રીન્ટીંગ પ્રેસમાં
શા અમરચંદ બહેચરદાસે છાપ્યો.

કિંમત આઠ આના.

Aho ! Shrutgyanam

શ્રાવણમાં

સંવત ૧૯૮૧

શ્રાવણમાં

ગુજરાતી કલ્પસૂત્ર સુબોધિકા સચિત્ર

બહાર પડશે કિ. રૂા. ૪-૦-૦

બહાર પડી ચુકયા છેઃ—

૧ **ચંદરાજા** રાણી ગુણાવળી અને ક્રૂર રાણી વીરમતીના સચિત્ર ચરિત્ર
કિંમત રૂા. ૨-૮-૦

૨ મહાન્ આચાર્ય
શ્રીસિદ્ધસેનદિવાકર ચરિત્ર
કિંમત રૂા. ૧-૮-૦

૩ **જ્ઞાનપ્રદીપ ભાષાંતર** કિં. રૂા. ૩-૦-૦

૪ **ઇસ્લામના ઓલીયા** કિં. રૂા.૦-૮-૦

૫ **ઉમેદ અનુભવ-સચિત્ર** કિં. ૧-૪-૦

લખોઃ—

મેઘજી હીરજી બુકસેલર
૫૬૬ પાયધુની
મુંબઈ

ગુ જ રા તી ક લ્પ સૂ ત્ર સુ બો ધિ કા સ ચિ ત્ર

ગુ જ રા તી ક લ્પ સૂ ત્ર સુ બો ધિ કા સ ચિ ત્ર

બહાર પડશે.

જૈન શુકનાવળી કિં. ૦-૪-૦

બહાર પડશે.

Aho ! Shrutgyanam

પ્રસ્તાવના.

આ દેશની સુખસંપત્તિનો સઘળો આધાર વરસાદ ઉપર રહેલો છે એ વાત કંઈ નવેસરથી કહેવાની જરૂર નથી. શિયાળાની કડકડતી ઠંડી અને ઉન્હાળાનો આગ વરસાવતો તાપ જ્યારે આપણે સહન કરતાં હોઇએ છીએ ત્યારે આપણી દૃષ્ટિ કેવળ વર્ષાઋતુ તરફ જ વળેલી હોય છે. અતિશય ટાઢ અથવા અતિશય ગરમી પડે ત્યારે વર્ષાઋતુ પણ એટલી જ ફળદાયક નીવડશે એમ માનીએ છીએ. પાણી આપણું જીવન છે, અને વષાઋતુ તો આપણા જીવનનું યે જીવન છે એમ કહીએ તો અત્યુક્તિ ન ગણાય.

અત્યારનું વિજ્ઞાનશાસ્ત્ર ઘણી ઘણી ગૂઢ અને ન સમજાય તેવી બાબતો ઉપર પોતાનાં તેજસ્વી કીરણ ફેંકી રહ્યું છે. વરસાદને વાયુ સાથે કેવા પ્રકારનો સંબંધ છે, વરસાદને સૂર્ય-

Aho ! Shrutgyanam

નાં કિરણુ સાથે કેટલી ઘનિષ્ટતા છે, ભેજ અને વૃક્ષો વરસાદને કેવી રીતે આકર્ષે છે ઇત્યાદિક રહસ્યો ધીમેધીમે વિજ્ઞાન ઉકેલતું જાય છે. આપણા પૂર્વાચાર્યોએ વરસાદની સાથે ગ્રહ નક્ષત્ર–રાશી વિગેરેનો સંબંધ વિચાર્યો હતો અને તેથી તેઓ પણ મેઘ–વરસાદના રહસ્ય વિષે કેટલીક આશ્ચર્યજનક શોધો કરી શકયા હતા. આ ગ્રંથ એવાજ એક પંડિત પૂર્વાચાર્યની અદ્ભૂત કૃતિ છે.

આ ગ્રંથના કર્ત્તા શ્રી વિજય પ્રભ સૂરિએ દરેક માસ વિષે અલગ અલગ વિવેચન કરી, ચાતુર્માસમાં તેનાં કેવા સારાં અથવા નરસાં પરિણામ આવશે તે જણાવ્યું છે. અમે આશા રાખીએ છીએ કે તેમનો અનુભવ અથવા અવલોકન અને અભ્યાસ આપણા જેવા સાધારણ માણસોને માટે ઘણોજ ઉપયોગી થઇ પડશે.

પૂર્વાચાર્યકૃત " મેઘમાળા " ના અંતે એક ન્હાની શી પુરવણી પણ અમે શ્રી રૂદ્રયામલ તંત્રમાંથી ઉતારી છે અને તે પણ ઘણી માર્ગદર્શક થઇ પડશે એમ માનીએ છીએ.

શ્રી રૂદ્રયામલતંત્ર કયારે લખાયું અને તેના લેખક કોણ હશે એ બરાબર જણાયું નથી. પણ તેમના આ શબ્દો:—

Aho ! Shrutgyanam

असत्यवादिनो दृश्यंते नाना जनपदाः प्रिये
मेघा न वर्षंते तत्र सौराष्ट्रे पूर्वसागरे

" હે પ્રિયે ! અસત્ય બોલનાર કેટલાક દેશો હોય છે. પુર્વસાગર તરફનો સૌરાષ્ટ્ર પણ એવોજ એક દેશ છે અને તેથી ત્યાં વરસાદ પડતો નથી. " આપણુને સૌને ચકિત કરે છે ! આ ઉદ્દગાર ઘણા જુના છે તેથી તેની સામે કંઇ ચર્ચા કરવી નિરર્થક છે. પરંતુ રૂદ્રયામલતંત્રના કર્ત્તાને સૌરાષ્ટ્ર દેશનો કંઈક કડવો અનુભવ થયો હશે એમ તો ચોકકસ જણાય છે. અસ્તુ.

અમે શ્રી વિજય પ્રભસૂરીના શબ્દોને અને ભાવનેજ વળગી રહીને આ ભાષાંતર પ્રકટ કર્યું છે. અમારી અલ્પમતિ પ્રમાણે ક્યાંઇ સુધારો વધારો કે બગાડો કર્યો નથી ખેડુતો, વેપારીઓ અને સાધારણ જનતા પણ તેનો લાભ મેળવે એવી અમે ઉમેદ રાખીએ છીએ.

પ્રકાશક.

Aho ! Shrutgyanam

ત્રિકાળદર્શી શ્રી નરચંદ્ર મહારાજ તથા શ્રી હીરવિજયમહારાજ
પ્રણીત

નરચંદ્ર જૈન જ્યોતિષ

અને

જ્યોતિષ હીર

કિમ્મત રૂ. ૩-૦-૦ (પોસ્ટેજ વી૦ પી૦ ખર્ચ જુદું.)

તમારે કોઇ **જોષીના** ઓશીયાળા રહેવાની હવે જરૂર નથી, કારણ કે આ ગ્રંથમાં જ્યોતિષ સંબંધી બે સમર્થ આચાર્યોએ અગણિત વિષયો ઉપર ભરચક વિવેચન કર્યું છે. સૌથી મોટી ખુબી તો આ ગ્રંથમાં એજ છે કે **ઘણા જ્યોતિષીઓ આંખે પાટા બંધાવી** ઉંડા કુવામાં ઉતારે છે, તેમ આમાં ઠગાવાની કે છેતરાવાની બીલકુલ ભીતિ રહેતી નથી. કારણ કે જૈનઆચાર્યોની **નિસ્પૃહતા**, નિર્ભયતા અને **નિરાડંબરથી** કોણ અજાણ્યું છે ? તેમને એવો તે શું સ્વાર્થ હોય કે લોકોને છેતરવાનું પાપ વ્હોરે ? ખરેખર **નરચંદ્ર મહારાજે અને હીરવિજયસૂરિ મહારાજે** કેવળ **સંસારીઓના** હિતાર્થેજ આ ગ્રંથ રચ્યો છે.

મનુષ્ય ઉપર એક પછી એક **નવગ્રહ** હંમેશાં સારાંમાઠાં આવ્યે જાય છે. માઠા ગ્રહમાં માણસ આકુળ વ્યાકુળ બની જાય છે, આમ તેમ **દોડાદોડ** કરે છે, પણ તેમ ન કરતાં જે **જાપ** કરવાથી **ગ્રહશાન્ત** થાય તે જાપ કરવાની રીત આ **ગ્રંથમાં** ખાસ આપેલ છે. ઉપરાંત આ ગ્રંથમાં વર્ષના ચાર સ્તંભનો યંત્ર આપ્યો છે, તે પરથી ચાલુ વર્ષ અથવા ગમે તે વર્ષ કેવું નીવડશે તેની પણ સહેજે કલ્પના થઈ શકશે.

Aho ! Shrutgyanam

સ્ત્રી-પુરૂષનો સાચો સલાહકાર

વિવેક વિલાસ સચિત્ર.

આજે **પાંચમીવાર** પ્રકટ થાય છે અને અમારા રજીસ્ટરમાં હજારો ગ્રાહકોનાં નામ અગાઉથીજ નોંધાઇ ગયાં છે પરચુરણ ખરીદનારા ભાઇઓએ પહેલી તકે આવી, આ ગ્રંથ જોઇ જવો અને પસંદ પડે તો તેજ વખતે ખરીદી લેવો કોઇ પુછશે કે આ વખતે

કંઇ ખાસ ખુબી છે ખરી ?

જવાબમાં એટલુંજ જણાવવાનું કે પહેલી ચાર આવૃત્તિઓ કરતાં આમાં મનુષ્યની દશ દશાઓ **સચિત્ર**, શાસ્ત્રાનુસાર શુકનશાસ્ત્ર અને યુરોપની ધરાને ધ્રુજાવનાર મહાન્ **નેપોલીયનનું રમલશાસ્ત્ર** પણ ઉમેરવામાં આવ્યું છે, જેનો ઉપયોગ એક વૃદ્ધથી લઇ બાળકો સુદ્ધાં પણ સ્હેલાઇથી કરી શકશે.

આ ગ્રંથ **શુકનશાસ્ત્ર, રતિશાસ્ત્ર, સામુદ્રિકશાસ્ત્ર, દર્શનશાસ્ત્ર, નીતિશાસ્ત્ર, વૈદિકચર્ચા, જ્યોતિષશાસ્ત્ર**, ઉપરાંત **ધર્મશાસ્ત્ર, આચારવિધિનો તો એક મોટો સમુદ્ર છે** અને તે વાત તો ક્યારનીયે પુરવાર થઇ ચુકી છે.

લગભગ ૫૦૦ પાનાના દળદાર-સુંદર ચિત્રોથી ભરપુર ગ્રંથની કીમત ઓછામાં ઓછી હોઇ શકે તેટલીજ રાખવામાં આવી છે. અર્થાત્ રૂા. ૩-૦-૦ પોસ્ટેજ વિગેરે અલગ. આ ગ્રંથ અમારા સિવાય બીજા કોઇબી સ્થળે મળી શકશે નહીં.

Aho ! Shrutgyanam

જૈન જ્યોતિષ શાસ્ત્રનો પ્રધાન ગ્રંથ

ચૌદ પૂર્વધર-શ્રુતકેવળી શ્રી ભદ્રબાહુબલસ્વામીએ રચેલી

શ્રી ભદ્રબાહુ સંહિતા.

(સંવાદ રૂપે તૈયાર કરનાર રા. સુશીલ.)

આ દુર્લભ અને અમુલ્ય ગ્રંથમાં સૂર્ય, ચંદ્ર અને બીજા ગ્રહોની ગતિ સ્થિતિ ઉપરથી આ પૃથ્વી ઉપર કેવી અસર થાય છે તેનું વિગતવાર સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવ્યું છે. વીજળી, વરસાદ, ઉલ્કાપાત અને ખાધા ખોરાકીની ચીજોના ભાવ, રૂ વિગેરેની તેજી-મંદી, વિવિધ સ્વપ્નોનાં પરિણામ તેમજ બીજી દૈવી વિદ્યાઓ વિષે એક બાળક પણ સમજી શકે એવી રીતે વિવેચન કરવામાં આવ્યું છે. લગભગ કેવળી ભગવાન્ જેટલું અપૂર્વ જ્ઞાન ધરાવનાર પૂર્વાચાર્યોની કૃતિ વિષે અભિપ્રાય આપવો એ સાહસજ ગણાય, એમ ધારી અમે તે વિષે મૌનજ રહીએ છીએ.

આ ગ્રંથ એક ગરીબથી લઇ લક્ષાધિપતિને, એક શ્રાવકથી લઇ મુનિ મહારાજને એક સરખો ઉપયોગી થઇ પડે તેમ છે. કારણકે તેમાં વ્યવહાર અને બીજી જાણુવા જેવી ઘણી વાતોના ખુબ ખુબીથી ખુલાસા કરવામાં આવ્યા છે. કીં. રૂા. ૩-૦-૦ ત્રણ. વ્હેલો તેજ પહેલો.

Aho ! Shrutgyanam

श्री जिनाय नमः

શ્રી વિજયપ્રભસૂરિ

વિરચિત

મેઘમાળા વિચાર

श्री युगादि प्रभुं नत्वा, ध्यात्वा च श्रुतदेवताम्
मेधमालाख्य ग्रन्थोऽयं रच्यते जनकामदः ॥ १

શ્રી ઋષભદેવ પ્રભુને નમસ્કાર કરીને તથા શાસન દેવતાનું ધ્યાન ધરીને, લોકોના વાંછિતને દેનારો આ "મેઘમાળા" નામનો ગ્રંથ રચું છું. ૧

सामान्य माहिती

कार्त्तिके मार्गशीर्षे वा संक्रांतौ यदि वर्षति
मध्यमं जायते शस्यं पौषमासि सुभिक्षितम् ॥ २

કાર્તિક અથવા માગસર માસમાં સંક્રાંતિને દિવસે જો વરસાદ વરસે તો મધ્યમ પ્રકારનું ધાન્ય થાય અને પોષમાસની સંક્રાન્તિને દિવસે જો વરસે તો સુકાળ થાય. ૨

Aho ! Shrutgyanam

दीपोत्सवदीने वारौ, भौमार्कौं न शुभावहौ
संक्रांतौ वर्षति चेच्च, शुभ मर्थादिके नहि. ३

દીવાળીને દિવસે જો મંગળ તથા રવિવાર હોય તો તે શુભ કરનારાં નથી, અને તે સંક્રાંતિના દિવસે જો વરસાદ થાય તો ધન આદિકમાં શુભકારક ન થાય. ૩

*गर्जिते कार्त्तिके मासे, चतुर्मासेषु वर्षति
सुभिक्षं जायते तत्र, शस्य संपत्ति रुत्तमा. ४

જો કાર્ત્તિક માસમાં ગર્જના થાય (અથવા ગર્ભ ધારણ કરે) તો ચતુર્માસમાં સારો વરસાદ થાય, સુકાળ થાય અને ધાન્યની પેદાશ પણ સારી થાય. ૪

सर्ववर्णास्तथा मेघा, जायंते च पृथक् पृथक्
कार्त्तिके चैत्र मासे तु इदृशं गर्भलक्षणम्. ५

કાર્ત્તિક માસમાં જુદા જુદા રંગનાં જો વાદળાં છૂટાં છૂટાં થાય તો જાણવું કે વરસાદનો ગર્ભ બંધાયો છે. ૫

कार्त्तिके पुष्पनिष्पत्ति र्मार्गे स्नानं मतं किल,
पौषे त्वत्र शुभो वतो नित्यं माघो घनान्वितः ६

કાર્ત્તિક માસમાં પુષ્પનિષ્પત્તિ, માગસર માસમાં સ્નાન, પોષ માસમાં ઉત્તમ વાયુ અને માહ મહીનો હંમેશાં વાદળાવાળો હોય. ૬

---

* કોઈ સ્થળે ગર્ભિતે એવો પાઠ છે.

Aho ! Shrutgyanam

फाल्गुनः फल्गुवातः स्यात् चैत्रे किंचित्पयोदितम्
वैशाखः पंचरुपी च ज्येष्ठश्चोष्मान्वितः शुभः ७

ફાગણુ માસમાં ઉત્તમ વાયુ હોય ચૈત્રમાં થોડાં થોડાં વાદળાં થાય તથા વૈશાખ માસ જો પંચરૂપી હોય અને જેઠ માસ ગરમીવાળો હોય તો શુભ જાણવો. ૭

मासाष्टक निमित्तेन चतुष्टयम भीष्टदम्

એવી રીતનાં આઠે માસનાં જો નિમિત્તો હોય તો ચતુર્માસના ચારે મહિનાઓ ઇચ્છિતને દેનારા થાય.

कार्त्तिक मास.

द्वादश्यां कार्त्तिके मास, शुक्लायां रजनी यदा
सकला निर्मला चेच्च, पुष्पबंधः स उच्यते ८

કારતક માસની શુદ બારસે જો આખી રાત્રિ નિર્મળ હોય તો તેનું નામ પુષ્પબંધ કહેવાય છે. કોઇ કોઇ આચાર્યનો એવો પણ મત છે કે કારતક શુદ ચૌદશની રાત્રી નિર્મળ હોય તો પુષ્પબંધ કહેવાય. કારતક શુદિ પડવાને દિવસે જો બુધવાર હોય તો રસની ચીજોના ભાવ વરસ દરમીયાન ઉંચા રહે. ૮

कार्त्तिका पूर्णमासी चेत् पूर्णा कृत्तिकान्विता
सर्व शस्य समुत्पत्ति नं विरोधो महीभुजाम्. ९

કારતક શુદ પુનમ જો પૂર્ણ તથા કૃત્તિકા નક્ષત્રવાળી

Aho ! Shrutgyanam

હોય તો સર્વ ધાન્યની ઉત્પત્તિ થાય, રાજાઓ વચ્ચે કંઈ વિ-
રોધ ન થાય. ૯

अथवा भरणी तद्वत् पूर्णा स्यात् पूर्णिमा दिने
कुत्रचिच्च भवेद् वृष्टिः कुत्रचित् स्याद वर्षणम् १०

અથવા એવીજ રીતે કારતક શુદ પુનમને દિવસે જો
સંપૂર્ણ ભરણી નક્ષત્ર હોય તો ક્યાંક વૃષ્ટિ થાય અને ક્યાંક
બિલકુલ વરસાદ ન થાય. ૧૦

अथवा रोहिणी तद्वत्, पूर्णा स्यात् पूर्णिमा दिने,
तदा त्व क्षेमसंतापौ, दुर्भिक्ष श्च प्रजायते. ११

અથવા તેવી જ રીતે કારતક શુદ પુનમને દિવસે જો
સંપૂર્ણ રોહિણી નક્ષત્ર હોય તો અક્ષેમ, સંતાપ તથા દુકાળ
થાય. બીજા એક પ્રખ્યાત જ્યોતિષી પણ કહે છે કેઃ— ૧૧

पुष्पबंधं प्रवक्ष्यामि, शृणु तत्वेन मानिनि,
कार्त्तिक्यां पूर्णमास्यां तु, नक्षत्रं कृत्तिका यदि १२
पुष्पबंधः समादिष्ट श्चतुर्मासेषु वर्षणम्,
सुभिक्षः क्षेमपारोग्यं, शस्य निष्पत्तिरेव च. १३

હે પ્રિયા! હું તને ખરેખરૂં પુષ્પબંધનું સ્વરૂપ કહું છું
તે સાંભળ. કારતક શુદ પુનેમને દિવસે જો કૃત્તિકા નક્ષત્ર હોય
તો તેને પુષ્પબંધ જાણવો. તેથી ચોમાસામાં સારો વરસાદ

Aho ! Shrutgyanam

થાય તેમ જ સુકાળ, ક્ષેમ, આરોગ્ય અને ધાન્ય વિગેરેની નિપજ પણ સારી હોય. ૧૨ ૧૩

अथवा तद्दिने देवि भरणी चेत्संजायते,
रोग दीर्घ मनावृष्टिः षट्खंडे च प्रजायते. १४

વળી હે દેવી! તે દિવસે જો ભરણી નક્ષત્ર હોય તો છ ખંડમાં રોગની ઘણી ઉત્પત્તિ થાય તેમજ અનાવૃષ્ટિ પણ રહે. ૧૪

संतापा विविधाकारा उत्पाता विविधास्तथा
मध्यमं जायते शस्यं मेघा वर्षंति मध्यमाः १५

વળી તેથી વિવિધ પ્રકારનાં સંતાપ ઉત્પાત થાય અને ધાન્ય તેમજ વરસાદ મધ્યમસર થાય. ૧૫

अथवा रोहिणी चेच्च, तद्दिने वर्तते प्रिये
द्विपादाश्चतुःपादाश्च विकलीभूत मानसाः १६

વળી હે પ્રિયે! તે દિવસે જો રોહિણી નક્ષત્ર હોય તો મનુષ્ય અને ચોપગાં જાનવરોના મનમાં પણ પીડા થાય. ૧૬

कार्त्तिके चैत्रमासे तु यदींदुग्रहणं भवेत्
तारकापतनं चैव उल्कापातो यदा भवेत् १७
भूमिकंपो विनिर्घातः पतंति जळबिंदवः
आकाशे च तथा दृष्ट्वा कुंडलं चेंदुसूर्ययोः १८

Aho ! Shrutgyanam

इंद्रायुधस्य वज्रस्य धूमकेतोश्च दर्शनम्
संग्रहं सर्वे शस्यानां, प्रयत्नेन तु कारयेत्. १९

કારતક માસમાં જો ચંદ્રનું ગ્રહણ હોય અથવા તારાઓ ખરતા હોય, ઉલ્કાપાત થયો હોય, ભૂમિકંપ થયો હોય, નિર્ઘાત થયો હોય જળબિંદુ પડયાં હોય, આકાશમાં સૂર્ય અને ચંદ્રની આસપાસ કુંડાળું દેખાયું હોય તથા ઇંદ્રધનુષ્ય કે ધૂમકેતુ દેખાયો હોય તો જાળવીને સર્વ ધાન્યોનો સંઘરો કરી રાખવો. ૧૭ ૧૮ ૧૯

मागशर मास.

मार्गादि पंचमासेषु शुक्ल षष्ठी रवेर्युता,
दुष्कालश्छत्रभंगं वा जायते हि महीभुजाम्. १

માગશર વિગેરે પાંચ માસમાં શુદ છઠ જો રવિવારી હોય તો દુકાળ તથા રાજાઓના છત્રનો ભંગ થાય. ૧

मार्गशीर्षे यदा मासे सप्तमी नवमी दिने,
ऐशानीं दिशमाश्रित्य दृश्यते मेघमंडलम्. २
स्तोकं वर्षति पर्जन्यो घनवातं समादिशेत्,
दशम्या मुत्तरो वातः प्रचंडो घनघातकः ३

માગશર માસમાં જો સાતમ અને નોમને દિવસે ઇશાન દિશામાં મેઘમંડળ દેખાય તો વરસાદ થોડો થાય, પ્રચંડ વાયુ

Aho ! Shrutgyanam

થાય, અને દશમને દિવસે ઉત્તર દિશામાં જો પ્રચંડ વાયુ વાય તો વરસાદ બિલકુલ ન થાય. ૨, ૩

मासस्य मार्गशीर्षस्य मघा नक्षत्रमेव चेत्,
कृष्णपक्षे चतुर्थ्यां तु सविद्युन्मेघदर्शनम्. ४
तस्मिन्नृक्षे तदाषाढे जलपूर्णा मही भवेत्,
संपूर्णा शस्यनिष्पत्तिः सुभिक्षं च समादिशेत्. ५

માગશર મહિનાના કૃષ્ણપક્ષની ચોથને દિવસે જો મઘા નક્ષત્ર હોય તથા વિજળી સહિત મેઘનું દર્શન થાય તો અસાડ મહિનાના તે નક્ષત્રમાં—મઘા નક્ષત્રમાં—પૃથ્વી જળથી સંપૂર્ણ થઈ જાય, ધાન્યની પેદાશ ઘણી સારી થાય તથા સુકાળ પણ થાય. ૪, ૫

रात्रौ दृष्टा दिने वृष्टि र्दिने दृष्टा भवेन्निशि
पुरुष स्त्री संयोगोव विद्युन्मेघ स्तथैव च. ६

રાત્રે જો વિજળી જોવામાં આવે તો દિવસે વરસાદ થાય અને દિવસે જોવામાં આવે તો રાત્રે થાય. પુરૂષ અને સ્ત્રીના સંયોગની જેમ વીજળી અને મેઘનો સંયોગ પણ જાણી લેવો. ૬

कृष्णेपक्षे तथाष्टम्यां नवम्यां हस्तभे किल
सर्वतो दिशि दृश्येच्च विद्युदभ्रेण संयुता. ७

Aho ! Shrutgyanam

तद्दक्षे चैव माषाढे जलपूर्णा मही भवेत्
सुभिक्षं शस्य निष्पत्ति वसुधा नंदते तथा. ८

માગશર માસની કૃષ્ણપક્ષની આઠમ તથા નવમને દિવસે જો હસ્ત નક્ષત્ર હોય, અને આકાશમાં વાદળાં સાથે સર્વ દિશાઓમાં વિજળી ચમકતી હોય તો આષાઢ મહિનાના તે નક્ષત્રમાં પૃથ્વી જળથી તરબોળ થઇ જાય, સુકાળ થાય, ધાન્યની ઉત્પત્તિ થાય અને પૃથ્વીમાં સર્વત્ર આનંદ રહે. ૭, ૮

चतुर्थी पंचमी षष्ठयां अश्लेषा च मघा तथा
यदा च पूर्वफारुक्षं त्रिरात्रं वर्षते ध्रुवम्. ९

માગશર માસની ચોથ, પાંચમ અને છઠ્ઠને દિવસે જો અશ્લેષા, મઘા તથા પૂર્વા ફાલ્ગુની નક્ષત્ર હોય તો ખરેખર ત્રણ દિવસ સુધી વરસાદ થાય. ૯

अष्टमी नवमी चैव चित्रनक्षत्रसंयुता
आषाढे श्वेतपक्षे च तद्दिने वर्षते ध्रुवम्. १०

માગશર માસની આઠમ અને નોમ જો ચિત્ર નક્ષત્રવાળી હોય તો આષાઢ માસના શુક્લપક્ષમાં તે દિવસોએ ખરેખર વરસાદ થાય. ૧૦

नवमी दशमी चैव एकादशी यदा भवेत्
स्वाति नक्षत्र संयुक्ता, शस्यनाशो जलंविना. ११

માગશર માસની નોમ, દશમ તથા અગીયારસ જો સ્વાતિ

Aho ! Shrutgyanam

નક્ષત્રવાળી હોય તો પાણી વિના ખેતીનો નાશ થવાનો એમ સમજી રાખવું. ૧૧ વ્યવહારકલ્પમાં શ્રી હરિભદ્રસૂરિએ પણ કહ્યું છે કેઃ—

मार्गशीर्षं नवमी दशमी चैकादशी च तिथिरत्र कराला
स्वातिरुक्षसहिता सितपक्ष्या शस्यनाशकलिता कलिताका. १२

માગશર માસના શુકલ પક્ષની નોમ દશમ અને અગીયારશની તિથિ જો સ્વાતિ નક્ષત્રવાળી હોય તો તેને ભયંકર, ધાન્યનો નાશ કરનારી તથા કષ્ટ ઉપજાવનારી સમજવી. ૧૨

द्वादश्यां च त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां तथैव च
अमावास्यां तथा च स्यान् नक्षत्रं च मघाभिधम् १३
संध्याकाल श्च तासु चेन् मेघबिंदु समन्वितः
आषाढे श्वतपक्षे तु वर्षते नात्र संशयः १४

માગશર માસની બારસ તેરસ ચૌદશ તથા અમાસને દિવસે જો મઘા નક્ષત્ર હોય અને તે તિથિઓનો સંધ્યાકાળ જો મેઘનાં બિંદુએ કરી સહિત હોય તો આષાઢ મહિનાના શુકલપક્ષમાં જરૂર વરસાદ વરસે. ૧૩, ૧૪

पोष मास.

पौषे शुक्र चतुर्थ्यां तु विद्युतां दर्शनं शुभम्
अभ्रच्छन्नं नभः श्रेष्ठ मस्यामिंद्रधनुस्तथा. १

Aho ! Shrutgyanam

પોષ મહિનાની શુકલ ચતુર્થીને દિવસે જો વિજળી દેખાય, આકાશ વાદળથી છવાયેલું જણાય તથા ઇંદ્ર ધનુષ્ય નજરે ચડે તો તે ઉત્તમ જાણવાં ૧

मेषपदं गतश्चंद्रो गर्जनं पूर्वदिग्गतम्
कुंडलं च तथा भानौ सुभिक्षं जायते तदा २

વળી તે દિવસે જો ચંદ્ર મેષરાશિમાં હોય, પૂર્વ દિશામાં ગર્જના થાય અને સૂર્યની આસપાસ કુંડાળું દેખાય તો સુકાળ થાય. ૨

तद्दिने च प्रतीच्यां च संध्याकाले भवेद्यदि
पीतवर्णो घटाटोपो घनानां गगनांगणे ३
भूमिकंपो भवेन्नूनं प्रचंडो जनभीतिदः
पंचविंश त्यहर्मध्ये तद्देशे नात्र संशयः ४

પોષ માસની ચોથને દિવસે સંધ્યાકાળે પશ્ચિમ દિશામાં આકાશમાં પીળા રંગનાં વાદળાંનો ઘટાટોપ થાય તો તે દેશમાં ખરેખર પચીસ દિવસની અંદર પ્રચંડ અને લોકોને ભયભીત કરનાર ભૂમિકંપ થાય, એ નિઃસંશય છે. ૩, ૪.

पौष शुक्ल पंचम्यां तु सवातो घनडंबरः
प्रभाते जायते मह्यां विद्युद् गर्ज समन्वितः ५
तदा तस्यां चतुर्मास्यां, चातकैरिव मानुषैः
लभ्यते जलबिंदुर्नो नभसो मेघ संभवः ६

Aho ! Shrutgyanam

પોષ સુદિ પાંચમને દિવસે પ્રભાતમાં વાયુ, વીજળી અને ગર્જના સાથે મેઘનો આડંબર થાય તો તે ચોમાસામાં ચાતકોની પેઠે માણસોને પણ આકાશમાંથી વરસાદનું ટીપું મળવું દુર્લભ થઇ પડે. ૫, ૬.

पौषस्य शुक्ल षष्ठयां तु मध्यान्हे नभसि स्थितः
नभोमणि मेंघवृंदैर्यदा श्वेतैस्तिरोहितः ७
तदादेशे समभ्येति कराला क्षुद्र पक्षिणाम्
शस्य भक्षणशीला च श्रेणि र्भाद्रपदे ध्रुवम् ८

પોષ શુદિ છઠ્ઠને દિવસે મધ્યાન્હકાળે આકાશમાં રહેલો સૂર્ય જો શ્વેત રંગનાં વાદળાંના સમુહથી છવાયેલો હોય તો ભાદરવા મહિનામાં તે દેશમાં ધાન્યનું ભક્ષણ કરનારી ક્ષુદ્ર પક્ષિશ્રેણી-તીડો વિગેરેની ભયંકર આફત ખરેખર આવી ચડે.

पौषे तु सप्तमी शुक्ला अष्टमी नवमी तथा
रेवती ऋक्षसंयुक्ता तदा धान्यं न संग्रहेत् ९

પોષ મહીનાની શુકલ પક્ષની આઠમ તથા નોમ જો રેવતી નક્ષત્રવાળી હોય તો ધાન્યનો સંઘરો કરવાની જરૂર નહિ. કારણ કે તે વરસમાં ધાન્યની સારી ઉપજ થાય. ૯.

तस्य मासस्य सप्तम्यां प्रभाते सूर्यमंडलम्
उद्यदेवाभ्रछन्नं चेत् तदान्नं जायते शुभम् १०

પોષ મહીનાની સાતમે પ્રભાતમાં સૂર્યમંડલ ઉગતાંજ જો વાદળથી છવાયેલું દેખાય તો ઘણું ધાન્ય નીપજે ૧૦

Aho ! Shrutgyanam

अष्टमी तस्य मासस्य चंद्रवासरसंयुता
मारी प्रभृति रोगाणां कारिणी विबुधैर्मता. ११

પોષ માસમાં શુદ આઠમ ને સોમવાર હોય તો તે મરકી આદિ રોગોને જન્મ આપનારી જાણવી એમ વિદ્વાનોએ કહી રાખ્યું છે ૧૧

नवमी भरणीयुक्ता वात विद्युत्समन्विता
ज्योतिषिकैः समभ्यस्ता क्षुद्रोपद्रवकारिणी. १२

પોષ માસની નોમ ભરણી નક્ષત્રવાળી હોય અને વાયુ તથા વિજળી દેખાય તો ન્હાના ઉપદ્રવો થાય ૧૨

दशम्यां तस्य मासस्य यदा विद्युद्धिमान्विता
तदातिवृष्टितो धान्य निष्पत्तिर्न हि संभवेत् १३

પોષ માસની શુકલ દશમને દિવસે જો હિમ સાથે વિજળી થાય તો તે વરસમાં અતિવૃષ્ટિ થાય અને ધાન્યની પેદાશને હાની કરે. ૧૩

एकादशी तथा ज्ञेया सूर्यतापेन वर्जिता,
पशुनाशकरा प्राज्ञै स्तृण संहति वर्जिता. १४

પોષ માસની શુકલ પક્ષની અગીયારસ જો સૂર્યના તાપથી રહિત હોય તો તે વરસમાં ઘાસ નહીં જેવું પાકે અને તેથી પશુઓનો નાશ થાય.

Aho ! Shrutgyanam

पौर्णमासी द्वितीया च तस्य मासस्य चेद्यदा
क्रमेण च शनिसूर्य वासराभ्यां समन्विता १५
आषाढे शुक्लपक्षे च प्रभूतं जलवर्षणम्
निष्पत्तिः सर्व शस्यानां प्रजा च निरुपद्रवा १६

પોષ માસની પુનમ તથા બીજ જો અનુક્રમે શનિ અને રવિવારી હોય તો અષાડ મહિનાના શુક્લ પક્ષમાં ઘણો વરસાદ થાય, ધાન્ય સારી રીતે પાકે અને પ્રજા પણ નિરૂપદ્રવપણે રહે. ૧૫, ૧૬

पौषमासस्य संक्रांतौ रविवारो यदा भवेत्
द्विगुणं धान्यमूल्यं च कथितं मुनिसत्तमैः १७

પોષ માસની સંક્રાંતિને દિવસે જો રવિવાર હોય તો ધાન્યનું બમણું મૂલ્ય ઉપજે, એ પ્રમાણે ઉત્તમ મુનિઓએ ભાખ્યું છે.૧૭

शनौ च त्रिगुणं प्रोक्तं भौमे चैव चतुर्गुणं
तुल्यं च बुध शुक्राभ्यां मूल्यार्धं गुरु सोमयाः १८

વળી તે સંક્રાંતિને દિવસે જો શનિવાર હોય તો ધાન્યનું મૂલ્ય ત્રણગણું, મંગળવાર હોય તો ચારગણું, બુધ અને શુક્ર વાર હોય તો તુલ્ય તથા જો ગુરૂ અને સોમવાર હોય તો અરધું જાણવું. ૧૮

शनिभानुकुजे वारे संक्रांतिश्च भवेद्यदा
धान्यमूल्यस्य वृद्धिश्च जायते राज्यविड्वरम् १९

Aho ! Shrutgyanam

શનિવાર, રવિવાર તથા મંગળવારે જો સંક્રાંતિ હોય તો ધાન્યના ભાવમાં વધારો થાય અને રાજ્યમાં પણ વિગ્રહ થાય.

शन्यर्क भौमवारे तु संक्रांति मृगकर्कयोः
यदा तदान्नमूल्यस्य वृद्धिः संजायते ध्रुवम्   २०

મકર સંક્રાંતિ અને કર્ક સંક્રાંતિ જો શનિવારી, સોમવારી અથવા મંગળવારી હોય તો ખરેખર ધાન્યના ભાવમાં વૃદ્ધિ થાય.

पौषस्य पूर्णमास्यां च संध्याकाले भवेद्यदि
मेघैश्छन्नो निशानाथः पीतवर्णै र्मनोहरैः   २१
तदा वैश्वानरोद्भूत भयो जगद्विनाशकः
कथितश्चंद्रप्रज्ञप्त्यां, सर्व शास्त्रविचक्षणः   २२

વળી પોસ શુદિ પુનમને દિવસે સંધ્યાકાળે ચંદ્ર જો પીળા રંગનાં મનોહર વાદળાંથી છવાયેલો હોય તો જગત્નો નાશ કરનારો અગ્નિ ઉત્પન્ન થાય અને તેથી લોકો ભય પામે; એમ સર્વ શાસ્ત્રોમાં વિચક્ષણ એવા જિનેશ્વરોએ ચંદ્રપ્રજ્ઞપ્તિમાં કહ્યું છે.

तद्दिने भौमवारश्चेद् चंद्रश्चैव प्रभोज्झितः
बाल मृत्युप्रदो ज्ञेयो माघमास स्तदाखिलः   २३

પોષ શુદિ પુનમને દિવસે જો મંગળવાર હોય અને ચંદ્ર નિસ્તેજ દેખાય તો આખા મહા મહિનામાં બાળકોનું મૃત્યુ પ્રમાણ વધી જાય. ૨૩

Aho ! Shrutgyanam

तद्दिने रविवारश्चेत् रक्तोयैश्च राजिता
पूर्वदिग्यदि मध्यान्हे दुष्काळो हि तदा भवेत् २४

વળી તે દિવસે રવિવાર હોય અને મધ્યાન્હકાળે લાલ રંગનાં વાદળાં પૂર્વ દિશાને રંગે તો ખરેખર દુકાળ પડે. ૨૪

तद्दिने शनिवारश्चेत् प्रातः सूर्यश्च छादितः
धुम्रतुल्यै र्यदा मेघै स्तदा मारी न संशयः २५

વળી તે દિવસે શનિવાર હોય અને પ્રભાતમાં સૂર્ય ધુંમાડા જેવાં વાદળાંથી આચ્છાદિત થયો હોય તો મરકીનો ચોક્કસ ઉપદ્રવ થાય. ૨૫

पौषे मूल भरण्यांत श्चंद्रमानेन साभ्रके
आर्द्रादौ च विशाखांते रवेर्मान न वर्षति. २६

વાદળાંવાળા પોષ મહિનામાં મૂલ નક્ષત્ર તથા ભરણી નક્ષત્રમાં જેટલો ચંદ્રમા હોય તેના માનથી (પ્રમાણુથી) આર્દ્રાથી માંડીને વિશાખા સુધી સૂર્યના માને કરીને વરસાદ વરસે છે ૨૬

पौषस्य पूर्णमासी चेदूना च घटिका त्रयम्
धान्यराशिप्रदा मह्यां तदा वर्षा शुभा भवेत्. २७

વળી જો પોષ શુદિ પુનેમ ત્રણ ઘડી ઓછી હોય તો પૃથ્વી ઉપર ધાન્યના મ્હોટા સમૂહને આપનારો વરસાદ થાય.

Aho ! Shrutgyanam

माघ मास.

माघ शुक्ल द्वितीयायां प्रातः सूर्योभवेद्यदि
तीव्रतापयुतो ह्यत्र तदा दुष्कालसंभवः १

મહા શુદિ બીજને દિવસે પ્રભાતમાં સૂર્ય તીવ્ર તાપ આપે તો ખરેખર દુકાળ પડે. ૧

तद्दिने चैव मध्यान्हे प्रतीच्यां मेघडंबरः
श्वेतवर्णो यदा जात स्तदा धान्यं न जायते. २

વળી તે દિવસે બપોરે પશ્ચિમ દિશામાં શ્વેત રંગનાં વાદળાંનો આડંબર થાય તો ધાન્ય ન પાકે. ૨

माघ शुक्ल तृतीयायां संध्याकाले निशाकरः
हरिद्वर्णयुतै र्मेघै श्छादितो यदि चेद् भवेत् ३
तदा सप्तदिनैर्नूनं भवेद्वृष्टिस्तदादितः
गोधूम चणकादीनां नाशश्च भवति ध्रुवम् ४

મહાશુદિ ત્રીજને દિવસે સંધ્યાકાળે ચંદ્ર લીલા રંગવાળાં વાદળાંથી છવાયેલો હોય તો ખરેખર ત્યારથી લઈને સાત દિવસની અંદર વૃષ્ટિ થાય અને ઘઉં તથા ચણા વિગેરે અવશ્ય નાશ પામે. ૩, ૪

तद्दिने रविवार श्चेत् अर्कोपि च दिनोदये
परिवृत्तो यदा त्वभ्रैः सजलैश्च्छादितो भवेत्. ५

तदा नूनं न वृष्टिः स्याद् वर्षं यावज्जनप्रिया
दुःखिनः पशवोपि स्यु स्तृणतोय विवर्जिताः ६

વળી મહા શુદિ ત્રીજને દિવસે જો રવિવાર હોય અને દિવસ ઉગતી વેળા સૂર્ય પણ જળભરેલાં વાદળાંથી છવાયેલો દેખાય તો ખરેખર લોકોને પ્રિય એવી વૃષ્ટિ એક વરસ સુધી ન થાય, પશુઓ ઘાસ તથા પાણીના અભાવે ઘણા હેરાન થાય. ૬

माघ शुक्ल चतुर्थ्यां तु निशीथे ह्यंबरे यदि
रक्त वर्णयुता विद्युद् दृश्यते गर्जनैर्युता ७
तदा वृष्टि र्भवेन्नूनं ज्येष्ठमासि मनोहरा
धान्य तृणादि वस्तूनां निष्पत्तिश्च भवेच्छुभा. ८

વળી માહ શુદિ ચોથની મધ્ય રાત્રિએ આકાશમાં ગર્જના સાથે લાલ રંગની વિજળી દેખાય તો ખરેખર જેઠ માસમાં મનોહર વૃષ્ટિ થાય તથા ધાન્ય ઘાસ આદિ વસ્તુઓ ઘણા સારા જથ્થામાં પાકે ૭ ૮

तद्दिने रक्तवर्णाढय मेकमभ्रं च पूर्वतः
पश्चिमतो द्वितीयं च समागच्छच्च दृश्यते ९
प्रातर्यदैकवेलायां तदा नाशो भवेद् ध्रुवम्
जलप्लवैर्हि देशस्य मासस्यावधिना ततः १०

વળી તે માહ શુદિ ચોથને દિવસે પ્રભાતમાં એકી વખતે લાલ રંગનું પૂર્વદિશા તરફથી એક વાદળું અને પશ્ચિમ દિશા

Aho ! Shrutgyanam

તરફથી બીજું વાદળું આવતું દેખાય તો ત્યારથી માંડીને એક મહિનાની અંદર પાણીની રેલથી ખરેખર દેશનો નાશ થાય. ૯,૧૦

माघ शुक्लस्य पंचम्यां घटित्रयदिने गते
बिंबमर्कस्य रक्तं स्यात्तदा धान्यक्षयो भवेत् ११

માહ શુદિ પાંચમે ત્રણ ઘડી દિવસ ગયા બાદ સૂર્યનું બિંબ લાલ રંગનું દેખાય તો ધાન્યનો નાશ થાય. ૧૧

तद्दिने शनिवारश्चेद् हीमवृष्टि भवेत्तथा
तदा भुवि महामारी चैत्रे भवति निश्चितम् १२

મહા શુદિ પાંચમે જો શનિવાર હોય અને વળી હિમની વૃષ્ટિ થાય તો પૃથ્વીમાં ચૈત્ર માસમાં ખરેખર મરકીનો મોટો ઉપદ્રવ થાય. ૧૨

षष्ठयां च माघ शुक्लस्य सूर्यास्त समये खलु
दृश्यते सर्व वर्णाढय मिंद्रचापो यदांबरे १३
तदा वृष्टि भवेद् शीघ्रं तस्यामेव निशि ध्रुवम्
निष्फलैव महारोग दायिनी देहिनां सदा १४

વળી મહા શુદિ છઠને દિવસે સૂર્યાસ્ત સમયે આકાશમાં સર્વ રંગોવાળું જો ઈંદ્રધનુષ્ય દેખાય તો ખરેખર તુરત તેજ રાત્રિએ નિષ્ફળ તથા પ્રાણીઓને હંમેશા મહા રોગ કરનારી વૃષ્ટિ થાય. ૧૩ ૧૪

माघ शुक्लस्य षष्ठी चेच्छनिवारान्विता यदा
कृष्णपक्षे तदाषाढे वृष्टि भवति निश्चितम् १५

Aho ! Shrutgyanam

મહા શુદિ છઠ ને શનિવાર હોય તો ખરેખર અસાડ મહિનાના અંધારીયામાં વરસાદ થાય. ૧૫

गतायां घटिका पंच रात्रो तत्र दिने यदा
तारकाणां भवेत्पातः प्रतीच्या मनिवारतः १६
पशूनां च तदा नाशो भवति हि तृणैर्विना
यतो बिंदुरपि वृष्टे भवति नो वर्षावधिम्. १७

વળી તે દિવસે પાંચ ઘડી રાત્રી ગયા બાદ જો પશ્ચિમ દિશામાં ઘણા તારા ખરે તો ઘાસ વિના ખરેખર પશુઓનો નાશ થાય, કારણ કે એક વરસ લગી વરસાદનું બિંદુ પણ ન પડે. ૧૬, ૧૭

श्री समंत जद्राचार्यें बतावेलो विधि.

મહા શુદિ છઠને દિવસે પ્રયોગ દ્વારા વરસાદની પરીક્ષા કરવાનો વિધિ શ્રી સમંત ભદ્રાચાર્યે પોતાના જ્યોતિનિર્ણય નામના ગ્રંથમાં નીચે પ્રમાણે કહ્યો છે:—

મહા શુદિ છઠને દિવસે સૂર્યોદય સમયે એક કુમારિકાએ સૂર્યસન્મુખ આકાશ પ્રદેશમાં ત્રીસ પલ સુધી દ્રષ્ટિ રાખીને પલ્યંકાસને પાટલા પર બેસવું. પોતાની સામે હાથ પહોંચે ત્યાં સુધી નિર્મળ પાણીથી ભરેલી એક કાંસાની ગોળ થાળી રાખવી. પછી તે થાળીમાં કુમારિકાએ પોતાની અનામિકા આંગળીથી, તેલમાં પલાળેલા કંકુના ત્રણવાર છાંટણાં નાખવાં અને "ॐ नमो सूर्याय ॐ नमो मेघाधिपतये अस्यां स्थाल्यां अवतरतु स्वाहा" એવી રીતનો મંત્ર ભણતાં ભણતાં, અંજલિમાં રાખેલાં કરેણ

ફુલ તે થાળીમાં નાખવાં. પછી તે બધું પાણી એક કોરા માટીના ઘડામાં ભરવું. તેના પર એક સરાવલું ઢાંકવું. તેની ઉપર લીલા રંગનું વસ્ત્ર કાચા સૂતરથી બાંધવું. એ ઘડો બપોરસુધી ત્યાં તડકામાં જ રહેવા દેવો, તેની પર છાંયા બિલકુલ ન આવવા દેવી. બપોર પછી તે ઘડો ખોલી તેમાં હરડા-બહેડા ને આમળાનું અર્થાત્ ત્રિફલાનું એક વાલ જેટલું ચૂર્ણ નાખવું. તે બાદ ઘડાને તેવી જ રીતે બંધ કરી પાછો તડકામાં મૂકવો. સાંઝે જ્યારે સૂર્ય અરધો અસ્ત થયો હોય ત્યારે તે ઘડો પેલી કુમારિકાના મસ્તક ઉપર ચડાવીને ઘરમાં લાવવો અને છેક પ્રભાત થતાં સુધી મુકી રાખવો. પછી સૂર્યોદય વખતે તે ઘડો ઉઘાડી તેમાં એક શ્વેત વસ્ત્રનો ટુકડો બોળવો, અને તે ટુકડાને ઘડામાં જ એક ઘડી સુધી રહેવા દેવો. પછી તે ટુકડાને નીચોવ્યા વગર છાંયામાં સૂકવવો. સૂકાઇ ગયા પછી જો તે વસ્ત્રના ટુકડામાં કાળા રંગના ડાઘા માલૂમ પડે તો જાણવું કે ચોમાસામાં સારો વરસાદ થશે અને જો લાલ રંગના ડાઘા દેખાય તો વરસાદની આશા ન રખાય અને જો સાવ કોરૂં વસ્ત્ર રહે તો અત્યંત વરસાદ પડે અને તેથી ધાન્યનો પાક નિષ્ફળ જાય એમ સમજવું.*

माघ शुक्लस्य सप्तम्यां घटि त्रयदिने गते
धूलिवृष्टि रीशाने चेत् धराकंपस्तदा निशि १८

મહા શુદિ સાતમે ત્રણ ઘડી દિવસ ગયા બાદ ઇશાન દિશામાં જો ધુળની વૃષ્ટિ થાય તો રાત્રિએ ધરતીકંપ થાય. ૧૯

---

* આ વિધિ અને પ્રયોગ બરાબર સમજી શકાય તે માટે ગુરૂગમની ખાસ જરૂર બતાવવામાં આવે છે.

Aho ! Shrutgyanam

माघ शुक्लस्य सप्तम्यां रविवारो यदा भवेत्
मध्यान्हे धूलिवृष्टिश्च प्रतीच्यामनिलैर्युता १९
तदा विद्युत्समुत्पातो भवति जनघातकः
तस्यां हि तद्दिने तत्र भूरि भय समन्वितः २०

મહા શુદિ સાતમને દિવસે જો રવિવાર હોય તથા મધ્યાન્હ કાળે પશ્ચિમ દિશામાં પવન સાથે ધૂળની વૃષ્ટિ થાય તો ત્યાં તેજ દિવસે રાત્રિયે ખરેખર લોકોનો નાશ કરનારો તથા ઘણા ભયવાળો વિજળીનો ઉપદ્રવ થાય. ૧૯ ૨૦

माघ शुक्लस्य सप्तम्यां संध्याकाले जलैर्युतो
मेघयूथो यदा प्राच्यां तदा दुष्कालसंभवः २१

માહ શુદિ સાતમે સંધ્યાકાળે પૂર્વ દિશામાં જળવાળાં વાદળાંઓનો સમુહ હોય તો દુકાળનો સંભવ જાણવો. ૨૧

माघशुक्लस्य चाष्टम्यां भोमवारो यदा भवेत्
आच्छादित स्तथा सूर्यः सूर्यास्तसमये यदि २२
नीलवर्णै र्महामेघै र्निष्कंपैश्च किलोन्नतैः
तदा धान्यस्य मूल्यं हि जायते द्विगुणं महीं २३

માહ શુદિ આઠમને દિવસે જો મંગળવાર હોય અને સૂર્યાસ્ત સમયે સૂર્ય જો લીલા રંગનાં નિષ્કંપ અને ઉંચાં વાદળાંઓથી આચ્છાદિત થયેલો હોય તો ખરેખર આ પૃથ્વીમાં ધાન્યનું મૂલ્ય બમણું થઇ જાય. ૨૨ ૨૩

Aho ! Shrutgyanam

माघ शुक्लस्य चाष्टम्यां शनिवारो यदा भवेत्
तदा वृष्टिः शुभा चोक्ता चतुर्मासि जिनाधिपैः २४

વળી મહા શુદિ આઠમને દિવસે શનિવાર હોય તો ચોમાસામાં સારો વરસાદ થાય એમ જિનાધિપોએ કહેલું છે. ૨૪

नभसि हि प्रभाते च माघ शुक्लाष्टमी दिने
इंद्रचापो यदा त्वर्धो दृश्यते घटिकावधि २५
तदा मारी समुत्पातो जायते जननाशकः
विदेशगमनं कार्यं ततो जीवितवांछिभिः २६

વળી માહ શુદિ આઠમને દિવસે પ્રભાતમાં જો એક ઘડી સુધી અરધું ઇંદ્રધનુષ્ય દેખાય તો માણસોનો નાશ કરનારો મરકીનો ઉપદ્રવ થાય માટે જીવિતની ઇચ્છા રાખનારાઓએ પરદેશમાં ચાલ્યા જવું. ૨૫ ૨૬

जायते तद्दिने चैवं धूलिवृष्टिर्यदांबरे
मध्यान्हे नैऋते भागे तदा दुष्कालसंभवः २७

વળી તે માહ શુદિ આઠમને દિવસે જો આકાશમાં મધ્યાન્હ કાળે નૈઋત દિશામાં ધુળની વૃષ્ટિ થાય તો દુકાળ પડે. ૨૭

माघ शुक्लाष्टमी चैव दुर्दिना यदि जायते
तदा पशुविनाशः स्याद्विविध व्याधिभि र्ध्रुवम् २८

મહા શુદિ આઠમને દિવસે વાદળાં થાય તો ખરેખર વિવિધ પ્રકારના રોગોથી પશુઓનો વિનાશ થાય. ૨૮

Aho ! Shrutgyanam

निशानाथो निशि जातो माघशुक्लाष्टमी दिने,
रक्तवर्णेन संवृत्तो यदा भामंडलेन च २९
तदाऽतिवृष्टि र्विज्ञेया चतुर्मासावधि जनैः
महामारी समुत्पातो धान्योत्पत्तेर संभवः ३०

મહા શુદિ આઠમને દિવસે રાત્રીએ જો ચંદ્ર લાલ રંગના ભામંડળથી ઘેરાએલો દેખાય તો ચતુર્માસ દરમીયાન ભારે વરસાદ થાય એમ જાણવું અને તેથી મ્હોટી મરકીનો ઉપદ્રવ થાય તેમજ ધાન્ય પણ ન પાકે. ૨૯, ૩૦

माघशुक्लस्य चाष्टम्यां यदा हि विद्युद्दर्शनम्
जायतेऽग्नौ दिशि चैव तदा वृष्टि र्न जायते ३१

માહ શુદિ આઠમે અગ્નિખુણામાં વિજલી દેખાય તો વરસાદ ન થાય. ૩૧

धुम्रयुक्तं यदाकाशं माघशुक्लाष्टमी दिने
दृश्यते हि तदा मह्यां भूमिकंपो भवेद्ध्रुवम् ३२

માહ શુદિ આઠમને દિવસે આકાશ ધુમાડાવાળું દેખાય તો જરૂર ધરતીકંપ થાય. ૩૨

तद्दिने गुरुवारश्चेत् प्रभाते मेघवर्षणम्
तदा वृष्टि र्न जायेत वर्षावधि हि निश्चितम् ३३

વળી તે દિવસે ગુરૂવાર હોય અને પ્રભાતમાં વરસાદ થાય તો ખરેખર એક વરસ સુધી વરસાદ ન થાય. ૩૩

Aho ! Shrutgyanam

माघशुक्लनवम्यां च रविवारो यदा भवेत्
करकाणां समुत्पातो प्रभाते च यदा भवेत् ३४
तदा स्वर्णादि धातूनां मूल्यं हि द्विगुणं मतम्
त्रिगुणं शनिवारश्चेत् भौमवारे चतुर्गुणम् ३५

માહ શુદિ નવમને દિવસે રવિવાર હોય અને પ્રભાતમાં કરાનો ઉપદ્રવ થાય તો ખરેખર સોનું વિગેરે ધાતુઓના ભાવ બમણા થઇ જાય. અને તે દિવસે શનિવાર હોય તો ભાવ ત્રણગણા અને ભોમવાર હોય તો ચારગણા થાય. ૩૪, ૩૫

मध्यान्हे तद्दिने चैत्र पूर्वदिग्यदि मंडिता
पंच वर्णैं र्महामेघै स्तदा मारी न संशयः ३६

વળી તે દિવસે–માહ શુદિ આઠમને દિવસે બપોરે પૂર્વ દિશા જો પચરંગી મોટાં વાદળાંઓથી ભરેલી દેખાય તો જરૂર મરકીનો ઉપદ્રવ થાય. ૩૬

माघशुक्ल नवम्यां च यदा हि विद्युद्दर्शनम्
जायते संध्यासमये तदा धान्यं न जायते. ३७

માહ શુદિ નવમને દિવસે સંધ્યાકાળે વિજળી થાય તો ધાન્ય ન નીપજે. ૩૭

तद्दिने रविवारश्चेत् आकाशं च जलप्लुतम्
सूर्यस्य दर्शनं चैव नो जायेत दिनावधि १८

Aho ! Shrutgyanam

तदा हि पशुविध्वंसः फाल्गुने भवति ध्रुवम्
स्फोटकादि महारोगै रेवं जिनविभाषितम्   ३९

વળી તે દિવસે રવિવાર હોય, આકાશ પાણીથી ભીંજાએલું હોય અને આખા દિવસ દરમીયાન સૂર્યના દર્શન ન થાય તો શીતલા વિગેરે મહા રોગોથી પશુઓનો વિનાશ થાય એમ શ્રી જીનેશ્વરોએ ભાખેલું છે. ૩૮, ૩૯

तद्दिने भोमवारश्चेत् पूर्वदिक्चैव भूषिता
श्याममेघैस्तदा वृष्टि राषाढे हि न संशयः   ४०

તે દિવસે જો ભોમવાર હોય અને પૂર્વ દિશા શ્યામ રંગનાં વાદળથી વિભૂષિત થયેલી હોય તો આષાઢ માસમાં ચોક્કસ વરસાદ થાય. ૪૦

तद्दिने चांबरे प्राच्यां निशीथे यदि जायते
पतनं तारकाणां च राज्यभ्रंशो न संशयः   ४१

વળી તે દિવસે આકાશમાં પૂર્વદિશામાં મધ્યરાત્રિએ તારા ખરે તો રાજ્યનો નાશ થાય એ વિષે શંકા ન રાખવી. ૪૧

तद्दिने धूमकेतोश्च दर्शनं यदि जायते
निशि तदा जनानां हि नाशो भवति मारीतः ४२

વળી તે માહ શુદિ નોમને દિવસે રાત્રિએ જો ધુમકેતુનું દર્શન થાય તો ખરેખર મરકીથી માણસોનો નાશ થાય. ૪૨

Aho ! Shrutgyanam

तद्दिने च निशानाथे संध्याकालेऽनिलैर्युते
दृश्यते शंखचिन्हं चेत् तदा वृष्टेरसंभवः ४३

વળી તે દિવસે સંધ્યાકાળે વાયુ ફુંકાય અને ચંદ્રની અંદર શંખનું ચિન્હ જણાય તો વૃષ્ટિ ન થાય. ૪૩

तद्दिने चैव नभसि प्रभाते यदि जायते,
चंडवातस्तदा ज्ञेया वृष्टि र्धान्यप्रदा भुवि ४४

વળી તે દિવસે આકાશમાં પ્રભાતકાળે સખત વાયરો વહે તો પૃથ્વીમાં ધાન્યને ઉપજાવનારો પુષ્કળ વરસાદ થાય. ૪૪

दशम्यां माघशुक्लस्य शक्रचापो विदृश्यते
संध्याकाले सदा ज्ञेया वृष्टि र्मारीप्रदा तदा ४५

મહા શુદિ દશમને દિવસે સંધ્યાકાળે જો ઇંદ્રધનુષ્ય દેખાય તો મરકી પેદા કરનારી વૃષ્ટિ થાય. ૪૫

दशमी माघशुक्लस्य भौमवारान्विता यदि
तदा बालविनाशो हि विज्ञेयो फाल्गुने ध्रुवम् ४६

મહા શુદિ દશમ જો ભોમવારી હોય તો ખરેખર ફાગણ માસમાં બાળકોનો નાશ થવાનો એમ જાણવું. ૪૬

विद्युत्पातो यदा जात स्तद्दिने वृषभोपरि
तदा प्राणिसमूहस्य नाशो भवेज्जलं विना ४७

વળી તે મહા શુદિ દશમને દિવસે બળદ ઉપર વિજળી પડે તો પાણી વગર પ્રાણીઓના સમુહનો વિનાશ થાય. ૪૭

Aho ! Shrutgyanam

तद्दिने सूर्यमध्ये चेद् दृश्यते रक्तभान्वितम्
तदस्तसमये नूनं मत्स्यचिन्हं सकंपनम् ४८
तदाष्टदिन मध्ये हि जायते वार्धिसंभवः
जलप्लवो महा घोरो ध्रुवं जगतीनाशकः ४९

વળી તે મહા શુદિ દશમને દિવસે સૂર્યાસ્ત સમયે જો સૂર્યના મધ્યભાગમાં લાલ કાંતિવાળું તથા કંપતું મત્સ્યનું ચિન્હ જણાય તો આઠ દિવસની અંદર ખરેખર અત્યંત ભયંકર તથા જગતનો નાશ કરવાવાળી સમુદ્રની રેલ ફરી વળે.

तद्दिने पूर्वदिग्भागे यदा हि मेघमंडलम्
पीतप्रभं प्रभाते च मेघमार्गे तु दृश्यते ५०
तदा ज्वरोत्पत्ति र्ज्ञेया मनुष्येषु भुवि ध्रुवम्
विनाशश्च तथा तेषां ततो ज्ञेयो भयप्रदः ५१

માહ શુદિ દશમને દિવસે જો આકાશમાં પૂર્વ દિશામાં પ્રભાતે પીળી કાંતિવાળું વાદળાનું મંડળ દેખાય તો આ પૃથ્વી ઉપર માણસોમાં ખરેખર તાવની ઉત્પત્તિ થાય અને તેથી તે માણસોનો ભયંકર વિનાશ થાય. ૫૦, ૫૧

तद्दिने नैऋते भागे यदा च विद्युद्दर्शनम्
तदा गर्भवती नारीध्वंसो भवति निश्चितम् ५२

તે દિવસે જો નૈઋત ખુણામાં વિજળી દેખાય તો ખરેખર ગર્ભવતી સ્રીઓનો મરો થાય. ૫૨

Aho ! Shrutgyanam

माघ शुक्ल दशम्यां च संध्याकाले यदा भवेत्,
मृत्युदो भूरि गाढ श्च विद्युत्पातो जनोपरि ५३
तदा वन्हिभवोत्पातो भवति जनभीतिदः
तद्देशे ह्यथवा तस्मिन् नगरे निश्चितं निशि. ५४

વળી માહ શુદિ દશમને દિવસે સંધ્યાકાળે જો મૃત્યુકારક તથા અત્યંત તીવ્ર એવો વિદ્યુત્પાત માણસ ઉપર થાય તો તે રાત્રીએ ખરેખર તે દેશમાં અથવા તે નગરમાં લોકોને ભય આપનારો અગ્નિનો ઉપદ્રવ થાય. ૫૩, ૫૪

माघ शुक्ल स्यैकादश्यां भौमवारो यदा भवेत्,
विद्युतां दर्शनं चैव निशीथे यदि जायते ५५
तदा ज्येष्ठस्य शुक्ले हि पक्षे वृष्टि र्न संशयः
धान्यं तृणं तथा भूरि जायते प्राणिहर्षदम्. ५६

મહા શુદિ અગીયારશને દિવસે જો ભોમવાર હોય તથા મધ્યરાત્રીએ વિજળી ચમકે તો ખરેખર જેઠ મહિનાના અજવાળીયામાં વરસાદ થાય અને પ્રાણીઓને હર્ષ પમાડનારૂં ધાન્ય તથા ઘાસ પણ પુષ્કળ નીપજે. ૫૫, ૫૬

तद्दिने रविवार श्चेत्तथा मेघस्य डंबरः
पूर्वं दिशि च मध्यान्हे सजलः श्यामवर्णकः ५७
तदा हि फाल्गुने मासे वृष्टि रतीव जायते,
षट् मासावधि चैव ततो वृष्टे रसंभवः ५८

Aho ! Shrutgyanam

મહા શુદિ અગીયારસે જો મધ્યાન્હકાળે પૂર્વ દિશામાં પાણીથી ભરેલો મેઘનો શ્યામરંગવાળો ઘટાટોપ થાય તો ખરેખર ફાગણ મહિનામાં ઘણોજ વરસાદ થાય, પણ તે પછી છ મહિના સુધી વરસાદનો સંભવ ન રખાય. ૫૭, ૫૮

द्वादश्यां माघ शुक्लस्य शनिवारो यदा भवेत्,
तदा तैलादि वस्तुनां मूल्यवृद्धिर्भवेद् ध्रुवम्. ५९.

મહા શુદિ બારસને દિવસે શનિવાર હોય તો તેલ વિગેરે વસ્તુઓ મોંઘી થાય. ૫૯.

तद्दिने धूमकेतु श्च दक्षिणे निशिथेंबरे,
दृश्यते हि तदा नूनं राजमृत्यु नं संशयः ६०

મહા શુદિ બારસને દિવસે મધ્યરાત્રીએ દક્ષિણ દિશામાં જો પુછડીયો તારો દેખાય તો જરૂર રાજાનું મૃત્યુ થાય. ૬૦

तद्दिने रविवार श्चेन्नभश्च निर्मलं भवेत्,
तीव्रः सूर्यस्तथा चैव शीत वायोरसंभवः ६१
तदा चैत्रे मधौ चैव महामारी प्रजायते
वमन रेच संयुक्ता तूर्ण मृत्युप्रदा भुवि. ६२

માહ શુદિ બારસને દિવસે જો રવિવાર હોય, આકાશ નિર્મળું દેખાતું હોય, સૂર્ય આકરો તાપ આપી રહ્યો હોય, અને ઠંડા પવનનો સાવ અભાવ હોય તો ચૈત્ર અને વૈશાક માસમાં ઝાડા અને ઉલટી કરાવનારી—તરતજ પ્રાણ હરનારી મહામારી પૃથ્વીમાં ફેલાય. ૬૧ ૬૨

Aho ! Shrutgyanam

माघ शुक्ल त्रयोदश्या मीशाने यदि विद्युतां
दर्शनं जायते तस्यां तदा वृष्टि नं वार्षिका. ६३

મહા શુદિ તેરશે ઇશાન દિશામાં રાત્રીએ વિજળીના ચમત્કાર થાય તો તે વરસે વૃષ્ટિ ન થાય. ૬૩

तद्दिने निशिथे चंद्रो यदा रक्तप्रभान्वितः
तदाषाढे रुधिरस्य वृष्टि र्भवति निश्चितम्. ६४

મહા શુદિ તેરસને દિવસે મધ્યરાત્રીએ જો ચંદ્ર લાલ કાંતિવાળો દેખાય તો અસાડ મહિનામાં ખરેખર લોહીનો વરસાદ થાય. ૬૪

तद्दिने चंडरश्मि श्चेद्यदा मेघैः परिवृत्तः
नीलवर्णैः प्रभाते च घटिका द्वितीयावधि ६५
तदा नूनमनावृष्टि र्जायते कार्त्तिकावधि,
ज्योतिश्चक्र इति प्रोक्तं श्री हरिभद्र सूरिणा ६६

માહ શુદિ તેરસને દિને પ્રભાતમાં બે ઘડી સુધી સૂર્ય જો લીલા રંગનાં વાદળાંથી વિંટળાયેલો હોય તો ખરેખર છેક કાર્ત્તિક મહિના સુધી વરસાદ ન થાય; એ પ્રમાણે શ્રી હરિભદ્રસૂરિજી મહારાજે પોતાના જ્યોતિષ્ચક્ર નામના ગ્રંથમાં કહેલું છે.

माघ शुक्ल चतुर्दश्यां संध्याकाले भवेद्यदि,
उल्कापातः प्रतीच्यां चेत्तदा नाशोऽवनिभुजां ६७

Aho ! Shrutgyanam

માહ શુદિ ચૌદશને દિવસે સંધ્યાકાળે પશ્ચિમ દિશામાં ઉલ્કાપાત થાય તો રાજાઓનો નાશ થાય. ૬૭

न माघे पतितं सीतं ज्येष्ठे मूलं न वृष्टिकृत्,
नार्द्रायां पतिता वृष्टि दुंष्टकालस्तदा भवेत्. ६८

જો માહ મહિનામાં ટાઢ ન પડે અને જેઠ શુદિ પડવાને દિને મૂલ નક્ષત્ર ન વરસે, તેમજ આર્દ્રા નક્ષત્ર કોરૂં જાય તો દુષ્કાળ પડે. ૬૮

पंचार्काः पंच भौमाश्च पंच सूर्यसुतास्तथा,
एक मासे यदायाता स्तदा दुर्भिक्ष संभवः ६९

એક જ મહિનામાં પાંચ રવિવાર પાંચ મંગળવાર તથા પાંચ શનિવાર આવે તો પણ દુકાળ પડે. ૬૯

सर्वेषु चैव मासेषु रुक्षवृद्धिः सुभिक्षकृत्,
माघस्य प्रतिपच्चैव सवाता मेघवर्जिता. ७०

સઘલા મહિનામાં નક્ષત્રની વૃદ્ધિ થાય તો સુકાળ થાય અને માહ મહિનાનો પડવો વાયુ સહિત હોય તો વરસાદ ન થાય ૭૦

द्वितीया मेघ संपूर्णा माघकृष्णे यदा भवेत्,
सविद्यु जायते तत्र धान्यमूल्यं चतुर्गुणं ७१

મહા વદિ બીજને દિવસે વાદળાં અને વિજળી હોય તો ત્યાં ધાન્યનું મૂલ્ય ચારગણું થાય. ૭૧

Aho ! Shrutgyanam

तृतीया अभ्रसंयुक्ता निर्जला गर्जता यदा,
गोधूमांस्तत्र गृह्णीयाद्यवांश्चैव विशेषतः ७२

જો માહ માસની અંધારીયા પક્ષની ત્રીજ વાદળાંવાળી હોય અને વૃષ્ટિવિના ગર્જના થાય તો ઘઉંનો સંઘરો કરી રાખવો તેમજ જવનો તો ખાસ કરીને સંઘરો રાખવો ૭૨

चतुर्थी मेघसंयुक्ता बिंदुभिर्जलसंभवैः
नालि फेर फलानीह महर्घ्याणि भवंति हि. ७३

માહ વદિ ચોથ વાદળાંવાળી હોય અને પાણીનાં ટીપાં પડે તો અહીં નાળીયેરનાં ફળ ખરેખર બહુજ મોંઘાં થાય. ૭૩

पंचमी मेघसंयुक्ता यदा बिंदु विवर्जता,
उदग्र वायु संयुक्ता भाद्रपदे न वर्षति. ७४

મહા વદિ પાંચમને દિવસે ખાલી વાદળાંજ થાય, પાણી ન પડે અને અત્યંત પ્રચંડ પવન ફુંકાય તો ભાદરવો મહિનો સૂકો નીવડે. ૭૪

षष्ठी सबिंदुका ज्ञेया निरभ्रा निर्मला दिशः
कार्पास संग्रहे तत्र लाभो भवति पुष्कलः ७५

મહા વદિ છઠે જો થોડાં ટીપાં પડે અને દિશાઓ વાદળાં વિનાની ચોખ્ખી હોય તો કપાસનો સંઘરો કરવો. કેમકે તેથી ઘણો લાભ થાય. ૭૫

Aho ! Shrutgyanam

सप्तमी सोमवारेण संयुक्ता यदि जायते
तदा वृष्टि र्महाधारा चतुर्मासे भवेध्ध्रुवम् ७६

માહ વદિ સાતેમ ને સોમવાર હોય તો ચોમાસામાં અત્યંત ધારાવાળી મેઘવૃષ્ટિ થાય. ૭૬

अष्टम्यां यदि मार्तंडो भवति मेघवेष्टितः
न वर्षति तदार्द्रायां श्रावणांते तथैव च ७७

મહાવદિ આઠમના દિવસે સૂર્ય વાદળાંથી વીંટળાયેલો હોય તો આર્દ્રા નક્ષત્રમાં તથા શ્રાવણના અંતે પણ વરસાદ ન થાય. ૭૭

नवम्यां हि निशानाथो निशीथे यदि नीलभः
नाषाढे सकले वृष्टि र्लोके धान्यमहर्घ्यता ७८

મહા વદિ નવમને દિવસે મધ્યરાત્રીયે ચંદ્ર જો લીલી કાંતિવાળો દેખાય તો આખો અસાડ માસ ખાલી જાય અને દુનીયાભરમાં ધાન્ય ઘણું મોંઘું થાય. ૭૮

माघस्य कृष्णपक्षे तु सप्तम्यादि दिनत्रये
रवावस्ते यदा वृष्टि र्भुरिधान्यं प्रजायते ७९

મહા મહિનાના કૃષ્ણપક્ષમાં સાતમ, આઠમ અને નોમ એ ત્રણ દિવસોમાં જો સૂર્યાસ્ત સમયે વરસાદ થાય તો ઘણું ધાન્ય પાકે. ૭૯

Aho ! Shrutgyanam

दशम्यां कृष्णपक्षे तु माघमासे प्रवर्षति
तदा द्विदल धान्यस्य मूल्यवृद्धिः प्रजायते ८०

માહ મહિનાના કૃષ્ણપક્ષની દશમીને દિવસે જો વરસાદ થાય તો કઠોળના ભાવ ઘણા ઉંચા બોલાય. ૮૦

दशम्यां स्वातियोगे यदि पतति हिमं माघ मासेंधकारो
वातो वा चंडवेगः सजल जलघनो गर्जते वाप्यजस्त्रम्
विद्युन्मालाकुलं वा तदपि हि च भवेन्नष्ट चंद्रार्कतारं
विज्ञेया प्रावृडेषा मुदितजनपदैः सर्वशस्यै रुपेता. ८१

માઘ માસના કૃષ્ણપક્ષની દશમીએ જો સ્વાતિ નક્ષત્રનો યોગ હોય તથા હિમ પડે, અંધકાર થાય, અત્યંત વેગવાળો વાયુ વહે, જળ ભરેલાં વાદળાં હંમેશાં ગર્જના કરે, વિજળી ચમકે, સૂર્ય, ચંદ્ર અને તારા દેખાતા બંધ થાય તો હર્ષિત થયેલા લોકોએ સર્વ પ્રકારના ધાન્યને ઉત્પન્ન કરનારો વરસાદ થશે એમ જાણી લેવું. ૮૧

माघस्य नवमी कृष्णा दशम्येकादशी तथा
सवाता विद्युता युक्ता शस्यनाशप्रदा मता ८२

માઘ માસની કૃષ્ણપક્ષની નોમ દશમ તથા અગીયારશ જો વાયુ તથા વિજળીએ સહિત હોય તો તેને ધાન્યનો નાશ કરનારી લેખવી. ૮૨

Aho ! Shrutgyanam

माघस्य द्वादशी कृष्णा शनिवारेण संयुता
समेघा ज्वरदा ज्ञेया प्राणी संहारकारिणी ८३

માઘ માસની કૃષ્ણપક્ષની બારસ જો શનિવારી તથા વાદળાંવાળી હોય તો તેને તાવ આણનારી તથા પ્રાણીઓનો સંહાર કરનારી જાણવી. ८३

कृष्णपक्ष्या सदा ज्ञेया माघमास त्रयोदशी
सेन्द्रचापा सुवृष्टिदा ज्येष्ठमासे च निश्चितम् ८४

માઘ માસની કૃષ્ણપક્ષની ઇંદ્રધનુષ્યવાળી તેરસ, જેઠ મહિનામાં ખરેખર ઉત્તમ વૃષ્ટિ આણનારી જાણવી. ८४

चतुर्दशी कृष्णपक्ष्या माघमासस्तथा मता
रविवारेण संयुक्ता महामारीप्रदा सदा ८५

માઘ માસની કૃષ્ણપક્ષની ચાદશ જો રવિવારી હોય તો તેને મહામારી પેદા કરનારી માનવી. ८५

माघस्य चोत्तमावास्या अभ्रछन्ना यदा भवेत्
हैमवातेन संयुक्ता गोधूमादि प्रणाशिनी ८६

માઘ માસની અમાવસ્યા જો વાદળાંવાળી તથા ઠંડા વાયુવાળી હોય તો તે ઘઉં વિગેરે વસ્તુઓનો વિનાશ કરે. ८६

फागण मास.

फाल्गुनेऽस्तमिते शुक्रे दुर्भिक्षं कथितं जिनैः
षण्मासावधि प्राणिभयदं दुःखगर्भितम् १

Aho ! Shrutgyanam

જો ફાગણુ મહિનામાં શુક્રનો અસ્ત થાય તો છ મહિના સુધી પ્રાણીઓને ભય આપનારો દુઃખગર્ભિત દુકાળ પડે એમ શ્રી જિનેશ્વર પ્રભુએ કહેલું છે. ૧

फाल्गुने सप्तमी चैव अष्टमी नवमी तथा
एकादशी च शुक्ला स्यात् कृतिका रुक्षसंयुता २
भाद्रपदे त्वमावास्या द्रोणमेघं प्रवर्षति
ज्योतिश्चक्र इति प्रोक्तं श्री हरिभद्र सूरिणा. ३

ફાગણુ મહિનાની શુકલપક્ષની સાતમ, આઠમ, નોમ અને અગીયારશ જો કૃતિકા નક્ષત્રવાળી હોય તો ભાદરવા માસની અમાસે એક દ્રોણુપ્રમાણુ મેઘ વરસે, એમ શ્રી હરિભદ્રસૂરિજી મહારાજે પોતાના જ્યોતિશ્ચક્ર નામના ગ્રંથમાં કહ્યું છે. ૨, ૩

फाल्गुने शुक्ल सप्तम्यां पूर्णमास्यां तथैव च
निर्वाता गगने मेघा ज्येष्ठे हि वृष्टिदा मताः ४

ફાગણુ શુદિ સાતમે તથા પુનમે આકાશમાં વાયુવિનાનાં બાદળાં થાય તો તે જેઠ મહિનામાં જરૂર વરસાદ લાવે. ૪

फाल्गुनस्य शुक्लाष्टम्यां यदा विद्युद्धि नैऋते
तदाषाढ शुक्ले पक्षे नैव वर्षा भवेद् ध्रुवम् ५

ફાગણ માસની શુકલ અષ્ટમીએ નૈઋત ખુણામાં વિજળી થાય તો અષાઢ મહિનાના શુકલપક્ષમાં ખરેખર બિલકુલ વરસાદ ન થાય ૫

Aho ! Shrutgyanam

फाल्गुनस्य च मासे च वर्षते नवमी दीने
सुभिक्षं च समादेश्यं शस्यनिष्पत्तिरेव च ६

ફાગણુ માસની શુક્લ નવમને દિવસે વરસાદ વરસે તો સુકાળ થાય અને ધાન્ય નીપજે. ૬

चैत्र मास.

चैत्र मासस्य संक्रांतौ यदा वर्षति वारिदः
विचित्रं जायते शस्यं वैशाख ज्येष्ठयो स्तदा १

ચૈત્ર મહિનાની સંક્રાંતે વરસાદ વરસે તો વિચિત્ર પ્રકારનું ધાન્ય પાકે, અને વૈશાક તથા જેઠ માસની સંક્રાતિએ વરસાદ વરસે તો તેજ પ્રમાણે ધાન્ય નીપજે. ૧

चैत्रे वा श्रावणे वापि पंचार्का यदि चागताः
दुर्भिक्षं हि तदा ज्ञेयं कथितं पूर्वसूरिभिः २

ચૈત્ર અથવા શ્રાવણુ મહિનામાં જો પાંચ રવિવાર આવે તો ખરેખર દુકાળ જાણુવો એમ પૂર્વાચાર્યોએ કહી રાખ્યું છે.૨

चैत्रस्य शुकलसप्तम्यां मेघच्छन्नं यदा नभः
निर्मला वा दिशः सर्वा दृश्यन्ते वायुना सह ३
गोधूमांस्तत्र गृह्णीयान् महर्घ्यानपि बुद्धिमान्
संप्राप्ते श्रावणे मासि लाभो हि त्रिगुणो भवेत् ४

Aho ! Shrutgyanam

ચૈત્ર મહિનાની શુકલ સાતમને દિવસે જો આકાશ વાદળાંથી છવાયેલું હોય અથવા સર્વ દિશાઓ વાયુસહિત નિર્મળ દેખાય તો બુદ્ધિમાન માણસે મોંઘા એવા પણ ઘઉં ગ્રહણ કરવા, કારણકે શ્રાવણ મહિનામાં ત્રણ ગણો લાભ થાય. ૩, ૪

द्वितीया दिवसे प्राप्ते चैत्रे वायुश्च सर्वतः
भवेयुर्यदि मेघा न वृष्टि र्भाद्रपदं ध्रुवम् ५

ચૈત્ર મહિનાની બીજને દિવસે જો સર્વ બાજુએથી વાયુ હોય અને વાદળાં ન થતાં હોય તો ખરેખર ભાદરવા માસમાં વરસાદ થાય. ૫

तृतीया अभ्रसंयुक्ता निर्जला गर्जते यदा,
गोधूमां स्तत्रगृह्णीयात् यवांश्चैव विशेषतः ६

ચૈત્ર મહિનાની ત્રીજ જો જળરહિત વાદળાંવાળી હોય અને ગર્જના થાય તો ઘઉંનો અને જવનો ખાસ કરીને સંઘરો કરવો. ૬

तृतीये दिवसे प्राप्ते उत्तरो यदि मारुतः
न च मेघाः प्रदृश्यंते कार्तिके वृष्टिमादिशेत् ७

ચૈત્ર શુદિ ત્રીજને દિવસે ઉત્તર દિશામાં વાયુ હોય અને વાદળાં ન દેખાય તો કારતક મહિનામાં વરસાદ થાય. ૭

चतुर्थे दिवसे प्राप्ते मेघजालं प्रदृश्यते
दुर्भिक्षं जायते घोर मनावृष्टया न संशयः ८

Aho ! Shrutgyanam

ચૈત્ર શુદ્દિ ચોથને દિવસે વાદળાંને સમુહ દેખાય તો વરસાદવગરને ભયંકર દુકાળ પડે તેમાં શક નથી. ૮

दिनद्वयं यदा वाति वायु दक्षिण पश्चिमः
तदा न जायते धान्यं दुर्भिक्षं चात्र जायते ९

ચૈત્ર શુદ ચોથથી માંડીને બે દિવસ સુધી દક્ષિણ અને પશ્ચિમ દિશામાં વાયુ વાય તો ધાન્ય ન થાય અને દુકાળ પડે.

तृतीया पंच नवम्यां वायुः पूर्वोत्तरो यदि
सर्वशस्यानि जायंते प्रजाश्च सुखिनो ध्रुवम् १०

ચૈત્ર શુદ ત્રીજ પાંચમ અને નોમને દિવસે જો પૂર્વ અને ઉત્તર દિશા વચ્ચેને વાયુ વાય તો સર્વ પ્રકારનાં ધાન્ય થાય અને પ્રજા પણ ખરેખર સુખમાં રહે. ૧૦

चैत्र मासस्य पंचम्यां शुक्लपक्षे विलोक्यते
अभ्रच्छन्नं नभः सर्वं विद्युद् गर्जनसंकुलम् ११

गोधूमानत्र गृह्णीयान्महर्घ्यानपि बुद्धिमान्
श्रावणे विक्रयेत्तांश्च लाभो हि त्रिगुणो भवेत् १२

ચૈત્ર મહિનાના શુકલપક્ષની પાંચમને દિવસે જો આખું આકાશ વાદળાંથી છવાઇ જાય, વિજળી અને ગર્જનાઓ થાય તો બુદ્ધિમાન માણસે મોંઘા એવા ઘઉંને પણ સંઘરો કરવો, કારણ કે શ્રાવણ મહિનામાં તે વેચવાથી ત્રણગણો લાભ થાય.

Aho ! Shrutgyanam

चैत्रमासस्य दिवसे शुक्ले च पंचमी दिने
सप्तम्यां च त्रयोदश्यां यदा मेघः प्रवर्षति १३
तारकापतनं चैव गर्जनं विद्युता सह
वर्षान्तो हि तदा नूनं नात्र कार्या विचारणा १४

ચૈત્ર માસના શુકલપક્ષની પાંચમે, સાતમે તથા તેરસે જો વરસાદ વરસે, તારા પડે અને વિજળી સાથે ગર્જના થાય તો ખરેખર વર્ષાઋતુનો અંત આવ્યો જાણવો, તેમાં બીજો કોઈ જાતનો વિચાર ન કરવો. ૧૩, ૧૪

मूलपादौ यमं चांते चैत्रे कृष्णे निरीक्षयेत्
यावद्दक्षिणदिग्वायु स्तावत् वृष्टि प्रदायकः १५

ચૈત્ર માસના કૃષ્ણપક્ષમાં મૂલ નક્ષત્રથી માંડીને ભરણી નક્ષત્ર સુધીમાં દક્ષિણ દિશા તરફ જેટલો વાયુ હોય તેટલો વૃષ્ટિને દેનારો જાણવો. ૧૫

चैत्रस्य कृष्णपंचमी सप्तमी नवमीषु च
दुर्भिक्षं जायते चेच्च पतंति जलबिंदवः १६

ચૈત્ર માસના કૃષ્ણપક્ષની પાંચમે, સાતમે અને નવમે જો જળનાં બિંદુ પડે તો દુકાળ થાય. ૧૬

पंचमी सह रोहिण्या सप्तमी चार्द्रसंयुता
नवमी चैव पुष्येण तदा रसमहर्घ्यता १७

Aho ! Shrutgyanam

ચૈત્ર માસના શુકલપક્ષની પાંચમ જો રોહિણીવાળી હોય, સાતમ જો આર્દ્રા નક્ષત્રવાળી હોય અને નવમ જો પુષ્ય નક્ષત્ર વાળી હોય તો રસ વસ્તુઓની કિમતમાં ઘણો વધારો થાય. ૧૭

स्वात्या सह पूर्णमासी विद्युन्मेघसमन्विता
तदा वृष्टि र्न विज्ञेया कार्त्तिकावधि पंडितैः ॥ १८

ચૈત્ર માસની પૂનમ જો સ્વાતિ નક્ષત્રવાળી હોય અને વિજળી તથા મેઘ દેખાય તો પંડિતોએ એટલું અવધારી રાખવું કે છેક કારતક મહિના સુધી વૃષ્ટિ નહીં થાય. ૧૮

चैत्रस्य शुक्लपक्षे तु त्रयोदश्यां तथैव च
धूमिका जायते चैव मेघस्तत्र न वर्षति ॥ १९

વળી ચૈત્ર માસના શુકલપક્ષમાં તેરસને દિવસે જો ધુમરી થાય તો ત્યાં વરસાદ ન થાય ૧૯

वैशाख मास

वैशाखे गर्जितं भूरि सलिलं पवनो घनो
उष्णो ज्येष्ठो विशिष्टः स्यात् कथितं मुनिसत्तमैः ॥ १

વૈશાક મહિનામાં ખુબ ગર્જના થાય, ખુબ પાણી અને પવન હોય તેમજ જેઠ મહિનો સારી પેઠે તપ્યો હોય તો તે સારાં જાણવાં એમ ઉત્તમ મુનિઓએ કહેલું છે. ૧

वैशाखे शुक्लपंचम्यां अभ्रच्छन्नं यदा नभः
गर्जते वर्षते चापि पूर्ववातो भवेद् यदा ॥ २

Aho ! Shrutgyanam

उदयास्त समयेऽर्कस्य जायते भुवि चेद् ध्रुवम्
संग्रहेत् सर्वं शस्यानि प्रचूराणि प्रयत्नतः ३
मासे भाद्रपदेऽत्यंतं महर्घ्याणि भवंति हि,
ज्ञातमेवंहि विद्वद्भिः ज्योति र्विद्याविशारदैः ४

વૈશાક મહિનામા શુકલ પાંચમને દિવસે સૂર્યોદય તથા સૂર્યાસ્ત સમયે જો આકાશ વાદળાંથી છવાયેલું હોય, ગર્જના તથા વૃષ્ટિ થતાં હોય અને પૂર્વદિશાનો વાયુ વહેતો હોય તો પ્રયત્નપૂર્વક ઘણાં ધાન્યો સંઘરી મૂકવાં. કારણ કે ભાદરવા મહિનામાં તે ઘણાં મોંઘાં થવાનાં. એ પ્રમાણે જ્યોતિષવિદ્યામાં વિચક્ષણ લેખાતા વિદ્વાનોએ પ્રબોધ્યું છે. ૨, ૩, ૪

वैशाखे तु प्रतिपदि मेघा वा विद्युतो यदा
सर्वं धान्यस्य निष्पत्ति र्भवति हि सुखप्रदा ५

વૈશાક શુદિ પડવાને દિવસે વાદળાં તથા વિજળી થાય તો સર્વ પ્રકારનાં ધાન્ય નીપજે અને સુખકારક પણ નીવડે. ૫

तृतीया शुक्लपक्षस्य वैशाखे गुरुतोऽन्विता,
रोहिणी रुक्ष संयुक्ता भूरि धान्यप्रदा मता ६

વૈશાક માસના શુકલપક્ષની ત્રીજ જો ગુરૂવારી અને રોહિણી નક્ષત્રવાળી હોય તો તે ઘણાં ધાન્યને આપનારી થાય.

वैशाकशुक्ल द्वितीया यदा हि गर्जनान्विता,
संध्याकाले मध्यान्हे वा तदा दुर्भिक्षसंभवः ७

Aho ! Shrutgyanam

વૈશાક માસના શુકલપક્ષની બીજે સંધ્યાકાળે અથવા મધ્યાન્હકાળે જો ખરેખર ગર્જના થાય તો દુકાળનો સંભવ જાણવો.

वैशाखशुक्ल चतुर्थ्यां सूर्योदये भवेद्यदि
इशानी दिशामाश्रित्य चंडवायु भयप्रदः ८

महामारी समुत्पातो भवति जनविनाशकः
ज्येष्ठमासि तदा नूनं युद्धं चैव महीभूजाम् ९

વૈશાક મહિનાની શુકલ ચતુર્થીને દિવસે સુર્યોદય સમયે જો ઈશાન દિશામાં ભયંકર પ્રચંડ વાયુ દેખાય તો જેઠ મહિનામાં, માણસોનો મ્હોટો નાશ કરનારો મરકીનો ઉત્પાત થાય અને રાજાઓ વચ્ચે પણ યુદ્ધ જામે. ૮, ૯

पंचमी रविवारा चेद् वैशाखे शुक्लपक्षका
तदातिवृष्टितो ज्येष्ठे जलप्लवै जगत्क्षयः १०

વૈશાક મહિનાની શુકલપક્ષની પાંચમ જો રવિવારી હોય તો જેઠ મહિનામાં અતિવૃષ્ટિથી તેમજ પાણીની રેલશી જગતનો ઘાણ નીકળી જાય ૧૦

षष्ठी च शनिवारा चेन् मेघच्छन्नो नभोमणिः
उदयकाले संजातो धूलिवृष्टिश्च पूर्वगा ११
तदाषाढे ध्रुवं वृष्टिः करकाणा संजायते
नदी सरोह्रदा श्चैव संपूर्णाः सलिलै ध्रुवम् १२

Aho ! Shrutgyanam

વૈશાક મહિનાની શુકલપક્ષની છઠ જો શનિવારી હોય અને ઉદય વખતે સૂર્ય વાદળાંથી છવાયેલો હોય તેમજ પૂર્વ દિશામાં ધુળની વૃષ્ટિ થાય તો આષાઢ માસમાં ખરેખર કરાઓ પડે અને નદી તળાવ તથા સરોવરો ખરેખર પાણીથી છલકાઇ જાય. ૧૧, ૧૨

वैशाक शुक्लपक्षस्य सप्तम्यां च निशापतिः
सूर्यास्तसमये नूनं रक्तैराच्छादितोऽभ्रकैः ॥ १३
तदा बालविनाशः स्यादाषाढे समुपद्रवैः
तद्दिने भोमवार श्चेत्तदा नाशो हि भूभुजाम ॥ १४

વઇશાક માસના શુકલપક્ષની સાતમને દિવસે સૂર્યાસ્ત સમયે ચંદ્ર જો ખરેખર લાલ વાદળાંથી આચ્છાદિત થયેલો હોય તો અષાઢ માસમાં ઉપદ્રવને લીધે બાળકોનો મરો થાય અને તે દિવસે જો ભોમવાર હોય તો ખરેખર રાજાઓનો પણ વિનાશ થાય. ૧૩, ૧૪

अष्टम्यां तस्य मासस्य सोमवारो यदा भवेत्
निशीथे तारकाणां च पतनं पूर्वदिशि यदि ॥ १५
तदा हि छत्रभंगः स्यात्तथा मार्या उपद्रवः
अनावृष्टिश्च लोकानां पशुनां च विनाशिनी ॥ १६

વઇશાક મહિનાના શુકલ પક્ષની આઠમને દિવસે જો સોમવાર હોય અને મધ્યરાત્રિયે પૂર્વ દિશામા તારાઓ ખરે

Aho ! Shrutgyanam

તો ખરેખર છત્રભંગ થાય, મરકીનો ઉપદ્રવ થાય, અને લોકોનો તથા પશુઓનો સંહાર કરનારી અનાવૃષ્ટિ થાય. ૧૫, ૧૬

वैशाक शुक्ल नवमी भरणी संयुता यदि
मेघैश्च्छन्ना सगर्जा च विद्युद्भिश्च समन्विता १७
तदा ज्येष्ठे भवेन्नूनं वृष्टि र्भाद्रपदे तथा
सर्व धान्यस्य निष्पत्तिः सर्वलोकाः सुखान्विताः १८

વઈશાક માસના શુક્લપક્ષની નોમ જો ભરણી નક્ષત્રવાળી હોય, વાદળાં ગર્જના તથા વિજળીએ કરીને સંયુક્ત હોય તો જેઠ તથા ભાદરવામાં ખરેખર વૃષ્ટિ થાય, ધાન્યો સારીરીતે પાકે અને લોકો સુખમાં રહે. ૧૭, ૧૮

दशम्यां तस्य मासस्य सूर्यास्तसमये यदि
शुक्लपक्षे भवेदिंद्रचापस्य दर्शनं ध्रुवम् १९
तदा ज्येष्ठे न वृष्टिः स्यादाषाढेऽपि तथैव च
श्रावणे भाद्रमासे च ह्यतिवृष्टि र्भवेत्किल २०

તે વઈશાક માસના શુક્લપક્ષની દશમીને દિવસે સૂર્યાસ્ત સમયે જો ખરેખર; ઇંદ્રધનુષ્ય દેખાય તો જેઠ અને અસાડમાં પણ વરસાદ ન થાય; પણ શ્રાવણ તથા ભાદરવામાં પુષ્કળ વરસાદ થાય. ૧૯, ૨૦

शुक्लपक्षस्यैकादश्यां तस्मिन्मासि यदांबरम्
आच्छदितं हि मध्यान्हे श्यामवर्णैः किलाभ्रकैः २१

Aho ! Shrutgyanam

तदा वृष्टि र्भवेन्नूनं कार्तिके व्याधिदा भुवि
चतुर्मास्यां तु वर्षाया बिंदोरपि न संभवः ॥ २२

વઇશાક માસના શુકલપક્ષની અગીયારશને દિવસે બપોરે આકાશ જો શ્યામ રંગનાં વાદળાથી છવાઇ જાય તો પૃથ્વીમાં રોગચાળો પેદા કરનારો વરસાદ કારતક મહિનામાં થાય અને ચોમાસામાં વરસાદનું ટીપું પણ ન પડે. ૨૧, ૨૨

तस्य मासस्य द्वादश्यां संध्याकाले भवेद्यदि
विद्युतां दर्शनं प्राची दिशि रक्त प्रभान्वितम् ॥ २३
तदाषाढे भवेन्नूनं वह्निजोऽत्र ह्युपद्रवः
धनधान्यहरो मह्यां तृणानां चैव नाशकः ॥ २४

વઇશાક માસના શુકલપક્ષની બારશે સંધ્યાકાળે પૂર્વ-દિશામાં લાલ કાંતિવાળી વિજળીનાં દર્શન થાય તો અસાડ મહિનામાં ખરેખર આ પૃથ્વી ઉપર ધનધાન્યનો ધ્વંસ કરનારો તથા ઘાસનો નાશ કરનારો અગ્નિથી ઉત્પન્ન થનારો ઉપદ્રવ થાય. ૨૩, ૨૪

त्रयोदशी तन्मासस्य निर्मला च भवेद्यदि
गुरुवासर संयुक्ता ज्येष्ठे वृष्टिस्तदा ध्रुवम् ॥ २५

વઇશાક માસની શુકલ પક્ષની તેરસ જો ગુરૂવારી હોય અને નિર્મલ હોય તો જેઠ માસમાં ખરેખર વરસાદ થાય. ૨૫

Aho ! Shrutgyanam

चतुर्दशी च संयुक्ता रविवारेण वृष्टिदा
चतुर्मास्यां हि धान्यानां तृणानां च मता मदा २६

તે વઈશાક માસના શુક્લપક્ષની ચોદશ જો રવિવારી હોય તો ચોમાસામાં સારો વરસાદ થાય અને ધાન્ય તથા ઘાસ નીપજે એમ પંડિતો માને છે. ૨૬

पूर्णमासी सदा ज्ञाता वैशाखस्य शनेर्युता
पशुनाशकारी ज्योति र्विद्यासार विशारदैः २७

વૈશાક મહિનાની પુનમ જો શનિવારી હોય તો પશુઓનો નાશ થાય એમ જ્યોતિષ વિદ્યાના કુશળ વિદ્વાનોનું કહેવું છે. ૨૭

वैशाख कृष्णपक्षस्य पंचमी मेघसंयुता
राज्यभंगकरा ज्ञाता सोमवासर संयुता २८

વૈશાક મહિનાની કૃષ્ણપક્ષની પાંચમે જો સોમવાર હોય અને વાદળાં થાય તો રાજ્યનો ભંગ કરનારી જાણવી. ૨૮

नवमी दशमी चैव विद्युद्भिर्यदि संयुता
कृष्णपक्ष्या हि वैशाखे मेघच्छन्न प्रभाकरा २९
तदाषाढे कृष्णपक्षे वृष्टि र्भवति निश्चितम्
ग्रहिला इव नदीवेगा उच्छलंति जलैर्युताः ३०

વૈશાક મહિનાની કૃષ્ણપક્ષની નોમ અને દશમે વિજળી થાય, વાદળાંઓથી સૂર્ય ઢંકાઈ જાય તો અષાડ મહિનાના

Aho ! Shrutgyanam

અંધારીયામાં ખરેખર વરસાદ થાય અને નદીઓના પ્રવાહો ગાંડા માણસની જેમ પાણીથી ઉછળવા લાગે. ૨૯, ૩૦

वैशाखस्य चामावास्या मेघगर्जसमन्विता
सूर्यास्त समये नूनं शस्यनाशप्रदा मता ३१

વઇશાક માસની અમાસ સૂર્યાસ્ત સમયે મેઘના ગર્જારવ વાળી હોય તો ખરેખર તેનાથી ધાન્યનો નાશ થાય. ૩૧

जेठ मास

ज्येष्ठस्य प्रथमे पक्षे या तिथिः प्रथमा भवेत्
आयाति केन वारेण तामन्वेषय यत्नतः १

જ્યેષ્ઠ મહિનાના શુકલપક્ષમાં પડેલી તિથિ કયા વારની આવેછે તેની પ્રયત્ન પૂર્વક તપાસ કરવી. ૧

भानुना पवनो वाति कुजो व्याधिकरो मतः
राजपुत्रेण दुर्भिक्षं भवति हि न संशयः २

જેઠ શુદ પડવાને દિવસે રવિવાર હોય તો ઘણો પવન ફુંકાય, મંગળવાર હોય તો વ્યાધિ કરે અને બુધવાર હોય તો દુકાળ પડે એમા બિલકુલ શંકા નથી. ૨

गुरु भार्गव सोमानां यद्येकोऽपि हि जायते
जलेन पूरिता पृथ्वी धनधान्यं च संमतम् ३

વળી પડવાને દિવસે ગુરૂ શુક્ર કે સોમવાર હોય તો પૃથ્વી જળથી ઉભરાઇ જાય અને અને ધાન્ય પણ સારૂં પાકે. ૩

Aho ! Shrutgyanam

कदाचिद्दैवयोगेन शनिवारो यदा भवेत्
जलैर्विना प्रजानाशश्च्छत्रभंगश्च जायते ४

અને કદાચિત્ દૈવજોગે તે દિવસે શનિવાર હોય તો પાણી વિના પ્રજાનો નાશ થાય અને છત્રભંગ થાય. ૪

आर्द्रादीनि च रुक्षाणि ज्येष्ठशुक्ले निरीक्षयेत्
साभ्राणि हन्यते वृष्टिं निरभ्रे वृष्टि रुत्तमा ५

જેઠ માસના શુકલપક્ષમાં આર્દ્રા વિગેરે નક્ષત્રો જોવાં. જો તે વાદળાંવાળાં હોય તો વૃષ્ટિનો નાશ કરે અને વાદળાંવિનાનાં હોય તો ઉત્તમ વૃષ્ટિ થાય. ૫

ज्येष्ठमासस्य शुकले हि पक्षेऽत्र द्वितीया दिने
गर्जनं यदि जायेत वृष्टिर्नैव भवेद् ध्रुवम् ६

જેઠ માસના શુકલપક્ષમાં બીજને દિવસે જો ગર્જના થાય તો ખરેખર વૃષ્ટિ ન જ થાય. ૬

ज्येष्ठशुकल तृतीयाया मार्द्रा चेद्वर्षति यदा
संध्याकाले तदा नूनं दुर्भिक्षस्यात्र संभवः ७

જેઠ મહિનાના શુકલપક્ષની ત્રીજને દિવસે જો આર્દ્રા નક્ષત્ર હોય અને સંધ્યાકાળે વરસાદ થાય તો અહીં દુકાળનો સંભવ જાણવો. ૭

चित्रा स्वाति विशाखासु ज्येष्ठमासि निरभ्रता
आषाढं निर्जलं कृत्वा श्रावणे वर्षति ध्रुवम् ८

Aho ! Shrutgyanam

જેઠ માસના ચિત્રા સ્વાતિ અને વિશાખા નક્ષત્રોમાં વાદળાં થાય તો અષાઢ માસ કોરો જાય પણ શ્રાવણ માસમાં જરૂર વરસાદ થાય. ૮

पंचग्रह तारा यत्र सोमं कुर्वंति दक्षिणे
मंगले म्रियते राजा भार्गवे म्रियते प्रजा ९
बुधे रसक्षयं याति गुरुः कुर्यान्निरुदकम्
शनौ घृतक्षयं विद्यान् मासे मासे निरीक्षयेत् १०

જે માસમાં પાંચ ગ્રહના તારાઓ ચંદ્રને પોતાની દક્ષિણ તરફ રાખે છે, તેમાં મંગળ હોય તો રાજાનું મૃત્યુ થાય, શુક્ર હોય તો પ્રજાનો મરો થાય, બુધ હોય તો રસનો ક્ષય થાય, ગુરૂ હોય તો સુકામણું કરે અને શનિ હોય તો ઘીનો ક્ષય કરે; એવી રીતે દરેક માસ વિષે સમજી લેવું. ૯, ૧૦

ज्येष्ठस्य शुक्ल पंचम्यां गर्जनं श्रूयते यदि
दाक्षिणश्च यदा वायु रभ्रच्छन्नं यदा नभः ११
तिलानां संग्रहं कुर्यात्तस्मिन् काले विचक्षणः
कार्तिके विक्रयेत्तानि लाभश्च त्रिगुणो भवेत् १२

જેઠ મહિનાના શુક્લપક્ષની પાંચમને દિવસે જો ગર્જના સંભળાય, દક્ષિણ દિશાનો વાયુ વહે, આકાશ વાદળાંથી છવાયેલું હોય તો એવા સમયમાં વિચક્ષણ માણસે તલનો સંઘરો કરવો. કારણ કે કારતક માસમાં તે તલ વેચવાથી ત્રણગણો લાભ થાય.

Aho ! Shrutgyanam

ज्येष्ठस्य कृष्णपक्षे तु चंद्रोदयं निरीक्षयेत्
साभ्रेण वर्षते मेघो निरभ्रे वृष्टिहीनता ॥ १३

જેઠ માસના કૃષ્ણપક્ષમાં ચંદ્રનો ઉદય જોવો. જો તે વાદળાંવાળો હોય તો વરસાદ વરસે અને વાદળાંવગરનો હોય તો વૃષ્ટિ ન થાય. ૧૩

ज्येष्ठ शुक्लस्यैकादश्यां कृत्वा च शुभमंडलं
उच्च स्थाने तु संस्थाप्यो महद्दण्डो महाध्वजः ॥ १४
एवं कृत्वा प्रयत्नेन साधयेत्कालनिर्णयः
एको वातो यदा वाति चतुर्दिनानि चोत्तरे ॥ १५
चत्वारो वार्षिका मासा ध्रुवं वर्षति लाभदाः
धान्यतृणनिष्पत्तिश्च जायते प्राणिहर्षदा ॥ १६

જેઠ માસના શુક્લપક્ષની અગીયારસે એક ઉત્તમ મંડલ-કુંડાળું કરી, ઉંચે સ્થાને મોટા દંડવાળો એક મોટો ધ્વજ સ્થાપવો, અને તે ઉપરથી સાવચેતીપૂર્વક કાળનો નિર્ણય કરવો. હવે જો ચાર દિવસ પર્યંત ઉત્તર દિશા તરફ એકજ વાયુ વાય તો વર્ષના ચારે મહિનામાં ખરેખર લાભપ્રદ વૃષ્ટિ થાય, અને પ્રાણીમાત્રને હર્ષ પમાડનારી ધાન્ય તથા ઘાસની સારી નીપજ થાય. ૧૪, ૧૫, ૧૬.

यदि चेत्पश्चिमो वात श्चतुर्दिनानि वाति च
अनावृष्टिं विजानीयात् दुर्भिक्षं रौरवं भवेत् ॥ १७

Aho ! Shrutgyanam

તેમ કરતાં જો ચાર દિવસ સુધી પશ્ચિમ દિશા તરફનો વાયુ વાય તો અનાવૃષ્ટિ તથા ભયંકર દુકાળ થાય. ૧૭

वायव्यां च तथा प्राच्यां नैऋत्यां वाति वा सदा
आषाढे श्रावणे चैव भवति वृष्टि रुत्तमा १८

તેમ કરતાં જો વાયવ્ય, પૂર્વ અથવા નઋત્ય દિશામાં હંમેશાં વાય તો આષાઢ અને શ્રાવણ માસમાં ઉત્તમ વૃષ્ટિ થાય. ૧૮

ज्येष्ठे चेद्रोहिणी योगो निरभ्रस्त्वतिवृष्टिदः
साभ्रको धान्य निष्पत्तिदायको हि मतो बुधैः १९

જેઠ માસમાં રોહિણીનો યોગ વાદળાંવિનાનો હોય તો અતિવૃષ્ટિ થાય અને વાદળ સહિત હોય તો ધાન્યની સારી પેદાશ થાય એમ પંડિત પુરૂષો માને છે. ૧૯

ज्येष्ठे च रोहिणीयोगे यदा मेघः प्रवर्षति
सुभिक्षं जायते मह्यां तृणनिष्पत्ति रुत्तमा २०

જેઠ મહિનામાં રોહિણીનો યોગ થતાં વરસાદ થાય તો પૃથ્વીમાં સુકાળ થવાનો અને ઘાસ પણ સારી પેઠે નીપજવાનું એમ જાણી લેવું. ૨૦

रोहिणींदु समायोगे तस्मिन्मासे यदा नहि
वृष्टिर्हि मेघश्च्छन्नेऽपि कीटकोपद्रवस्तदा २१

જેઠ માસમાં રોહિણી અને ચંદ્રનો યોગ થાય, અને એ યોગમાં વાદળ છવાયેલાં રહે છતાં પણ વૃષ્ટિ ન થાય તો કીડાઓનો ઉપદ્રવ થાય. ૨૧

Aho ! Shrutgyanam

ज्येष्ठ शुक्लस्य द्वादश्यां घटिकाद्वयगते निशि
चंद्रबिंबं यदा छन्नं नीलवर्णं भयंकरः २२
अभ्रैस्तदा न ज्येष्ठे हि वृष्टिं भवति निश्चितम्
आषाढे रक्त संयुक्त मेघ वृष्टि श्च जायते २३

જેઠ શુદિ બારશને દિવસે રાત્રિએ બે ઘડી ગયા પછી ચંદ્રનું બિંબ ભયંકર કાળા વાદળથી છવાયેલું દેખાય તો ખરેખર જેઠ મહિનામાં વૃષ્ટિ ન થાય અને આષાઢ માસમાં રૂધિરવાળી વર્ષા થાય. ૨૨, ૨૩.

तद्वृष्टितो हि नाशश्च भूमिजातैर्हि कीटकैः
क्षेत्रारोपित बीजानां तृण राशेर संभवः २४

એ રૂધિરવાળી વૃષ્ટિને લીધે, ભૂમિમાંથી કીડાઓ નીકળી, ક્ષેત્રોમાં વાવેલા ધાન્યનાં બીજ ખાઇ જાય અને ઘાસ પણ ન થાવ. ૨૪

दशमी ज्येष्ठ मासस्य शनिवारेण संयुता
जलवृष्टि स्तदा न स्याज्जीवंति विरला भुवि २५

જેઠ મહિનાની દશમ શનિવારી હોય તો જળની વૃષ્ટિ ન થાય અને પૃથ્વીમાં વિરલા પ્રાણી જ જીવી શકે. ૨૫

ज्येष्ठस्य कृष्णपक्षस्य मूलं प्रवर्षते यदि
षष्ठिदिनं न वर्षेत पश्चाद् वृष्टि भवेद् ध्रुवम् २६

Aho ! Shrutgyanam

જેઠ માસના કૃષ્ણપક્ષનું મૂલ નક્ષત્ર જો વરસે તો સાઠ દિવસ સુધી વરસાદ ન થાય અને પછી જરૂર વૃષ્ટિ થાય. ૨૬

ज्येष्ठस्य पूर्णिमास्यां तु मूलंमस्त्रवते यदि
षष्ठिघस्रा न वर्षते पश्चाद् वर्षति माधवः २७

જેઠ માસની પુનમને દિવસે જો મૂલ નક્ષત્ર વરસે તો સાઠ દિવસ સુધી વૃષ્ટિ ન થાય, પણ પાછળથી વરસાદ થાય.

ज्येष्ठस्य कृष्णपक्षे च द्वरुक्षे श्रवणादिके
न वर्षते न वर्षेते वर्षेते वर्षते सदा २८

જેઠ માસના કૃષ્ણપક્ષમાં શ્રવણ અને ધનિષ્ઠા નક્ષત્ર વરસે તો વરસાદ થાય અને કોરા જાય તો વરસાદ ન થાય. ૨૮

ज्येष्ठ मासे त्वमावस्या पूर्णमास्यां मघापि वा
दिवा वा यदि वा रात्रौ मेघा गच्छंति नांबरे २९

अवृष्टिस्तु भवेत्तत्र नात्र कार्या विचारणा
चतुर्मासावधि नूनं प्राणिनां हि भयंकरा ३०

જેઠ મહિનાની અમાસને દિવસે અથવા પુનમના દિવસે મઘા નક્ષત્ર હોય અને દિવસે અથવા રાત્રીએ આકાશમાં વાદળાં ન ચડી આવે તો ખરેખર ચાર મહિના સુધી પ્રાણીઓને માટે ભયંકર એવી અવૃષ્ટિ જાણી લેવી એ વિષે જરા પણ શંકા ન રાખવી. ૨૯, ૩૦

Aho ! Shrutgyanam

આષાઢ માસ.

आषाढ मासे प्रथमे च पक्षे निरभ्रमार्तंड सुमंडले च
न चैव संगर्जति नैव वृष्टि र्मासद्वयं वर्षति नैव मेघः १

આષાઢ માસના શુકલપક્ષમાં સૂર્ય મંડળ વાદળ વગરનું હોય અને ગર્જના કે વૃષ્ટિ ન થાય તો બે મહિના સુધી વરસાદ ન જ થાય. ૧

आषाढ शुक्ल पंचम्यां मेघा वा विद्युतोऽपि वा
तदा सुवष्टि र्विज्ञेया धान्य तृणप्रदा भुवि २

આષાઢ માસના શુકલપક્ષની પાંચમને દિવસે જો વાદળાં અથવા વિજળી થાય તો પૃથ્વી ઉપર ધાન્ય અને ઘાસ ઉપજાવનારી વૃષ્ટિ થશે એમ જાણવું. ૨

आषाढ शुक्ल पंचम्यां पश्चिमः किंतु मारुतः
गर्जति वर्षते चापि शुक्रचापं च द्रश्यते ३
संग्रहेत्सर्वं धान्यानि कार्तिके हि महर्घता
बहुलाभं करोति च नान्यथा मुनिभाषितम् ४

આષાઢ માસની શુકલપક્ષની પાંચમે ગર્જના થાય, મેઘ વરસે, ઈંદ્ર ધનુષ્ય દેખાય છતાંય પશ્ચિમ દિશાનો વાયુ હોય તો સર્વ ધાન્યનો સંગ્રહ કરવો, કારણ કે કારતક મહિનામાં ઘણી મોંઘારત થવાની અને ઘણો સારો લાભ મળવાનો. એ પ્રકારનું મુનિઓનું કથન અન્યથા નથી થતું. ૩, ૪

Aho ! Shrutgyanam

आषाढे शुक्लपक्षे तु रोहिणीयोग उत्तमः
तथाभ्रविद्युद् गर्जो वा शस्यनिष्पत्तिदो मतः ५

આષાઢ માસના શુક્લપક્ષમાં રોહિણીનો યોગ સારો ગણાય. એ સમયે જો વાદળાં વિજળી અથવા ગર્જના થાય તો ધાન્યની પેદાશ થાય. ૫

न वृष्टी रोहिणीयोगे न च पूर्वोत्तराजलम्
आषाढे च यदा जातं तदा दुर्भिक्ष संभवः ६

આષાઢ માસમાં રોહિણીનો યોગ થવા છતાં વૃષ્ટિ ન થાય તેમજ પૂર્વાષાઢા અને ઉત્તરાષાઢા પણ પાણી વિનાના ખાલી જાય તો દુકાળનો સંભવ જાણવો. ૬

माघे फाल्गुने मासि चैत्र वैशाखयो स्तथा
आषाढे स्वातियोगश्च सर्वशस्यप्रदः स्मृतः ७

માહ, ફાગણ, ચૈત્ર અને વૈશાક અને આષાઢ માસમાં સ્વાતિ નક્ષત્રનો યોગ સર્વ પ્રકારનાં ધાન્યને આપનારો જણાવેલો છે. ૭

नवम्यां तिथावाषाढे शुक्लायां निर्मलो रविः
उदये चापि मध्यान्हे निरभ्रं यदि चांबरम् ८
वर्षते चतुरो मासाः सर्वधान्य फलप्रदाः
तृणा नामपि निष्पत्ति जीयते पशुतोषदाः ९

Aho ! Shrutgyanam

આષાઢ મહિનાના શુકલપક્ષની નોમને દિવસે સૂર્ય નિર્મલ હોય, સૂર્યોદય સમયે તથા બપોરે આકાશમાં વાદળ ન હોય તો ધાન્ય ઉપજાવનારો વરસાદ ચારે મહિનામાં સારી પેઠે થાય અને પશુને સંતોષ આપનારૂં ઘાસ પણ ઉપજે ૮, ૯

आषाढे चैव संक्रांतौ यदि वर्षति माधवः
व्याधि रुत्पद्यते घोरा मनुष्यपशुनाशदा १०

આષાઢ મહિનામાં સંક્રાન્તિને દિવસે વરસાદ થાય તો માણસ અને પશુ પ્રાણીનો નાશ કરનારી ભયંકર વ્યાધિ થાય.

आषाढे शुक्लपक्षेच द्वादश्यां यदि विद्युतः
प्रभाते यामीकाष्ठायां दृश्यंते नभसि ध्रुवम् ११
गर्जना च श्रवःपुट स्फोटनाभा प्रजायते
मध्यान्हावधि मेघाश्च वर्षंते जनकामदाः १२

અષાઢ માસના શુકલપક્ષમાં બારસને દિવસે પ્રભાત સમયે દક્ષિણ દિશામાં જો આકાશમાં ખરેખર વિજળી દેખાય અને કાન ફોડી નાખે એવી ગર્જના સંભળાય તો બપોર સુધીમાં લોકોના ઈચ્છિતને આપનારો વરસાદ થાય. ૧૧, ૧૨

तद्दिने यदि पूर्वायां दिशि शक्र धनुर्ध्रुवम्
द्रश्यते हि प्रभाते चेत्तदा दुर्भिक्ष संभवः १३

વળી તે દિવસે પૂર્વ દિશામાં પ્રભાતે ઇંદ્રધનુષ્ય દેખાય તો દુકાળનો સંભવ જાણવો. ૧૩

Aho ! Shrutgyanam

आषाढ शुक्लपक्षस्य त्रयोदश्यां यदांबरे
पश्चिमायां हि मेघाः स्युः पंचवर्णाः प्रभान्विताः १४
तदातत्कृष्णपक्षे हि वृष्टि र्भवति निश्चितम्
तथा पुनरपि भाद्रे पृथ्वी स्यात् सलिलान्विता १५

આષાઢ માસના શુકલપક્ષની તેરશને દિવસે આકાશમાં પશ્ચિમ દિશા તરફ કાંતિવાળાં પંચરંગી વાદળાં થાય તો તે માસના કૃષ્ણ પક્ષમાં ખરેખર વૃષ્ટિ થાય અને ફરીને ભાદરવા મહિનામાં પૃથ્વી જળમય થઇ જાય. ૧૪, ૧૫

पूर्णिमा सोमवारेण संयुताऽषाढगायदा
तदा वृष्टि नं तन्मासि विज्ञेया विबुधैः सदा १६

આષાઢ માસના શુકલપક્ષની પુનમ જો સોમવારી હોય તો પંડિતોએ એટલું સમજી લેવું કે તે માસમા વૃષ્ટિ ન થાય. ૧૬

आषाढे कृष्णपक्षे च शूक्रो ह्यस्तं प्रयाति चेत्
तदा यव गोधूमानां नाशो भवति हीमतः १७

આષાઢ મહિનાના કૃષ્ણપક્ષમાં શુકનો અસ્ત થાય તો જવ અને ઘઉં હીમને લીધે નાશ પામે. ૧૭

आषाढ कृष्णपक्षस्य द्वितीया विद्युदन्विता
सोमवारेण संयुक्ता द्विदलध्वंसदा स्मृता १८

Aho ! Shrutgyanam

આષાઢ માસના કૃષ્ણપક્ષની બીજને દિવસે સોમવાર હોય અને વિજળી થાય તો કઠોળનો નાશ કરનારી જાણવી. ૧૮

तृतीयायामाषाढस्य कृष्णपक्षे यदांबरम्
संध्याकाले न संछन्नं श्याममेघैश्चलैर्ध्रुवम् १९

तदा मारी समुत्पातो भवति विश्वनाशकः
न वरं शनिवारेण युक्तयां रविणा पुनः २०

આષાઢ માસના કૃષ્ણપક્ષની ત્રીજને દિવસે સંધ્યાકાળે, ચલાયમાન એવા શ્યામ મેઘથી વાદળ છવાયેલું ન હોય તો જગતનો વિનાશ કરનારો મરકીનો ઉપદ્રવ થવાનો, અને તે ત્રીજને દિવસે શનિવાર કે રવિવાર હોય તો પણ ઠીક નહીં. ૧૯, ૨૦

पूर्णमास्यां त्वमावास्या माषाढे यदि तारकाः
पतंति पूर्वदिग्भागे निशीथे धान्यनाशदाः २१

આષાઢ મહિનાની અમાસ કે પૂર્ણિમાએ મધ્યરાત્રિએ પૂર્વ દિશામાં તારા ખરે તો ધાન્યનો નાશ થાય. ૨૧

आषाढ कृष्णपक्षे च चतुर्थी तु शनियुता
तदा चणक धान्यस्य ध्वंसो मिहिकातो ध्रुवम् २२

આષાઢ માસના કૃષ્ણપક્ષમાં ચોથ જો શનિવારી હોય તો ખરેખર હીમને લીધે ચણાનો નાશ થાય. ૨૨

Aho ! Shrutgyanam

कृष्णपक्षे त्वाषाढस्य पंचमी वासरे यदा
संध्याकाले च पूर्वाया मिंद्रचापो यदीक्ष्यते २३
तदा तंडुलवृंदो हि संग्राह्यो वणिजैः सदा
कार्त्तिके विक्रयस्तस्य कथितो बहु लाभदः २४

આષાઢ માસના કૃષ્ણપક્ષમાં પાંચમને દિવસે સંધ્યાકાળે પૂર્વ દિશામાં ઇંદ્રધનુષ્ય દેખાય તો વેપારીઓએ હંમેશા ચોખાનો સંઘરો કરવો તે ચોખા કારતક મહિનામાં વેચવાથી ભારે લાભ થાય. ૨૩, ૨૪

तन्मासि कृष्णपक्षे च मध्यान्हे सूर्यमंडलम्
सजलं स्याद्यदा षष्ठ्यां संत्यक्त मेघडंबरम् २५
तदा न वृष्टि विज्ञेया वर्षावधि महाजनैः
नाना रोग समुत्पाता भवंति जननाशकाः २६

આષાઢ માસના કૃષ્ણપક્ષની છઠ્ઠને દિવસે મધ્યાન્હકાળે સૂર્યમંડલ જળવાળું દેખાય અને મેઘાડંબર ન હોય તો એક વરસ સુધી વૃષ્ટિ ન થાય, લોકોને પીડા આપનારા વિવિધ પ્રકારના વ્યાધિ તથા રોગ થાય. ૨૫, ૨૬

आषाढ कृष्णपक्ष्या हि सप्तमी वातपूरिता
मेघच्छन्ना च विज्ञेया वृष्टिदा भुवि मानुषैः २७

આષાઢ માસની કૃષ્ણપક્ષની સાતમે જો બહુજ પવન હોય

Aho ! Shrutgyanam

અને આકાશમાં વાદળાં ચડી આવતાં હોય તો તેને વૃષ્ટિનાં ચિન્હ જાણવાં ૨૭

आषाढ पूर्णिमा रात्रौ यदि चंद्रो न दृश्यते
चतुरोपि तदामासान् जलं वर्षति माधवः ॥ २८

આષાઢ શુદ પુનમની રાત્રએ ચંદ્ર ન દેખાય તો ચાર મહિના સુધી વરસાદ પડયા કરે. ૨૮

यदि तत्रामलश्चंद्रो परिवेषयुतोऽत्रवा
तदा जगत्समुद्धर्त्तुं शक्रणापि न शक्यते. २९

આષાઢ શુદ પુનમનો ચંદ્ર નિર્મળ અથવા કુંડાળાવાળો હોય તો જગત્નો ઉદ્ધાર કરવાને ઇંદ્ર પણ અસમર્થ ગણાય. ૨૯

यदि तत्राग्निवातः स्यादस्थिशेषा मही भवेत्
दाक्षिणात्यो यदा वात स्तदा राज्यक्षयो ध्रुवम् ३०

વળી જો તે દિવસે અગ્નિખુણાનો વાયુ હોય તો પૃથ્વીમાં ખાલી હાડકાંજ રહી જાય અને જો દક્ષિણ દિશાનો વાયુ હોય તો ખરેખર રાજ્યનો ક્ષય થાય. ૩૦

तद्दिने नैऋते वायु र्दृश्यते निर्जलं नभः
विक्रयित्वा तदा सर्वं कर्तव्यो धान्यसंग्रहः ३१

આષાઢ શુદ પુનમને દિવસે નૈઋત્ય ખુણાનો વાયુ વહે અને આકાશમાં પાણી ન દેખાય તો બધું વેચી નાખીને પણ ધાન્યનો સંગ્રહ કરી લેવો. ૩૧

Aho ! Shrutgyanam

तद्दिने वारुणो वातो वृष्टि शस्यप्रदो ध्रुवम
वायव्यः शलभादीना मुपद्रवयुतो मतः ३२

વળી આષાઢ શુદિ પુનમને દિવસે પશ્ચિમ દિશાનો વાયુ વાય તો વૃષ્ટિ અને ધાન્ય થાય, પણ જો વાયવ્ય દિશાનો વાયુ વાય તો તીડ વિગેરેનો ઉપદ્રવ થાય એમ માનવામાં આવે છે. ૩૨

उत्तरे मारुते लोको महद्धर्षयुतो भवेत्
इशाने मारुते धान्यनिष्पत्ति र्भवति शुभा ३३

વળી આષાઢ શુદિ પૂર્ણિમાએ ઉત્તર દિશાનો પવન વાય તો લોકોમાં ખુબ હર્ષ ફેલાય અને ઇશાન દિશામાં વાય તો ધાન્યની ઘણી સારી નીપજ થાય. ૩૩

आषाढयां त्वमावास्यां पूर्वगो यदि मारुतः
अस्तं गच्छति तीक्ष्णांशौ शस्य निष्पत्तिरुत्तमा. ३४

આષાઢ માસની અમાસે સૂર્યાસ્તસમયે પૂર્વ દિશાનો વાયુ હોય તો પુષ્કળ ધાન્ય પાકે. ૩૪

आषाढे कृष्णपक्षे तु चतुर्थी पंचमी भवः
षष्ठी सप्तमी जातश्च गर्भो वृष्टिप्रदो मतः ३५

આષાઢ માસના કૃષ્ણપક્ષની ચોથ, પાંચમ, છઠ્ઠ કે સાતમે ઉત્પન્ન થયેલો ગર્ભ વૃષ્ટિ આપનારો મનાય છે. ૩૫

आषाढे कृष्णपक्षे च पंचम्यां नैऋते यदि
अभ्राणि पीतवर्णानि जायंते हि दिनोदये ३६

Aho ! Shrutgyanam

तदा वृष्टिश्च विज्ञेया श्रावणे शस्यदा भुवि
पूर्वायां यदि तानिस्यु स्तदा वृष्टि र्न श्रावणे ३७

આષાઢ માસના કૃષ્ણપક્ષમાં પાંચમને દિવસે નૈઋત્ય દિશામાં સૂર્યોદય સમયે પીળા રંગનાં વાદળાં થાય તો શ્રાવણ મહિનામાં પૃથ્વી ઉપર ધાન્ય પકવનારી વૃષ્ટિ થવાની એમ જાણી લેવું. અને એવાં વાદળાં જો પૂર્વ દિશામાં થાય તો શ્રાવણ મહિનામાં વરસાદ ન થાય. ૩૬, ૩૭

आषाढे दशमी कृष्णा सुभिक्षाय सरोहिणी
एकादशी तु मध्यस्था द्वादशी कालभंजिनी ३८

આષાઢ માસમાં કૃષ્ણપક્ષની દશમ જો રોહિણી નક્ષત્રવાળી હોય તો સુકાળ સમજવો, અગીયારશ હોય તો સાધારણ અને બારશ હોય તો કાળનો નાશ કરનારી જાણવી. ૩૮

श्रावण मास.

चत्र च श्रावणे चापि पंचार्काश्च भवंति चेत्
दुर्भिक्षं तत्र जानीया च्छत्रभंगं च जायते १

ચૈત્ર અને શ્રાવણ માસમાં પણ જો પાંચ રવિવાર હોય તો દુકાળ અને છત્રભંગ જાણવાં. ૧

बुधः प्राच्यां प्रतीच्यां च भृगुर्हि श्रावणे यदा
तदा वृष्टि र्न विज्ञेया ध्रुवं भाद्रपदावधि २

Aho ! Shrutgyanam

શ્રાવણ મહિનામાં બુધ પૂર્વ દિશામાં અને શુક્ર પશ્ચિમ દિશામાં હોય તો ખરેખર ભાદરવા મહિના સુધી વૃષ્ટિ ન થાય એમ જાણી લેવું. ૨

श्रावणे शुक्लपंचम्यां स्वातियोगजलं यदा
निष्पत्तिः सर्व शस्यानां प्रजा निरुपद्रवा ३

શ્રાવણ મહિનાની શુકલ પંચમીને દિવસે જો સ્વાતિ નક્ષત્રના યોગનું પાણી પડે તો સર્વ ધાન્ય નીપજે અને પ્રજા પણ સુખકારીમાં રહે. ૩

श्रावणे शुक्ल सप्तम्यां अस्तं गच्छति भास्करे
न वृष्टो यदि पर्जन्यो जलाशां मुंच सर्वथा ४

શ્રાવણ માસના શુકલપક્ષની સાતમને દિવસે સૂર્યાસ્ત વખતે જો વરસાદ ન વરસે તો પાણીની આશા સર્વથા મુકી દેવી. ૪

श्रावणे पूर्णिमास्यां तु श्रावणे सलिलं यदा
सुभिक्षं च समादेश्यं कुर्याच्चात्र न संशयः ५

શ્રાવણ મહિનાની પૂનમે જો શ્રાવણ નક્ષત્ર હોય અને પાણી વરસે તો સુકાળ વિષે બિલકુલ નિઃશંક રહેવું. ૫

श्रावणस्य त्वमावास्या मुपरागो भानोर्यदि
तदा मारी समुत्पातो भवति कार्तिके ध्रुवम् ६

શ્રાવણ માસની અમાસે જો સૂર્યનું ગ્રહણ હોય તો કારતક મહિનામાં રોગચાળો ચોક્કસ થાય. ६

Aho ! Shrutgyanam

भाद्रपद मास.

भाद्रपदस्य शुक्लायां द्वितीयायां यदा नभः
मेघच्छन्नं तदा मह्यां शस्यनिष्पत्ति रुत्तमा १

ભાદરવા માસના શુક્લપક્ષની બીજને દિવસે આકાશ વાદળાથી છવાયેલું હોય તો પૃથ્વી ઉપર ધાન્ય સારી પેઠે પાકે. ૧

तद्दिने रविवार श्चेत् आकाशं च निरभ्रकम्
तदाहि शीतकालस्य धान्यपाको न जायते २

ભાદરવા માસની બીજને દિવસે શનિવાર હોય અને આકાશમાં વાદળા ન હોય તો શીયાળુ ધાન્ય ન પાકે. ૨

भाद्रपदे तृतीयायां शुक्लपक्षे यदांबरे
नैऋते विद्युतां व्रातो निशीथे हि विदृश्यते ३
तदा वन्हिभवोत्पातो भवति जनभीतिदः
कृष्णपक्षे च तन्मासे देशे ग्रामे पुरेऽथवा ४

ભાદરવા માસના શુક્લપક્ષની ત્રીજને દિવસે મધ્ય રાત્રીએ આકાશમાં નૈઋત્ય દિશામાં વિજળીનો સમુહ દેખાય તો લોકોને ભય ઉપજાવનારો અગ્નિનો ઉત્પાત તે માસના કૃષ્ણપક્ષમાં દેશ ગામ અથવા નગરમાં થાય. ૩, ૪

चतुर्थ्यां तस्य मासस्य संध्याकाले सदागतिः
दाक्षिणात्यो यदा वाति तदा गोधूम संक्षयः ५

Aho ! Shrutgyanam

ભાદરવા માસની શુકલપક્ષની ચોથને દિવસે સંધ્યાકાળે દક્ષિણ દિશાને પવન વાય તો ઘઉંના પાકને નુકશાન થાય. ૫

भाद्रस्य शुक्ल पंचम्यां यदा सूर्यस्य मंडलम्
श्वेतमेघै र्भवेच्छन्नं मध्यान्हे नभसि स्थितम् ६
तदा हि पतनं तस्यां भवति विद्युतः किल
तस्मिन्नगरेऽरण्येऽथवा ग्रामे भयप्रदम् ७

ભાદરવા માસના શુક્લપક્ષની પાંચમને દિવસે બપોરે આકાશમાં રહેલું સૂર્યમંડળ શ્વેત રંગનાં વાદળથી છવાઇ જાય તો તે નગરમાં વનમાં અથવા ગામમાં રાત્રીને વખતે ખરેખર વિજળી પડે. ૬, ૭

भाद्रपदे शुक्लषष्ठयां चंडवातो यदा निशि
तदा हि तस्य मासस्य कृष्णपक्षे प्रवर्षति ८

ભાદરવા માસમાં શુકલપક્ષની છઠને દિવસે રાત્રીએ જો ભયંકર વાયુ ફુંકાય તો તે માસના કૃષ્ણ પક્ષમાં જરૂર વરસાદ થાય. ૮

सप्तम्यां तस्य मासस्य सोमवारो यदा भवेत्
अभ्रच्छन्नं न चाकाशं सूर्यास्तसमये खलु ९
तदा वृष्टि र्न विज्ञेया तस्मिन्मासे सदा बुधैः
नाना रोग समुत्पातो प्रजासु च प्रजायते १०

Aho ! Shrutgyanam

ભાદરવા માસના શુક્લપક્ષની સાતમે જો સોમવાર હોય અને સૂર્યાસ્ત વખતે આકાશ વાદળથી છવાયેલું ન હોય તો હંમેશા પંડિતોએ એટલું સમજી રાખવું કે તે માસમાં વૃષ્ટિના વાખા પડવાના, અને પ્રજામાં વિવિધ પ્રકારનો રોગચાળો ફાટી નીકળવાનો. ૯, ૧૦

भाद्रपदे तथाष्टम्यां प्रभाते यदि दृश्यते
इंद्रचापः प्रतीच्यां हि तदा वृष्टि र्निशि ध्रुवम् ११

ભાદરવા મહિનામાં શુક્લપક્ષની આઠમે પ્રભાતે પશ્ચિમ દિશામાં ઇંદ્રધનુષ્ય દેખાય તો રાત્રિએ ચોક્કસ વરસાદ થાય. ૧૧

नवम्यां भाद्रमासस्य रविवारो यदा भवेत्
वायव्ये च महावायु स्तदा वृष्टेरसंभवः १२

ભાદરવા મહિનાના શુક્લપક્ષની નવમ જો રવિવારી હોય અને વાયવ્ય દિશામાં ભારે પવન ફુંકાય તો વૃષ્ટિનો સંભવ ન રખાય. ૧૨

दशमी भाद्रमासस्य दुर्दिना यदि जायते
गर्जनं च प्रभाते हि भूरिधान्यं तदा मतम् १३

ભાદરવા મહિનાની શુક્લપક્ષની દશમ જો વાદળાંવાળી હોય અને પ્રાતઃકાળમાં ગર્જના થઇ હોય તો ઘણું ધાન્ય થાય એમ માનવામાં આવે છે. ૧૩

भाद्रस्यैकादशी जाता यदा वातैः समन्विता
भोमवारयुता चापि शुक्लपक्ष्या जलप्रदा १४

Aho ! Shrutgyanam

ભાદરવા માસના શુકલપક્ષની અગીયારસે જો ભોમવાર હોય અને વાયુ ફુંકાતો હોય તો વરસાદ થાય. ૧૪

पूर्णिमायां हि भाद्रस्य सजलं चंद्रमंडलम्
दृश्यते मेघरहितं तदा वृष्टिरसंभवः १५

ભાદરવા માસની પુનમે ચંદ્રમંડળ જો પાણીવાળું દેખાય અને વાદળાં ન દેખાય તો વરસાદની આશા ન રખાય. ૧૫

भाद्रस्य कृष्ण पंचम्यां यदा वृष्टि नै जायते
संध्याकाले तदा मह्यां शलभोपद्रवो मतः १६

ભાદરવા માસની કૃષ્ણપક્ષની પાંચમે સંધ્યાકાળે જો વૃષ્ટિ ન થાય તો પૃથ્વી ઉપર તીડોનો ઉપદ્રવ થાય એમ જાણી લેવું. ૧૬

कृष्ण षष्ठि हिं भाद्रस्य भौमवारान्विता यदि
समेघा गर्जनैर्युक्ता सर्व शस्यप्रदा मता. १७

ભાદરવા માસના કૃષ્ણપક્ષની છઠ્ઠ જો ભોમવારી હોય અને વાદળાં તથા ગર્જના થાય તો સર્વ પ્રકારનાં ધાન્ય પાકે. ૧૭

अमावास्यां च भाद्रस्य याम्यां हि विद्युता यदा
दर्शनं जायते रात्रौ तदा धान्य महर्घता १८

ભાદરવા માસની અમાસને દિવસે રાત્રિયે દક્ષિણ દિશામાં જો વિજળીનાં દર્શન થાય તો ધાન્ય બહુ મોંઘું થાય. ૧૮

Aho ! Shrutgyanam

आसों मास.

अश्विने शुक्लपक्षे हि प्रतिपद्यदि गर्जिता
तदा मारी समुत्पातो भवति खलु कार्तिके १

આસો માસના શુકલપક્ષની એકમને દિવસે જો ગર્જના થાય તો કારતક મહિનામાં ખરેખર રોગચાળો ફાટી નીકળે ૧

आश्विनस्य द्वितीयायां शुक्लपक्षे यदांबरम्
पीतवर्णैं महामेघैश्च्छादितं हि दिनोदये २
तदा हिमकृतोत्पातो भवति माघे निश्चितम्
भूरयः पशवो येन पंचत्वं च प्रयांति हि. ३

આસો માસના શુકલપક્ષમાં બીજને દિવસે સૂર્યોદય સમયે આકાશ જો પીળા રંગનાં મોટાં વાદળાંથી છવાયેલું હોય તો માહ માસમાં ખરેખર હીમનો ઉત્પાત થાય અને તેથી ઘણા પશુઓ મૃત્યુનો માર્ગ પકડે. ૨, ૩

शुक्लपक्ष्या तृतीया च सोमवारान्विताश्विने
समेघा ज्वरदा ज्ञेया लोकोपद्रवकारिणी ४

આસો માસના શુકલપક્ષની ત્રીજ જો વાદળાવાળી અને સોમવારી હોય તો તાવનો રોગ ફેલાય અને લોકોને હેરાનગતિ ભોગવવી પડે. ૪

Aho ! Shrutgyanam

आश्विन शुक्ल पंचम्यां सूर्यबिंबं यदांबरे
मध्यान्ह समये रक्तं निरभ्रं चंडभान्वितम् ५

तदा हि तस्य मासस्य कृष्णपक्षे सदा बुधैः
विज्ञेयं वि महायुद्धं नृपाणां तु परस्परम् ६

આસો માસના શુકલપક્ષની પાંચમને દિવસે મધ્યાન્હ સમયે આકાશમાં સૂર્યનું બિંબ જો લાલ રંગનું, વાદળાં વિનાનું અને ભયંકર કાંતિવાળું દેખાય તો તે માસના કૃષ્ણપક્ષમાં રાજાઓની અંદર મહાયુદ્ધ થવાનું એમ ડાહ્યા માણસોએ ખરેખર સમજી રાખવું. ૫, ૬

आश्विन शुक्लैकादश्यां संध्याकाले यदांबरे
प्रतिच्यां पर्वताकारा मेघाः कौमुदी संनिभाः ७

तदा चणक गोधूमनाशो भवति निश्चितम्
वृष्टितः शलभेभ्यो वा प्रोक्तमेवं जिनाधिपैः ८

આસો માસના શુકલપક્ષની અગીયારસે સંધ્યાકાલે પશ્ચિમ દિશામાં આકાશને વિષે પર્વત જેવાં મ્હોટાં અને ચાંદની જેવા શ્વેત રંગનાં વાદળાં દેખાય તો વૃષ્ટિને લીધે અથવા તીડને લીધે ચણા અને ઘઉંનો નાશ થવાનો એમ જીનેશ્વરોએ ભાખ્યુંછે.

द्वादश्यामाश्विने मासे शुक्लपक्षे निशि यदा
चंद्रबिंबं भवेच्छन्नं श्याम मेघैस्तदा ध्रुवम् ९

Aho ! Shrutgyanam

कृष्णपक्षे हि तन्मासे वृष्टि र्भवेज्जनप्रिया
लवलीखर्जुरादीनां पाकश्च त्रिगुणो भवेत् १०

આસો માસના શુક્લપક્ષની બારસે રાત્રિએ ચંદ્રનું બિંબ જો શ્યામ રંગનાં વાદળથી છવાયેલું હોય તો ખરેખર તે માસમાં કૃષ્ણપક્ષમાં લોકોને પ્રિય એવી વૃષ્ટિ થાય અને ચારોલી તથા ખજુર વિગેરેનો ત્રણ ગણો પાક ઉતરે. ૯, ૧૦

आश्विन पूर्णिमायां च संध्याकाले यदांबरे
चंद्रबिंबं घनैश्च्छन्न मुदेति श्याम भान्वितैः ११
तदा वार्धौ महोत्पात श्चंडवायु कृतो भवेत्
भूरिपोत विनाशः स्याद्योजन शतकावधि १२

આસો શુદ પુનમને દિવસે સંધ્યાકાળે ચંદ્રનું બિંબ આકાશમાં ઉગતી વખતેજ શ્યામ કાંતિવાળાં વાદળથી છવાયેલું દેખાય તો સમુદ્રમાં ભયંકર વાયુને લીધે મોટો ઉત્પાત થાય અને સો જોજન સુધીમાં ઘણા વહાણોનો ભૂકો થઈ જાય.૧૧,૧૨

इत्याचार्य श्री विजयप्रभसूरि विरचित मेघमालाख्य ग्रंथ संपूर्णः

Aho ! Shrutgyanam

મેઘમાળાની પૂરવણી.

વાદળાં વિજળી અને વાયુનો સંબંધ.

(રૂદ્રયા મલ તન્ત્ર અન્તર્ગત)

अन्यं च कथयिष्यामि श्रृणुतत्त्वेन भामिनि
मेघ विद्युत् समायोगं येन जानंति पंडिताः १
पूर्वस्यां दिशि संध्यायां यदा मेघाकुलं नभः
कश्चिद्दंष्ट्रा समाकारः कश्चिद्धस्तिसमः प्रिये २
केचित् सिंह समाकाराः केचित् पर्वत सन्निभाः
केचिन् मकर मत्स्या केचिन् मृगसमाः प्रिये ३
एवमेवयदा मेघाः पंचरात्रं प्रवर्षते
विज्ञेयं सप्तरात्रं वा वृष्टिं वर्षति तोयदः ४

હે પાર્વતીજી ! હવે હું વાયુ વીજળી અને વાયુનાં ફળ કહું છું તે તમે સાંભળો. પ્રથમ તો હું વાદળાં અને વિજળી વિષે જ કહીશ. હે પ્રિયે ! પૂર્વ દિશામાં સંધ્યાકાળે જો આકાશ વાદળાંથી છવાયેલું દેખાય, કોઇ કોઇ વાદળાં ડાઢના આકારવાળાં, હાથીના જેવાં આકારવાળાં, કોઇ કોઇ સિંહ, પર્વત, મઘર અથવા મચ્છના મ્હોં જેવા તેમજ મૃગના આકારનાં હોય તો પાંચ રાત્રી પર્યંત અથવા સાત રાત્રી સુધી વરસાદ થાય. ૧, ૨, ૩, ૪.

Aho ! Shrutgyanam

उत्तरादिशि संध्यायां दृश्यते नगमालिका
अर्बुदैः सदृशा मेघा यदा दृश्यंति पार्वति ५
वर्षते सप्तरात्राणि चार्द्ध रात्राणि भैरवि
मकरैः सदृशो मेघो यदा देवि प्रदृश्यते ६

ઉત્તર દિશામાં સાંઝે પર્વત જેવી મેઘમાળા દેખાય અને અર્બુદના જેવો દૃશ્ય થાય તો હે ભૈરવી-પાર્વતી ? અર્ધ રાત્રીએ વરસાદ પડે અને સાત રાત સુધી રહે. અને જો મઘરના જેવો મેઘનો આકાર થાય તો—

वर्षते च त्रिरात्रेण सप्तरात्रं तथापि वा
आग्नेय्यां च यदा मेघो दृश्यते सुरसुंदरि ७
रात्रौ वर्षति जीमूतो भैरवेणेतिभाषितं
इशाने च यदा मेघा जायंते कृष्णपर्वताः ८

ત્રણ રાત્રી અથવા સાત રાત્રી પર્યંત વરસાદ પડે અને હે સુરસુંદરિ ! તે જ મેઘ જો અગ્નિખુણામાં દેખાય તો રાત્રે વરસાદ થાય એમ ભૈરવે પોતે કહ્યું છે હવે ઈશાન ખુણામાં કાળા પર્વતની જેમ વાદળાં ઘેરાય,

वर्षंति च यदा मेघाः संध्या कालेऽथवा प्रिये
वायव्यां च यदा मेघो जायते वरवर्णिनि ९
वातवृष्टि र्हि जानीया द्रात्रौ स्यात् प्रहरादि मे
मेघास्तु कथिता देवि दिशा चाष्टौ प्रकीर्तिताः १०

Aho ! Shrutgyanam

તો સાંઝેજ વષા થાય. અને હે વરવર્ણિનિ! જો વાયવ્ય ખુણામાં વાદળાં થાય તો રાત્રીના પહેલા પહોરમાંજ પવન સાથે વરસાદ થાય એમ જાણવું. મેઘના આકાર તથા આઠ દિશાઓ વિષે એ પ્રમાણે સમજી લેવું. ૯-૧૦

वायुधारिणं मेघं च श्रृणु तत्त्वेन सुंदरि
वायु लक्षणं विज्ञेयं पूर्वादौ यत् फलं भवेत् ११
सुभिक्षं पूर्ववातेन जायते नात्र संशयः
दक्षिणे क्षेम मारोग्यं नैऋत्यां दुःखदो भवेत् १२

હે સુંદરિ! નિશ્ચયથી પવનને ધારણ કરવાવાળા મેઘ વિષે હું હવે તમને કહું છું તે સાંભળો. વાયુનાં લક્ષણ પણ જાણવા જેવાં છે, અને તેનાં પૂર્વ આદિ દિશામાં કેવાં ફળ ફળે છે તે પણ હું તમને કહીશ. જો પૂર્વ દિશામાં પવન ફુંકાય તો વરસ સારૂં પાકે એમાં શંકા ન રાખવી દક્ષિણ દિશામાં વાયુ વહે તો આરોગ્ય તથા કુશળતાનાં ચિન્હ સમજવાં અને નૈઋત્ય ખુણામાં વાયુ વહે તો દુઃખકારક થાય. ૧૧-૧૨

वारुण्यां दिव्य धान्यानि वायव्यां वायुः खे भवेत्
उत्तरे शुभदा देवि ऐशान्यां सर्वं संपदः १३

વારૂણી દિશામાં પવન વહે તો ઘણું સરસ ધાન્ય પાકે અને વાયવ્ય ખુણામાં વહે તો તે કેવળ આકાશમાં જ રહેવાનો. વળી હે દેવિ! ઉત્તર તરફનો પવન સારૂં ફળ આપે, અને ઇશાન ખુણાનો વાયુ સંપૂર્ણ સંપદાને આપનારો હોય. ૧૩

Aho ! Shrutgyanam

वायुधारणं मेघानां कथितं तव सुंदरि
विद्युल्लक्षण चिन्हानि ह्यष्टदिक् पूर्वतः फलम्   १४

હે સુંદરિ! એ પ્રમાણે વાયુને ધારણ કરનારાં મેઘ વિષે મેં તમને કહી દીધું. હવે વિજળીનાં લક્ષણ, ચિન્હ તથા આઠ દિશાનાં ફળ અનુક્રમે પૂર્વ દિશાથી માંડીને કહું છું તે સાંભળો. ૧૪

पूर्वे विद्युत्करा मेघा आग्नेय्यां जलशोषकाः
दक्षिणे रौरवं घोरं नैऋत्यां भयमादिशेत्   १५
सुभिक्षं पश्चिमे देवि वायव्यां सुखसंपदः
उत्तरे वर्षते मेघस्त्वीशाने विजयी भवेत्   १६

પૂર્વનો મેઘ વિજળી ઉત્પન્ન કરે, અગ્નિખુણાનો મેઘ પાણીને સોષવનારો હોય છે, દક્ષિણનો મેઘ ભયંકર દુકાળ આણે છે અને નૈઋત્ય ખુણાનો મેઘ ભય સૂચવે છે. અને હે દેવિ! પશ્ચિમનો મેઘ સુકાળ લાવે છે, વાયવ્ય ખુણાનો મેઘ સુખ તથા સંપત્તિ આપનારો હોય છે. હવે જો ઉત્તરમાં મેઘ વરસાદ આણે તો ઇશાનખુણામાં વિજય થાય.

काक–तरुफळ कथन.

वृक्षस्य पूर्व शाखायां वायसः कुरुते गृहम्
सुभिक्षं क्षेम मारोग्यं सुवृष्टिः शस्यसंपदः   १

Aho ! Shrutgyanam

अग्निकोणस्य शाखायां वायसः कुरुते गृहम्
दुर्भिक्षं च विजानीया न्नैव वर्षति तोयदः २

વૃક્ષની પૂર્વશાખામાં જો કાગડો પોતાને રહેવા માટે જગ્યા નક્કી કરે તો સુકાળ, ક્ષેમ, આરોગ્ય, ઉત્તમ વૃષ્ટિ તથા ખેતીમાંથી સારી પેદાશ થાય. વૃક્ષના અગ્નિખુણામાં જો એવી જગ્યા શોધી લે તો દુકાળનું ચિન્હ સમજવું, વરસાદ ન પડે.

दक्षिणे यदि शाखायां वायसः कुरुते गृहम्
हाहाकारं महारौद्रं विग्रहं च समादिशेत् ३
शाखा माश्रित्य नैऋत्यां वायसः कुरुते गृहम्
द्वौ मासौ वर्षते मेघस्तुषारं जायते तदा ४

વૃક્ષની દક્ષિણ તરફની શાખામાં કાગડો પોતાનો માળો બાંધે તો મહા ભયંકર અને હાહાકાર વર્તાવનારો વિગ્રહ થાય. નૈઋત્ય ખુણા તરફની શાખામાં આશ્રય શોધે તો બે મહિના સુધી વરસાદ થાય અને પાછળથી ઝાકળ પડે ૩, ૪

क्रियते पश्चिम शाखायां वायसेन गृहं यदि
न च वृष्टिं विजानियात् कथितं ते महेश्वरि ५
वायव्य कोणगः काको यदिवा कुरुते गृहम्
वातवृष्टिं विजानीयात् कथितं काललक्षणम् ६

વૃક્ષની પશ્ચિમ શાખામાં જો કાગડો માળો બાંધે તો હે મહેશ્વરી વરસાદ ન થાય. એ વાત હું તમને કહી રાખું છું.

Aho ! Shrutgyanam

વાયવ્ય ખુણા તરફની શાખામાં કાગડો પોતાનુ ઘર બાંધે તો પવન સાથે વરસાદ પડે. એ પ્રમાણે સુકાળ-દુકાળનાં લક્ષણ જાણી લેવાં. ૫-૬

उत्तरायां यदा काकः करोति गृहमुत्तमम्
सुभिक्षं जायते धान्य मारोग्य सुखसंपदः ७
इशानकोणे यदि वै वायसः कुरुते गृहम्
स्वात्योदका स्तथा मेघाः कृषिश्च परितुष्यति. ८

વૃક્ષની ઉત્તર દિશા તરફની શાખામાં જો કાગડો પોતાનો સરસ માળો બાંધે તો ધન ધાન્ય સારાં નીપજે, સુકાળ થાય અને આરોગ્ય તથા સુખસંપત્તિ આવી મળે. ઈશાન ખુણાવાળી શાખામાં માળો બાંધે તો સ્વાતિ નક્ષત્રમાં વરસાદ થાય અને ખેતરમાં સારો પાક ઉતરે. ૭-૮

यदि वा मध्य शाखायां वायसः कुरुते गृहम्
अनावृष्टि र्विजानीयात् कथितं काकलक्षणम् ९
वल्मीक भूमिमाश्रित्य वायसः कुरुते गृहम्
मारी चौरभयं विद्यान्नैव वर्षंति तोयदाः १०

વૃક્ષની વચલી શાખામાં કાગડો માળો બાંધે તો વરસાદ ન થાય એ પ્રમાણે કાગડાના નિવાસ વિષે મેં કહ્યું. હવે જો રાફડાવાળી માટીનો આશ્રય લઈ કાગડો માળો બાંધે તો રોગ શોક તથા ચોરી વિગેરેનો ભય ઉપજે. ૯-૧૦.

Aho ! Shrutgyanam

शूष्क वृक्षे गृहं कुर्याच्चौरस्य चभयं भवेत
राजविग्रह माप्नोति महा राजभयं भवेत् ११

સૂકાઇ ગયેલા વૃક્ષ ઉપર જો કાગડો માળો બાંધે તો રોગ તથા ચોરનો ઉપદ્રવ થાય, રાજા રાજા વચ્ચે લડાઇ જાગે અને ચક્રવર્ત્તી રાજાને માથે પણ આફત પડે.

સાઠ સંવત્સરોનાં નામ

(૧) પ્રભવ (૨) વિભવ (૩) શુક્લ (૪) પ્રમોદ (૫) પ્રજાપતિ (૬) અંગિરા (૭) શ્રીમુખ (૮) ભાવ (૯) યુવા (૧૦) ધાતા (૧૧) ઈશ્વર (૧૨) બહુધાન્ય (૧૩) પ્રમાથી (૧૪) વિક્રમ (૧૫) વૃષ (૧૬) ચિત્રભાનુ (૧૭) સુભાનુ (૧૮) તારણ (૧૯) પાર્થિવ (૨૦) અવ્યય. (આ વીશ સંવત્સર બ્રહ્મવિંશતિ નામે પ્રસિદ્ધ છે.)

(૨૧) સર્વજિત્ (૨૨) સર્વધારી (૨૩) વિરોધી (૨૪) વિક્રમી (૨૫) ખર (૨૬) નંદન (૨૭) વિજય (૨૮) જય (૨૯) મન્મથ (૩૦) દુર્મુખ (૩૧) હેમલંબી (૩૨) વિલંબક (૩૩) વિકારી (૩૪) શાર્વરી [૩૫] પ્લવ [૩૬] શુભકૃત [૩૭] શોભન [૩૮] ક્રોધી (૩૯) વિશ્વાવસુ (૪૦) પરાભવ. (આ વીશ સંવત્સર મધ્યવિંશીના નામથી ઓળખાય છે.)

(૪૧) પ્લવંગ (૪૨) કીલક (૪૩) સૌમ્ય (૪૪) સાધારણ (૪૫) વિરોધકૃત (૪૬) પરિધાવી (૪૭) પ્રમાદી (૪૮) આનંદ (૪૯) રાક્ષસ (૫૦) નલ (૫૧) પિંગલ

Aho ! Shrutgyanam

(૫૨) કાલયુક્ત (૫૩) સિદ્ધાર્થી (૫૪) રૌદ્ર (૫૫) દુર્મુખી (૫૬) દુંદુભી (૫૭) રૂધિરોદ્ગાર (૫૮) રક્તાક્ષી (૫૯) ક્રોધન (૬૦) ક્ષય. (આ વિશ સંવત્સર નરુદ્ર વિંશીના નામથી પ્રસિદ્ધ છે.)

સાઠ સંવત્સરનાં ફળાફળ

મહાદેવજીએ સાઠ સંવત્સરનાં ફળ પાર્વતીજીને નીચે પ્રમાણે કહ્યાં છે:—

પહેલા સંવત્સરમાં ખુબ વરસાદ થાય છે. દૂધ, ઘી તથા ધાન્ય સારાં પાકે છે. બીજા સંવત્સરમાં સુકાળ અને આરોગ્ય સુખ પ્રાપ્ત થાય છે, રાજાને શાંતિ મળે છે, પ્રજા પણ આનંદમાં રહેછે. શુકલ સંવત્સરમાં માણસો તથા હાથીઓને વિવિધ પ્રકારના રોગ થાય છે, બાકી બીજી રીતે સુખ અને આનંદ મળે છે. પ્રમોદ સંવત્સરમાં જગત ધન ધાન્યથી ઉભરાય છે, તમામ પ્રકારનાં કલેશ શાંત થઇ જાય છે. પ્રાજાપાત્ય સંવત્સરમાં ગાયો ખુબ દુધ આપે છે અને આરોગ્ય તથા કુશળતા પ્રવર્ત્તે છે. અંગિરા નામના સંવત્સરમાં લોકો ઉત્સાહિત રહે છે અને વરસાદ પણ સારો થાયછે. શ્રીમુખ સંવત્સરમાં ધાન્ય સારૂં પાકે છે, ગાયો સારૂં દુધ આપે છે અને વરસાદ પણ ખુબ થાય છે. ભાવ સવત્સરમાં સઘળાં ધાન્ય પાકે છે પણ મોંઘારત મટતી નથી અને લોકોમાં ચિંતા તથા શોક વર્તે છે. યુવા સંવત્સરમાં તેલ તથા ઘી ઠીક ઠીક થાય છે, વરસાદ સાધારણ પડે છે અને ધાન્ય પણ ઠીક પ્રમાણમાં ઉતરે છે. ધાતા

Aho ! Shrutgyanam

સંવત્સરમાં વૃક્ષ, દુધ તથા ગોળ અધિક પાકે છે, કપાસ મોંઘો થાય છે. બહુધાન્ય સંવત્સરમાં લવીંગ, મધ તથા ગંધ્ય પદાર્થ દુર્લભ નથી થતાં, વૃષ્ટિ ખુબ થાય છે પણ લોકોની નીતિ સારી રહેતી નથી. સુપુરાણુ સંવત્સરમાં અનેક પ્રકારનાં ધાન્ય પાકે છે. પ્રમાથી નામના સંવત્સરમાં રાજનાશ, દુર્ભિક્ષ, ચોરોનો ભય તથા કયાંઇ કયાંઇ સુખ-દુખરૂપી ફળ મળે છે. વિક્રમ સંવત્સરમાં વ્યાધિ વગરનો સુકાળ, ક્ષેમ, આરોગ્ય વર્તે છે, અને પ્રજા આનંદથી કલ્લોલ કરે છે. વૃષ સંવત્સરમાં કોદરા, ભાત, મગ, જવ, તથા દાળ વિગેરે વસ્તુઓનો અભાવ થાય છે અને દુકાળ જેવું દેખાય છે. ચિત્રભાનુ નામના સંવત્સરમાં ચણા, મગ, અડદ અને કંગુ આદિ ધાન્ય પાકે છે, વરસાદ વિચિત્ર પ્રકારનો થાય છે. સુભાનુ સંવત્સરમાં આરોગ્ય વરસાદ તથા ક્ષેમ કૂશળતા સારી પેઠે વર્તે છે. તારણ સંવત્સરમાં ચોરોનો ભય થાય છે અને વરસાદના અભાવે ભારે ભયંકર દુકાળ પડે છે. પાર્થિવ સંવત્સરમાં દેશના સઘળા ભાગમાં ધાન્ય નીપજે છે અને સૌરાષ્ટ્ર તથા કર્ણાટક દેશમાં તો અત્યંત ધાન્ય થાય છે. વ્યય સંવત્સરમાં વરસાદ ઓછો થાય, ખેતી સાધારણ થાય અને પાક પણ ઓછોજ ઊતરે.

સર્વજિત્ સંવત્સરમાં પૃથ્વી પાણીથી છલકાય છે અને દરેક પ્રકારની કુશળતા રહે છે. સર્વધારી સંવત્સરમાં તાવ અને આગનું જોર હોય છે, ધાન્ય બરાબર પાકતાં નથી, તે ઉપરાંત બીજાં કષ્ટ પણ આવી પડે છે. વિરોધી નામના સંવત્સરમાં ભયંકર વ્યાધિ થાય છે, ચોરોથી લોકોમાં ત્રાસ ફેલાય છે, ગાયો

Aho ! Shrutgyanam

પણ થોડું ઘી-દૂધ આપે છે. વિક્રમી સંવત્સરમાં તીડનો ઉપદ્રવ થાય છે, તથા પાકનો લાભ દુનીયાને મળી શકતો નથી. ખર સંવત્સરમાં કયાંઇક કયાંઈક વરસાદ થાય છે અને કયાંઇક કયાંઈક સાવ કોરાડુ રહે છે. છતાં ધાન્ય ઠીક ઠીક પાકે છે. નંદન સંવત્સરમાં સુકાળ, ક્ષેમ, આરોગ્ય તથા બીજી બધી રીતે આનંદ રહેછે, ગાયો ઘી-દૂધ સારી રીતે આપે છે. નંદનનું ફળ તેના નામ પ્રમાણે સારૂંજ મળેછે.વિજય સંવત્સરમાં ક્ષત્રિય,વૈશ્ય, શુદ્ર તથા નટ વિગેરે લોકો રોગથી પીડા પામે છે. જય નામના સંવત્સરમાં સુકાળ થાય, દેશોમાં સ્વસ્થતા રહે પણ રોગને લીધે કેટલીક વ્યાકુળતા ભોગવવી પડે. મન્મથ સંવત્સરમાં ખડ તથા ધાન્ય બરાબર ન પાકે, કોદરા મોંઘા થાય અને વ્યવહાર પણ ઠીક ન ચાલે. દુર્મુખ સંવત્સરમાં ધાન્ય માત્ર સૂકાઈ જાય અને ચોખ્ખો દુકાળ પડે ! હેમલંબી સંવત્સરમાં ચોરી કરવાવાળા રાજાઓને લીધે બધે ત્રાસ વર્તે અને ચીજ માત્ર મોંઘી થાય. વિલંબ સંવત્સરમાં ઘણા ઉપદ્રવ થાય. ઉંદરને લીધે રોગચાળો ફેલાય. વિકારી નામના સંવત્સરમાં વરસાદ નહીં જેવો થાય, ધાન્ય બરાબર ન પાકે અને દુકાળ જેવી દશા વર્તે. શાર્વરી સંવત્સરમાં આખી પૃથ્વી ઉપર સુકાપણું થાય, લોકો બહુ દુઃખી થાય. પ્લવ નામના સંવત્સરમાં ધાન્ય ખુબ પાકે. વરસાદ પણ સારી પેઠે થાય. શુભકૃત સંવત્સરમાં સઘળે સુકાળ પ્રવર્તે, ક્ષત્રીય, ગાય, બ્રાહ્મણ અને સમસ્ત પ્રજા સુખથી રહે. શોભન સંવત્સરમાં આરોગ્યતા અને નિરૂપદ્રવતા વર્ત્તે, ગાય અને બ્રાહ્મણ આનંદમાં રહે. ક્રુધી સંવત્સરમાં બાહ્ય રો-

Aho ! Shrutgyanam

ગોને લીધે જગત્ આકુળવ્યાકુળ થાય, વરસાદ થોડો થાય અને લોકો નજીવી વાતમાં ક્રોધે ભરાય. વિશ્વાવસુ સંવત્સરમાં વરસાદ સારો થાય પણ કપાસના ભાવ આકરા બોલાય. પરાભવ નામના સંવત્સરમાં મંડલેશ્વરો તથા રાજ્યના બીજા અધિકારીઓથી પ્રજા કષ્ટ પામે.

પ્લવંગ સંવત્સરમાં ગ્રીષ્મ ઋતુ તથા વસંત ઋતુમાં પાણી પડે, તેથી ઘાસ અને ધાન્ય નાશ પામે, પ્રજામાં દુઃખ અને બેચેની ફેલાય. કીલક સંવત્સરમાં વરસાદ પુષ્કળ થાય. પણ રાજ્ય તરફનો ઉપદ્રવ બધી જગ્યાએ પ્રવર્ત્તે ! સૌમ્ય સંવત્સરમાં સઘળાં પ્રકારનાં ધાન્ય પાકે, આરોગ્ય રહે અને વરસાદ પણ જોઈએ તેટલો વરસે. સાધારણ સંવત્સરનું ફળ નામ પ્રમાણે જ જાણી લેવું. અર્થાત્ વરસાદ ઠીક ઠીક થાય અને ધાન્ય પણ ઠીક ઠીક પાકે. વિરોધકૃત સંવત્સરમાં વૈશાક મહિનાથી વરસાદ શરૂ થાય, અને ચોતરફ એક સરખો વરસે. માત્ર કાન્યકુબ્જ દેશમાં વિરોધ શાંત ન થાય. પરિધાવી સંવત્સરમાં ક્ષેમ, આરોગ્ય, ધનધાન્ય તથા ઇષ્ટ મિત્ર વિગેરેનો લાભ થાય. પ્રમાદી સંવત્સરમાં સંપૂર્ણ અનાજ પાકે. સુકાળ તથા સુખ વિષે કંઇ બાકી ન રહે. આનંદ સંવત્સરમાં ધાન્ય ઘણું મોંઘું થાય, ખેતીનો નાશ થાય, ઘી તેલ માંઘાં મળે, બાકી બીજી રીતે પ્રજા ક્ષેમકૂશળ રહે. રાક્ષસ સંવત્સરમાં કોદરા, ભાત, મગ વિગેરે ધાન્ય તથા પશુ વિગેરે પ્રાણી વિનાશ પામે. પિંગલ સંવત્સરમાં વરસાદ ન થાય. ગાય, ભેંસ, સોનું,

Aho ! Shrutgyanam

રૂપું તથા તાંબું વિગેરે વેચીને પણ ધાન્યનો સંગ્રહ કરવો. કાળયુક્ત સંવત્સરમાં વરસાદ થાય પણ બીજા રોગ મનુષ્ય-પ્રાણીને હેરાન કરે. સિદ્ધાર્થ સંવત્સરમાં પાણી તથા અનાજની લીલાલ્હેર થાય. રૌદ્ર સંવત્સરમાં વરસાદ ઓછો થાય અને તેથી અન્ન પણ ઓછું પાકે, રાજકર્ત્તા નિષ્ઠુર બને. દુર્મુખ સંવત્સ-રમાં સાધારણ સુકાળ થાય; વહેવાર ચલાવવો મુશ્કેલ થઇ પડે. દુંદુભી સંવત્સરમાં સંપૂર્ણ ઉપદ્રવ શાંત થઇ જાય. અનાજ સારા પ્રમાણમાં પાકે અને પ્રજાને સુખ મળે. રૂધિરોદ્‌ગાર સંવત્સરમાં ગમે તેમ કરીને પણ અનાજનો સંઘરો કરવો. કા-રણ કે રાજાઓનો મ્હોટો સંગ્રામ થાય એવો દરેક સંભવ હોય છે. રક્તાક્ષી સંવત્સરમાં દુકાળ પડે, રાજા પણ પ્રજાને કનડે. ક્રોધન સંવત્સર પણ કોઇ રીતે સારો ગણાતો નથી. એ વરસે મરણ પ્રમાણ વધેછે. ક્ષય નામના સંવત્સરમાં કલિંજન જેવા પ્રતાપી મંડળ અને કુરૂદેશ જેવા દેશો પણ દુઃખ ભોગવે એ રીતે સાઠ સંવત્સરનું ફળ ઘણું ખાનગી રાખવા જેવું છે છતાં હે અર્ધાંગિ મેં તમને જેવું છે તેવું કહી દીધું છે.

Aho ! Shrutgyanam

વર્તમાન જૈન સાહિત્યના અપૂર્વ ગ્રંથો.

શ્રી મહાવીરજીવન વિસ્તાર સચિત્ર.

(મનુષ્યમાત્રના આત્માનો ઉદ્ધાર કરનાર મહાન્ આદર્શ ગ્રંથ.)

આજથી આ ભારતભૂમિમાં ૨૫૦૦ વર્ષ ઉપર થઇ ગયેલા "જૈન" ધર્મના મહાનમાં મહાન્ પ્રવર્તક **શ્રી મહાવીરદેવ.** આ જૈનમહાવીર દેવનું કહો કે જગતના પેગમ્બરોમાંના એક મહાનમાં મહાન્ " **પેગમ્બર** " નું જીવન ચરિત્ર જાણવા માટે દુનીઆમાં મનુષ્યો આતુર હોય તેમાં નવાઈ નથી. પણ દિલગીરી સાથે જણાવવું પડે છે કે તેમના ભક્તોએ કે ઐતિહાસીક શોધખોળ કરનારાઓએ તેમનું જીવનવૃતાંત મેળવવા માટે પ્રયત્ન કર્યો નથી અને તેના અભાવે આજે આ મહાન પુરૂષના આદર્શનો લાભ જગતનાં મનુષ્યો લઇ શકયા નથી. પણ વર્તમાનમાં આ મહાન્ પુરૂષનું જીવનચરિત્ર જાણીતા લેખક **રા. રા. સુશીલે** તૈયાર કરી તેનું નામ **શ્રી મહાવીર જીવન વિસ્તાર** આપી, જાણીતા બુકસેલર મેસર્સ મેઘજી હીરજીની મારફતે પ્રગટ કરાવેલ છે. આ ગ્રંથ માટે મહાત્મા **ગાંધીજી** અને જાહેર પત્રોએ સારા અભિપ્રાયો આપેલ છે.

મૂલ્ય રૂા. ૨-૦-૦

Aho ! Shrutgyanam

પુણ્ય પ્રભાવ સચિત્ર.

યાને

સમરાદિત્ય કેવળી ચરિત્ર.

તેને માટે

પ્રસિદ્ધ જૈન ઇતિહાસકાર-મુનિમહારાજ શ્રી જિનવિજયજીનો અભિપ્રાય.

[રૂપીયા ૫૦ નો ગ્રંથ રૂપીઆ પાંચમાં.]

(" શ્રી મહાવીર " પત્ર અંક બારમામાંથી.)

પ્રકાશક—**મેઘજી હીરજી** જૈન બુકસેલર, પાયધુની મુંબઇ. પૃષ્ઠ સંખ્યા, ૬૦૮, પાકુ પુંઠું, મૂલ્ય પાંચ રૂપીઆ.

જૈન સમાજની સુરૂચિને પોષવા સારૂ ભાઇ **મેઘજી હીરજીએ** જુના સાહિત્યને નવા રૂપમાં મુકવા માટે જે માર્ગ લીધો છે તે ઇચ્છવાયોગ્ય છે. નવી પ્રજાને જૂના રાસાઓ વાંચવા જેટલો અવકાશ કહો કે રસ કહો, તે હવે રહ્યો નથી. તેમનાં માટે જૂના રાસાઓને જો નવી શૈલીમાં યોજી અંતરંગ-બાહ્યાંગ આકર્ષક બનાવી તેમના હાથમાં મુકવામાં આવે તો તેઓ તેનો લાભ રસપૂર્વક લઇ શકે, એવા હેતુથી સ્મરણાવશેષ થએલા પાલીતાણા વિદ્યા પ્રસારક વર્ગે પ્રાચીન પદ્યમય જૈન કથાઓને નવી ગદ્યશૈલીમાં વાર્તારૂપે ગોઠવી છપાવવાનો પ્રશંસનીય ઉપક્રમ કર્યો હતો, તેણેજ છપાવેલા સમરાદિત્ય ચરિત્રથી ભાઇ

Aho ! Shrutgyanam

મેઘજીએ આ પુનરાવૃત્તિ કાઢી છે અને તેને કેટલાક પ્રાસંગિક ચિત્રોથી સચિત્ર બનાવી છે. કદ જોતાં પુસ્તકની કિંમત કંઇક વધારે લાગે છે ખરી; પરંતુ આગળના શ્રાવકો ૫૦ રૂપિઆ ખર્ચીને પણ જે સમરાદિત્ય ચરિત્ર મેળવી શકતા ન હતા, તે દૃષ્ટિએ આજે આવી રીતે પાંચ રૂપિયામાં મળતું આ ચરિત્ર મોંઘું ન કહેવાય." પણ અનહદ સસ્તામાં સસ્તું જ કહેવાય.

વિવિધ પૂજા સંગ્રહ—સચિત્ર.

વિધિ સાથેનો મહાન ગ્રંથ. ભાગ ૧-૨-૩-૪-૫-૬-૭

પંડિત શ્રી વિરવિજયજી કૃત, દેવપાળકવિ કૃત, દેવચંદ્રજી કૃત, રૂપવિજયજી કૃત, જ્ઞાનવિમલસૂરિ કૃત, ઉત્તમવિજયજી કૃત, વિજયલક્ષ્મીસૂરી કૃત, સકલચંદ્રજી ઉપાધ્યાય કૃત, મેઘરાજ-મુનિ કૃત, યશોવિજયજી કૃત, પદ્મવિજયજી કૃત, ધર્મચંદ્રજી કૃત, દીપવિજયજી કૃત, આત્મારામજી કૃત, બુદ્ધિસાગરજી કૃત, કુંવરવિજયજી કૃત, વિજયરાજેંદ્રસૂરિ કૃત, હંસવિજયજી કૃત, ગંભીરવિજયજી કૃત, રામઋદ્ધિસાર મુનિ કૃત, વલ્લભવિજયજી કૃત, આદિ મહારાજોની બનાવેલી પૂજાઓ, ઉપરાંત ચિત્રો:— (૧ સમોવસરણ, (૨) ચક્રેશ્વરી દેવી, (૩) પાર્શ્વકુમાર અને કમઠ યોગી, (૪) પાર્શ્વનાથ, પદ્માવતી, ઈંદ્ર અને ઇંદ્રાણી, (૫) શત્રુંજય મહિમા ગર્ભિત, (૬) કંડુરાજા, (૭) ના-રકીનાં રંગીન ચિત્રો, (૮) પદ્માવતી દેવી, (૯) ચોવીશ તીર્થંકર, નવપદજી, અને ગૌતમસ્વામી, (૧૦) કેશરીયાજી

Aho ! Shrutgyanam

તીર્થ, [૧૧] અષ્ટાપદજી [૧૨] આબુજી તીર્થ, (૧૩) પાવાપુરી (૧૪) ચમ્પાપુરી,) [૧૫] સમેતશિખરજી તીર્થ, (૧૬) મહાવીર ઉપસર્ગ, (૧૭) યોગનિષ્ઠ આચાર્ય શ્રી બુદ્ધિસાગરજી, (૧૮) તારંગાજી તીર્થ, (૧૯) પ્રભાવિક મહાત્મા શ્રી જિનદત્ત દાદા સૂરીશ્વરજી, (૨૦) શ્રી મહાવીર, ચોદ સ્વપ્ન અને અષ્ટ મંગલિક, (૨૧) ગૌતમસ્વામીજી મહારાજ આદિના ફોટાઓના સંગ્રહથી ભરપુર સુપર–રોયલ સોળ પેજી, પૃષ્ઠ ૭૭૫ સોનેરી કપડાનું સુશોભિત મજબુત પુંઠું છતાં કિંમત રૂપીયા અઢી. પોષ્ટેજ વી. પી. ખર્ચ જુદું.

રાજપ્રશ્ન.

જૈનધર્મ, જૈનદર્શન, અને જૈનનીતિ સંબંધી હજારો પ્રશ્નો અને શંકાઓનાં સમાધાન.

શ્રીમદ્ રાજચંદ્રે જુદા જુદા વિદ્વાનોને જૈનદર્શન સંબંધી જે સચોટ અને અસરકારક ઉત્તર આપ્યા હતા, તેનો આ ગ્રંથમાં બહુ સરસ રીતે સંગ્રહ કરવામાં આવ્યો છે. જૈન દર્શન અને વેદાન્તદર્શન ઉપરાંત અન્ય દર્શનો વિષે પણ ઘણી માહિતી મળી શકે છે. પ્રશ્નો લગભગ બે હજાર ઉપરાંત છે, અને તેના જવાબો પણ તેટલાજ વિગતવાર આપવામાં આવ્યા છે. તુલનાત્મક અભ્યાસ પદ્ધતિ, ઉદારવિચારસરણી અને નિર્મળ વિવેકદૃષ્ટિએ આ ગ્રંથનો આત્મા છે, એમ કહીએ તો ચાલે. જીજ્ઞાસુઓએ એક વાર તો આ ગ્રંથ જરૂર વાંચી જવો જોઇએ.

કીં. માત્ર ૧–૪–૦

Aho ! Shrutgyanam

રાજકુમારી સુદર્શના
યાને
સમળી વિહાર સચિત્ર.
માટે
પ્રસિદ્ધ જૈન ઇતિહાસકાર
મુનિ મહારાજ શ્રી જિનવિજયજીનો
અભિપ્રાયઃ—

(" શ્રી મહાવીરપત્ર " અંક ૧૬ મો.)

રાજકુમારી સુદર્શના યાને સમળીવિહારઃ-(સચિત્ર) માગધી પ્રબંધ ઉપરથી લખનાર પંન્યાસજી શ્રી કેસરવિજયજી ગણિ, પ્રગટ કર્તા-શા. **મેઘજી હીરજી** બુકસેલર પાયધુની, મુંબઇ નં. ૩. મૂલ્ય રૂા. ૩-૦-૦ (પૃષ્ટ સંખ્યા ૬૦૮)

" ચિત્રવાળ ગચ્છીય દેવેન્દ્રસૂરિએ બનાવેલી સુદર્શનાચરિત્ર નામે પ્રાકૃત કથાના આધારે વાર્ત્તાના રૂપમા આ કથાનકની યોજના કરવામાં આવી છે. કથાનક રોચક અને સરલ ભાષામાં આળેખેલું હોવાથી સાધારણ વર્ગને વિશેષ રૂચિકર થઇ પડે તેવું છે. સાથે મુદ્રણકળાના રસિક ભાઇ મેઘજીએ કથાનકને ઉચિત એવાં કેટલાંક ચિત્રોદ્વારા તથા નયનમનહર છપામણી અને બંધામણીદ્વારા પુસ્તકની આકર્ષતામાં ઓર વધારો કર્યો

Aho ! Shrutgyanam

છે. જૈન સાહિત્યના મહાન્ ખજાનામાં જ્યાં ત્યાં નજરે પડતી ઉપદેશપ્રદ અને આનંદજનક કથાઓને આવા સુન્દર રૂપમાં જો લોકો આગળ મુકવામાં આવે તો લોકોની રૂચિને સુમાર્ગે દોરવાનું અને સાથે વ્યવહાર સાધવાનું બન્ને કામ સહેલાઇથી સફલ થઇ શકે તેમ છે. તેમજ મુનિઓ પણ વ્યર્થ કલહો કરી સમાજને ક્ષુબ્ધ કરવાને બદલે આવી જાતની સાહિત્યસેવામાં જો પોતાના સમયનો સદુપયોગ કરે તો નિશ્ચિત રીતે સ્વ અને પર, બન્નેનું કલ્યાણ કરી શકે તેમ છે. પંન્યાસજી શ્રી કેસરવિજયજી પોતાના સમયનો આવી રીતે સદુપયોગ કરી બીજા મુનિઓ માટે પણ અનુકરણીય દાખલો ઉપસ્થિત કરતા રહે છે, તે બદલ તેમનું અભિવંદન જ કરવું જોઇએ. ”

(“ શ્રી મહાવીર ” પત્રમાંથી)

મલ્લધારી દેવપ્રભસૂરિ વિરચિત

જૈન મહાભારત યાને પાંડવ ચરિત્ર (સચિત્ર)

(ગુજરાતી સરળ ભાષામાં)

આ મહાન્ ગ્રંથના આદર્શ ચિત્રો પછવાડે રૂપીયા ૬૫૦ નો ખર્ચ થયેલ છે. મતલબ કે આ એક ગ્રંથમાં કિંમત રૂા. ૬૫૦ ના તો માત્ર ચિત્રોજ છે.

આ દળદાર ગ્રંથમાં પૃષ્ટ સંખ્યા ૭૭૬, ચિત્રો ૧૪, પુંઠું મજબુત સોનેરી કપડાવાળું, છતાં કિંમત રૂા. ૩-૦-૦

Aho ! Shrutgyanam

આ સુંદર ગ્રંથ દરેક જૈન ઘરમાં અવશ્ય હોવો જ જોઈએ; કારણ કે આવા મહાન્ ગ્રંથોના વાંચન અને મનનથી **" વીર બનીએ છીએ "** અને " બહાદુર વીરો અને **વીરાંગનાઓ "** ઉત્પન્ન કરી શકીએ છીએ. અગાઉથી આ ગ્રંથના હજારો ગ્રાહકો ડીપોઝીટ ભરીને, છપાવ્યા પહેલાં થઇ ગયા હતા. હવે સિલકમાં નકલો થોડી છે. માટે વહેલો તે પહેલો!

ઉત્તમ કુમાર ચરિત્ર—સચિત્ર.

આ મહાન્ ચમત્કારી પુરૂષના ગ્રંથમાં નીચેના વિષયો આવેલા છે:-

(૧) ગંગા કિનારે આનંદ (૨) વારાણુસી નગરી (૩) કર્મ પરિક્ષા (૪) અશ્વ પરિક્ષા (૫) કૃતઘ્નીને ધિક્કાર (૬) મદાલસા (૭) પરનારી સહોદર (૮) કુબેરદત્તની કુબુદ્ધિ (૯) શંકિત હૃદયા મદાલસા (૧૦) પાપનો ઘડો ફુટયો (૧૧) તિલોત્તમાનો મેલાપ (૧૨) વિશ્વકર્માનો અવતાર (૧૩) સર્પદંશ (૧૪) ઉપકારનો બદલો (૧૫) પરસ્પર પ્રેમજાગૃતિ (૧૬) સહસ્ત્ર કળા [૧૭] ત્રિલોચનાની ચિંતા (૧૮) વિષપ્રયોગ (૧૯) સ્વામી અને શેઠ (૨૦) પક્ષીની પંડિતાઇ [૨૧] અભયદાન [૨૨] ચતુરાની ચોકડી (૨૩) શત્રુ મિત્ર થયો (૨૪) પુત્ર સ્મરણ (૨૫) ગોપાચળમાં યુદ્ધ (૨૬) કેવળી કથિત પૂર્વભવ [૨૭] ઉપસંહાર. કિં રૂા. ૧–૮–૦

Aho ! Shrutgyanam

દાનવીર રત્નપાળ [સચિત્ર]

યાને

રત્નપાળ વ્યવહારીયો.

આ મહાન્ ચમત્કારીક વેપારીના જીવનચરિત્રમાં ખાસ નિચેના વિષયો આવશે. (૧) પુત્ર ચિંતા, (૨) વર પ્રદાન, (૩) મંમણ શેઠ, (૪) ગર્ભ વિક્રય અને કારજવરાનું કષ્ટ, (૫) પુત્રનો પરગૃહવાસ, (૬) પ્રવાસ, (૭ એક ગૃહસ્થ કઠીયારો, ૮) હું કોણ છું, (૯) રત્નવતી, (૧૦) રત્નપાળની વિવિધાવસ્થા, (૧૧) ધુર્ત નગરીની ધુર્ત પ્રજા, (૧૨) નિર્વિષય શુદ્ધ પ્રેમ, (૧૩) વીણાનો મોહ, (૧૪) બે મિત્રો, (૧૫) મિત્ર વિયોગ, (૧૬) કાર્યસિદ્ધિ, (૧૭) મિત્ર ચિંતા (૧૮) રાવલનું ધાંધલ, (૧૯) મહા મેળાપ, (૨૦) આ તે નર કે નારી ? (૨૧) દાનવીર રત્નપાળ, (૨૨) દંપતી દીક્ષા. (૨૩) દીનચર્યા, (૨૪) નરલીલા. (૨૫) પૂર્વભવ, (૨૬) ઉપસંહાર. કિં. માત્ર રૂા. ૧-૮-૦

રસિક સુધારસ સ્તવન સંગ્રહ.

ભાગ ૧ થી ૮.

આ ગ્રંથમાં ચૈત્યવંદન કરવાની વિધિ, ચૈત્યવંદનો, સ્તવનો, થોયો, પ્રભાતીયાં, લાવણીઓ, સ્તુતિઓ, ગઝલો, સજ્ઝા-

Aho ! Shrutgyanam

યો અને વૈરાગી પદોના સંગ્રહ ઉપરાંત પચ્ચખાણ લેવાની વિધી, ચોવીશ તિર્થંકરોનાં નામ, લંછન, વર્ણ, ઉંચાઇનો કોઠો, આત્મગોષ્ઠિ ઇત્યાદિ વિષયો આવેલા છે. સાઇઝ પોકેટ, પુંઠું સુંદરમાં સુંદર. છતાં કિંમત માત્ર ... ... રૂા. ૦-૧૦-૦

જૈન સ્તુતિ-સચિત્ર.

આ ગ્રંથમાં આનુપૂર્વી, ચોપાઇ, દોહરા, છંદો, સ્તુતિઓ, પાંસઠીયા યંત્રનો છંદ, સ્તવનો, ભક્તામર સ્તોત્ર, કલ્યાણમંદીર સ્તોત્ર, આરતીઓ, સાધુવંદના, જીવરાશિ, મહાવીર સ્વામીનુ ચોઢાલીયું, ચાર શરણાં, વૈરાગ્ય ઉપદેશક દોહા, વ્યવહારોપયોગી હિતશિક્ષા, પંડિત લાલન વૈરાગી દૃષ્ટાંત માળા ઇત્યાદિ બાબતો છે. કિંમત માત્ર રૂા. ૦-૮-૦

પાકશાસ્ત્ર.

વનસ્પતિ અને અનાજમાંથી અનેક ઉત્તમોત્તમ પકવાનો બનાવવાની રીત (કળા) આ ગ્રંથમાં વિદૂષી બ્હેન લલિતાગૌરી અને વિમલાગૌરી બ્હેને બતાવેલ છે.... ... ...૩-૦-૦

Aho ! Shrutgyanam

જૈન સાહિત્યનાં અપૂર્વ ગ્રંથો.

૧	અનુભવ પચ્ચીશી	૦-૮-૦
૨	અધ્યાત્મ કલ્પદ્રુમ	૨-૮-૦
૩	આત્મ પ્રબોધ ભાષાંતર	૨-૮-૦
૪	આત્મ વલ્લભ સ્તવનાવલી	૦-૮-૦
૫	અધ્યાત્મસાર ભાષાંતર	૨-૮-૦
૬	આત્મસિદ્ધી શાસ્ત્ર	૧-૦-૦
૭	આત્મ-વલ્લભ પૂજા સંગ્રહ	૨-૦-૦
૮	અભયકુમાર મંત્રીશ્વરનું જીવન ચરિત્ર ભાગ ૧-૨	૫-૦-૦
૯	આત્મ પ્રદીપ	૦-૮-૦
૧૦	આત્મતત્વ દર્શન	૦-૧૦-૦
૧૧	આગમસાર અને અધ્યાત્મ ગીતા... ...	૦-૬-૦
૧૨	ઉત્તમ કુમાર ચરિત્ર-સચિત્ર.	૧-૮-૦
૧૩	ઈસાવાસ્યોપનિષદ્ ભાવાર્થ	૧-૦-૦
૧૪	ઉપમીતિ ભવપ્રપંચા કથા ભાગ ૧-૨ દરેક ભાગના	૩-૦-૦
૧૫	ઉપદેશ પ્રાસાદ ભાષાંતર ભાગ ૧ લો ...	૨-૮-૦
૧૬	” ” ” ૨... ...	૨-૦-૦
૧૭	” ” ” ૩... ...	૨-૦-૦
૧૮	” ” ” ૪... ...	૨- -૦

Aho ! Shrutgyanam

૧૯	” ” ” ૫... ...	૨-૮-૦
૨૦	ઉપદેશ સપ્તતિકા યાને દેવ, ગુરૂ અને ધર્મનું સ્વરૂપ.	૧-૮-૦
૨૧	ઉપદેશ કલ્પવલ્લી ભાષાંતર	૨-૦-૦
૨૨	કર્મ યોગ	૩-૦-૦
૨૩	કુમારપાળ ચરિત્ર-સચિત્ર	૧-૪-૦
૨૪	કર્મ પરિક્ષા	૨-૦-૦
૨૫	કબીર વાણી	૨-૦-૦
૨૬	કર્તવ્ય કંકણુ	૧-૦-૦
૨૭	કુવલય માળા ભાષાંતર	૦-૧૨-૦
૨૮	કાન્હડ કઠીયારો અથવા સાચી ટેકની ગેબી ફતેહ	૧-૦-૦
૨૯	શ્રી ગૌતમ સ્વામીનો રાસ અને જૈન શારદા પૂજનવિધિ-સચિત્ર	૦-૨-૦
૩૦	ગિરનાર માહાત્મ્ય	૧-૮-૦
૩૧	ગુરૂ ગીતા	૦-૪-૦
૩૨	ગુરૂ ગીત ગુંહલી સંગ્રહ	૦ ૧૨-૦
૩૩	ગુંહલી સંગ્રહ ભાગ ૧-૨	૦-૭-૦
૩૪	ચંપકમાલા ચરિત્ર	૦ ૮-૦
૩૫	ચંદનબાળા ચરિત્ર-સચિત્ર	૦-૩ ૦
૩૬	ચંદરાજા અને રાણી ગુણાવલીનું ચરિત્ર-સચિત્ર	૨-૮-૦
૩૭	જૈન રામાયણ-સચિત્ર	૪-૦-૦

Aho ! Shrutgyanam

૩૮	જિનદેવ દર્શન	૦–૬–૦
૩૯	જૈન મહા સતી મંડળ–સચિત્ર	૧–૪–૦
૪૦	જૈન મહાભારત યાને પાંડવ ચરિત્ર–સચિત્ર ...	૩–૦–૦
૪૧	જૈનધર્મ પ્રવેશ પોથી ભા ૧–૨–૩–૪. ...	૧–૪–૦
૪૨	જૈનધર્મ પ્ર. પો ભા. ૧–૨–૩–૪ ના અર્થ ...	૦–૭–૦
૪૩	જૈનશાળા ઉપયોગી ગરબાવળી–સચિત્ર ...	૦–૪–૦
૪૪	જૈન માર્ગ પ્રારંભ પોથી ભા. ૧–૨ ...	૦–૪–૦
૪૫	જૈન માર્ગ પ્રવેશિકા ભા. ૧–૨–૩ ..	૦ ૧૨·૦
૪૬	જૈનસતી આદર્શ જીવનમાળા–સચિત્ર. ...	૧–૮–૦
૪૭	જૈનસતિ રત્ન. રંગબેરંગી ચિત્રો સહિત ...	૧–૪–૦
૪૮	જૈન લગ્નવિધિ તથા જૈન ગીત સંગ્રહ. ...	૦–૪–૦
૪૯	જૈન કથા સંગ્રહ.	૧–૮–૦
૫૦	જૈન સાહિત્યમાં વિકાર થવાથી થયેલી હાનિ ...	૧–૦–૦
૫૧	જૈન દર્શન (કર્તા પંડિત બેચરદાસજી) ...	૨–૮–૦
૫૨	જંબુસ્વામિ ચરિત્ર	૦–૮–૦
૫૩	જૈન સ્તુતિ–સચિત્ર.	૦–૮–૦
૫૪	જૈન ઐતિહાસીક રાસ માળા	૧–૦–૦
૫૫	જૈન ધાતુ પ્રતિમા લેખ સંગ્રહ	૧–૦–૦
૫૬	જૈન ગચ્છમત પ્રબંધ	૧–૪–૦
૫૭	જૈનોપનિષદ	૦–૨–૦

Aho ! Shrutgyanam

૫૮	જૈન ખ્રીસ્તી ધર્મનો મુકાબલો અને સંવાદ ...	૧-૦-૦
૫૯	જૈન સંઘ કર્તવ્યાદિ ગ્રંથ	૦-૧૨-૦
૬૦	તપાગચ્છીય પંચ પ્રતિક્રમણ સૂત્ર વિધિ સહિત	૨-૦-૦
૬૧	તિર્થાવલી પ્રવાસ	૧-૮-૦
૬૨	તીર્થંકર ચરિત્ર-સચિત્ર (૨૪ તિર્થંકરના ચરિત્રો)	૨-૮-૦
૬૩	ત્રિષષ્ટિ શલાકા પુરૂષ ચરિત્ર પર્વ ૧-૨ ભાષાંતર	૩-૪-૦
૬૪	” ” ” પર્વ ૩-૪-૫-૬ ”	૩-૪-૦
૬૫	” ” ” પર્વ ૭-૮-૯ ”	૩-૮-૦
૬૬	” ” ” પર્વ ૧૦ ”	૨-૮-૦
૬૭	તત્વનિર્ણય પ્રાસાદ	૬-૦-૦
૬૮	તપોરત્ન મહોદધી (તપાવલી) વિભાગ ૧-૨	૧-૦-૦
૬૯	દેવસીરાઇ પ્રતિક્રમણ વિધિ સહિત. ...	૦-૧૦-૦
૭૦	દિવ્ય જીવન	૧-૦-૦
૭૧	દર્શન ચોવીશી રંગીન	૦-૮-૦
૭૨	દાનવીર રત્નપાળ. સચિત્ર	૧-૮-૦
૭૩	ધન્યકુમાર ચરિત્ર	૩-૮-૦
૭૪	દમયંતી ચરિત્ર-સચિત્ર	૦-૪-૦
૭૫	ધર્મબિન્દુ (ભાષાંતર)	૨-૦-૦
૭૬	ધન્નાશાલીભદ્રનો રાસ	૧-૮-૦
૭૭	ધ્યાન વિચાર	૦-૬-૦

Aho ! Shrutgyanam

૭૮ ધાર્મિક ગદ્ય સંગ્રહ અને પત્રસદુપદેશ ભાગ ૧-૨	...	૪-૮-૦
૭૯ નરચંદ્ર જૈન જ્યોતિષ અને હીર જ્યોતિષ.	...	૩-૦-૦
૮૦ નેમનાથ ચરિત્ર	...	૨-૦-૦
૮૧ નિત્ય નિયમ પોથી	...	૦-૪-૦
૮૨ નવસ્મરણ અર્થ સહિત-સચિત્ર	...	૨-૦-૦
૮૩ નવસ્મરણ તથા પુણ્ય પ્રકાશનું સ્તવન-સચિત્ર પોકેટ		૦-૪-૦
૮૪ પારસમણિ યાને હૃદયતેજ	...	૨-૦-૦
૮૫ પાર્શ્વનાથ ચરિત્ર	...	૧-૮-૦
૮૬ પ્રવૃત્તિ-નિવૃત્તિ	...	૦-૮-૦
૮૭ પંચપ્રતિક્રમણ સૂત્ર અર્થ સહિત	...	૧-૮-૦
૮૮ પ્રેમથી મુક્તિ	...	૦-૮-૦
૮૯ પતિવ્રતા સતીઓ. આવૃત્તિ ત્રીજી-સચિત્ર	...	૩-૮-૦
૯૦ પ્રાચીન શ્વેતાંબર-અર્વાચીન દિગંબર	...	૦-૧૨-૦
૯૧ પૂજા સંગ્રહ ભાગ ૧	...	૧-૦-૦
૯૨ " " ૨	...	૨-૦-૦
૯૩ પ્રતિજ્ઞા પાલન	...	૦-૫-૦
૯૪ પરમાત્મ દર્શન	...	૧-૮-૦
૯૫ પંજાબકેસરી લાલા લજપતરાય અને જૈનધર્મ		૦-૪-૦
૯૬ ભાવનાશતક પં. મુનિ શ્રી રત્નચંદ્રજી કૃત	...	૧-૮-૦

Aho ! Shrutgyanam

૯૭	ભુવનભાનુ કેવલી ચરિત્ર	૦-૮-૦
૯૮	ભદ્રબાહુ સંહિતા-આ મહાન જયોતિષનો ગ્રંથ રા. રા. સુશીલે સંવાદના રૂપમાં તૈયાર કરેલો છે	૩-૦-૦
૯૯	ભજન સંગ્રહ ભાગ ૭	૦-૮-૦
૧૦૦	,, ,, ૮	૩-૦-૦
૧૦૧	,, ,, ૯	૧-૮-૦
૧૦૨	,, ,, ૧૦	૩-૦-૦
૧૦૩	ભારત સહકાર શિક્ષણ કાવ્ય	૦-૧૦-૦
૧૦૪	મહીલા મહોદય ભાગ ૧-૨ સચિત્ર. દરેક ભાગના	૨-૦-૦
૧૦૫	શ્રી મહાવીરજીવન વિસ્તાર-સચિત્ર ...	૨-૦-૦
૧૦૬	શ્રી મહાવીરભક્ત મણિભદ્ર અને શ્રાવિકા રત્નમાળા સચિત્ર આવૃત્ત-બીજી... ...	૧-૮-૦
૧૦૭	મલયીસુંદરી ચરિત્ર-સચિત્ર.	૨-૮-૦
૧૦૮	મિત્રધર્મ	૦-૮-૦
૧૦૯	મણીકાન્ત કાવ્યમાલા-સચિત્ર	૩-૦-૦
૧૧૦	યુગાદિ દેશના ભાષાંતર	૦-૮-૦
૧૧૧	યોગશાસ્ત્ર ભાષાંતર	૨-૦-૦
૧૧૨	યોગ દીપક	૧-૪-૦
૧૧૩	રસીક સુધારસ સ્તવન સંગ્રહ ભાગ ૧ થી ૮	૦-૧૦-૦

Aho ! Shrutgyanam

૧૧૪ રાજકુમારી સુદર્શના યાને સમળી વિહાર સચિત્ર ૩-૦-૦

૧૧૫ રાજપ્રશ્ન જૈનધર્મ. જૈનદર્શન, અને જૈન નીતિ સંબંધી હજારો પ્રશ્નો અને શંકાઓના સમાધાન. ૧-૪-૦

૧૧૬ રેખાદર્શન ૧-૦-૦

૧૧૭ રત્નાકર પચ્ચીશી ૦-૨-૦

૧૧૮ લાલન જૈન આત્મવાટિકા ૦-૧૨-૦

૧૧૯ વિવિધ પૂજાસંગ્રહ-સચિત્ર. વિધિ સાથેનો મહાન્ ગ્રંથ. ભાગ ૧-૨-૩-૪-૫-૬-૭. ... ... ૨-૮-૦

૧૨૦ વ્યાખ્યાન સંગ્રહ-પ્રસિદ્ધ વકતા ચારિત્રવિજયજી મહારાજજી કૃત. ૧-૮-૦

૧૨૧ વિજયચંદ કેવલી ચરિત્ર. ૦-૮-૦

૧૨૨ વસ્તુપાળ તેજપાળ ચરિત્ર. ૧-૮-૦

૧૨૩ વિનોદકારી કથા. ૦-૧૨-૦

૧૨૪ વિજયકળા. ૨-૦-૦

૧૨૫ વિવેક વિલાસ-સચિત્ર. ૩-૦-૦

૧૨૬ સજ્જન સન્મિત્ર. ૪-૦-૦

૧૨૭ સમ્યક્ત્વ કૌમુદી ભાષાંતર ૧-૦-૦

૧૨૮ શ્રાદ્ધ ગુણ વિવરણ ૨-૦-૦

૧૨૯ શાન્તિનાથ ચરિત્ર ૨-૦-૦

Aho ! Shrutgyanam

૧૩૦	શત્રુંજય મહાત્મ્ય (સંપૂર્ણ) ભાષાંતર સહિત	૨–૮–૦
૧૩૧	શુદ્ધોપયોગ:	૦–૪–૦
૧૩૨	સમાધીશતક અને સમતાશતક	૦–૮–૦
૧૩૩	શ્રીપાલ રાજાનો સચિત્ર રાસ અર્થ સહિત	૩–૮–૦
૧૩૪	શ્રીપાલ રાજાનો નાનો રાસ	૦–૮–૦
૧૩૫	શ્રાવક કર્ત્તવ્ય	૧–૮–૦
૧૩૬	સમ્યકત્વ બાર વ્રતની ટીપ-યોજક પ્રસિદ્ધ વક્તા મુનિ ચારિત્રવિજયજી	૦–૧–૦
૧૩૭	સજ્ઝાયમાલા ભાગ ૧–૨–૩–૪ દરેક ભાગના	૨–૦–૦
૧૩૮	સૂરીશ્વર અને સમ્રાટ	૨·૧૨·૦
૧૩૯	સતીધર્મ–પતિસેવા અને સતીસમાજ ભાગ ૧–૨	૫–૮–૦
૧૪૦	સતી સુલસા સચિત્ર	૦–૪–૦
૧૪૧	સતીચંદનબાળા સચિત્ર	૦–૨–૬
૧૪૨	સરસ સચિત્ર સ્તવનાવલી	૩–૦–૦
૧૪૩	શ્રાવક ફરજ યાને સુધારસ સ્તવન સંગ્રહ ભાગ ૧–૨–૩–૪–૫–૬ સચિત્ર.	૧–૮–૦
૧૪૪	સમરાદિત્ય કેવળી ચરિત્ર. યાને પુણ્ય પ્રભાવ સચિત્ર.	૨–૮–૦
૧૪૫	સુપાર્શ્વનાથ ચરિત્ર ભાગ ૧–૨ ...	૪–૮–૦

Aho ! Shrutgyanam

૧૪૬ શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર આવૃત્તિ ત્રીજી ... ૪-૮-૦
૧૪૭ શકુનાવળી જૈનગર્ગાચાર્ય કૃત ૦-૪-૦
૧૪૮ સુખી જીવન ૧-૦-૦
૧૪૯ રસદાયક-રત્નનિધિ ચરિત્ર ૨-૪-૦
૧૫૦ હંસવિનોદ ૧-૦-૦
૧૫૧ જ્ઞાન સાર ભાષાંતર ૧-૦-૦
૧૫૨ જ્ઞાનભંડાર -આ ગ્રંથમાં અનેક બોલોના થોકડા
તથા સૂત્રોના ભાષાંતરો આપેલ છે. કીંમત ૧-૧૨-૦
૧૫૩ જ્ઞાનસાગર ૨-૦-૦

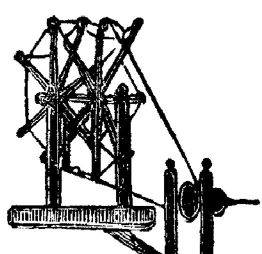

Aho ! Shrutgyanam

बाळबोध लीपीमां छपायलां गुजराती भाषानां पुस्तको.

नाम.	किंमत.
आरंभसिद्धि भाषांतर	१०-०-०
अढीद्वीप नकशानी हकीकत	३-८-०
अभयकुमारनो रास	०-८-०
अंजना सतीनो रास	०-४-०
अर्हन्नितिनुं भाषांतर	१-८-०
अध्यात्मसार	३-०-०
आनंदघनचिदानंद बहोंतेरी	०-१२-०
आत्मसिद्धिशास्त्र	१-०-०
अज्ञानतिमिर भास्कर	३-८-०
उमेद अनुभव सचित्र	१-४-०
उपदेश तरंगीणी	१-८-०
कल्पसूत्र सुबोधिका भाषांतर	४-८-०
कल्पसूत्र बारसो मूलपाठ	२-०-०
चंद केवळीनो रास	३-०-०
जैनकथा रत्नकोष भा. १-२-४-६-७-८ मो दरेक भागना	४-०-०
जैन दिग्विजय	६-०-०
जैन तत्वादर्श	५-०-०
जैनप्रबोध	५-०-०
जीवविचार, नवतत्त्व, दंडक अने लघु संघयणी अर्थ सहित	०-१२-०

Aho ! Shrutgyanam

नाम.	किंमत.
जंबुस्वामी चरित्र	१-०-०
जैनकुमार संभव काव्य	२-०-०
जैनधर्म सिंधु	३-०-०
जैन रामायण सचित्र	४-०-०
देवचंद्रजीकृतचोवीशी	१-८-०
देववंदन माळा	१-८-०
धर्मपरिक्षानो रास	२-८-०
नर्मदा सुंदरीनो रास	१-०-०
प्राचीन श्वेतांबर-अर्वाचीन दिगम्बर	०-१२-०
पंचप्रतिक्रमणसूत्र	२-१२-०
पूजासंग्रह भाग १	२-८-०
प्रकरणरत्नाकर. भा. १,	७-०-०
,, भा. ४,	१०-०-०
पांडवचरित्र भाषांतर	६-८-०
प्रतिमाशतकभाषांतर	१-०-०
प्राकृत व्याकरण	३-८-०
पर्युषणादि बार पर्वनी कथा	२-८-०

नाम.	किंमत.
प्रतिष्ठा कल्प भाषांतर	१-०-०
प्रमाणनय तत्वालोकालंकार	३-०-०
भगवती सूत्र भाषांतर भाग १ लो.	९-०-०
भाग २ जो.	९-०-०
मोक्षमाला	०-१२-०
महाजनवंश मुक्तावली	२-८-०
रत्नसमुच्चय रामविलास	७-८-०
वैराग्यकल्पलता	४-०-०
वीशस्थानकनो रास	२-०-०
विमल मंत्रीनो रास	२-०-०
वैद्य दिपक	७-०-०
समरादित्य केवलीनो रास	५-०-०
श्रीपाल राजानो रास सचित्र	४-०-०
शुकनशास्त्र	१-०-०

Aho ! Shrutgyanam

नाम.	किंमत.
सुक्त मुक्तावली कथा सहित	३-८-०
सामुद्रिकशास्त्र	१-८-०
समयसार नाटक	३-०-०
हरिभद्रसूरिकृत बत्रीस अष्टक	२-०-०
हितशीक्षानो रास	१-८-०
हंसराज वच्छराजनो रास	०-८-०
अध्यात्मकल्पद्रुम	०-८-०
आरंभसिद्धि	५-०-०
उपमितिभवप्रपंचकथा	५-०-०
जयंत विजय	१-०-०
तिलक मंजरी	२-८-०
दशवैकालिक सूत्र	४-०-०
धर्मशर्माभ्युदयकाव्य	१-०-०
प्रमेय कमळ मार्तंड	४-०-०
प्रभावक चरित्र	१-८-०
वाग्भटालंकार	०-८-०
यशस्तिलक पूर्वखंड	३-१२-०
,, उत्तरखंड	२-१२-०
समरादित्य संक्षीप्त	२-८-०
सुभाषित रत्नसंदोह	२-८-०
सुपार्श्वनाथ चरित्र	१-२-०

Aho ! Shrutgyanam

શ્રી મહાવીર જીવન-વિસ્તાર

કર્તા-રા-સુશીલ. प्रकाशकः-मेघजी हीरजी बुकसेलर, पायधुनी-मुंबई.

Aho ! Shrutgyanam